[४५] श्रीअनुयोगद्वाराणाम् चूर्णि:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"अनुयोगद्वार" चूर्णि:

[मूलं एवं चूर्णि:]

आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५ jain_e_library's Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [-]

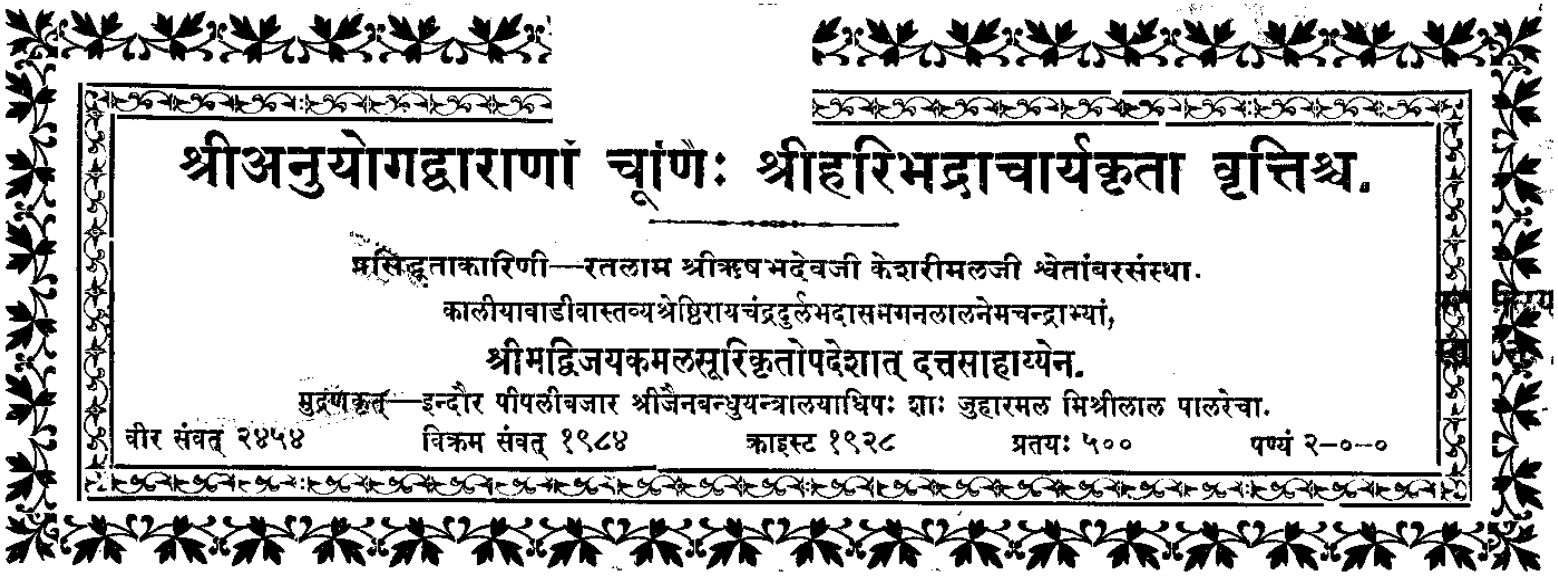

श्रीअनुयोगद्वाराणां चूर्णिः श्रीहरिभद्राचार्यकृता वृत्तिश्च.

प्रसिद्धताकारिणी—रतलाम श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबरसंस्था.

कालीयावाडीवास्तव्यश्रेष्ठिरायचंद्रदुर्लभदासमगनलालनेमचन्द्राभ्यां,

श्रीमद्विजयकमलसूरिकृतोपदेशात् दत्तसाहाय्येन.

मुद्रणकृत्—इन्दौर पीपलीबजार श्रीजैनबन्धुयन्त्रालयाधिपः शाः जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा.

वीर संवत् २४५४ विक्रम संवत् १९८४ क्राइस्ट १९२८ प्रतयः ५०० पृष्ठं २—०—०

मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:		मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:		मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
००१-३५०	अनुयोगद्वारसूत्रं	०५								
	➔ ज्ञानविषयक वर्णनं	०५			➔ द्रव्यस्कन्ध:	२१			➔ प्रमाण प्ररुपणा	५४
	➔ आवश्यक-तस्य अध्ययनं, निक्षेपा:, भेदा: इत्यादि	०९			➔ उपक्रम:, तस्य निक्षेपादि:	२३			➔ समय आदि व्याख्या	६०
					➔ आनुपूर्वी	२४			➔ जीवादि द्रव्य-वक्तव्यता	६३
	➔ श्रुत, तस्य निक्षेपा:, तस्य भेदा:, इत्यादि	१८			➔ अनुगमं	२७			➔ निक्षेप-व्याख्या	९२
					➔ नाम एवं तस्य भेद-प्ररुपणा	४६			➔ सप्तनय स्वरुपम्	९५

["अनुयोगद्वार-चूर्णि:" इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

यह प्रत सबसे पहले "अनुयोगद्वाराणाम् चूर्णि:" के नामसे सन १९२८ (विक्रम संवत १९८४) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

✤ - हमारा ये प्रयास क्यों? -✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले , ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है , किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर मूलसूत्र-गाथा आदि के नंबर लिख दिए, ताकिँ पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा सूत्र/गाथा आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके| हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगमचूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था , परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति एक-समान नही है, चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है, कईं निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नही देते , कोइ-कोइ निर्युक्ति या भाष्य के शब्दो के उल्लेख है , उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते | इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है | हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल , सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसी को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है|

.....मुनि दीपरत्नसागर.

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [१]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ १ ॥

अनुयोगद्वारचूर्णिः

अनुज्ञा विधिः

नमो वीतरागाय ॥ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं. एसो पंचनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥ कंचि पंचविहायारजाणतं तप्परूवणाए उज्जुत्तं तद्वितं च गुरुं पणमिऊण जातिकुलरूवविणतादिगुणसंपण्णो य सीसो भणइ-भगवं ! तुब्भंतिए अणुयोगद्दारक्कमं समोतारं तदत्थं च णातुमिच्छामि, ततो गुरू तं सीसं विणयादिगुणसंपण्णं जाणिऊण तदरिहं वा ततो भणति-सुणेहि कहेमि ते अणुओगद्दारत्थं तक्कमं च, जधा य सव्वज्झयणेसु समोयारिज्जंति, तं च काउकामो गुरू विग्घोवसमणिमित्तं आदीए मंगलप-रिग्गहं करेइ, तच्च मंगलं चउविहंपि णामादि णिक्खिवियव्वं, तत्थ णामठवणादव्वंमगलेसु विहिणा वक्खातेसु भावमंगला-हिगारे पत्ते भणेति ‘ णमो अरिहंताणं ’इच्चादि, अहवा मगला णंदी, सा चतुर्विधा-णामादि, इहंपि णामट्ठवणादव्वनंदीव-क्खाणे कते भावनंदीज्झसरे पत्ते भणति ‘णाणं पंचविध पण्णत्तं’ इच्चादिसुत्तं ,(सू.१-१ पत्रे) इमस्स सुत्तस्स जहा नंदिचुण्णीए ॥ १ ॥

नमस्कार सूत्र, मङ्गलस्य भेदा:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ॥-॥

दीप अनुक्रम [२]

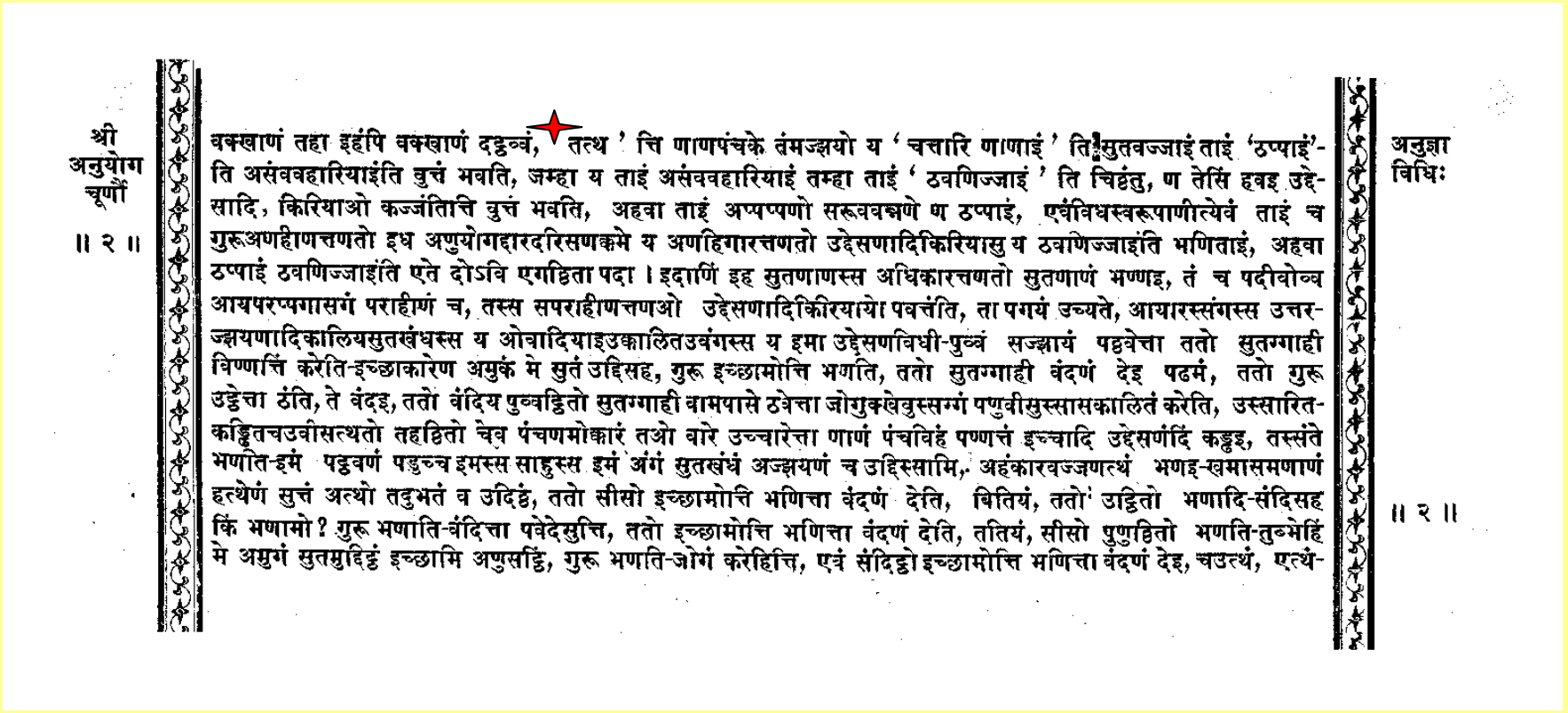

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २ ॥

वक्खाणं तहा इहंपि वक्खाणं दट्ठव्वं, तत्थ ' त्ति णाणपंचके तंमज्झयो य ' चत्तारि णाणाइं ' ति सुतवज्जाइं ताइं ' ठप्पाइं '- ति असंववहारियाइंति वुत्तं भवति, जम्हा य ताइं असंववहारियाइं तम्हा ताइं ' ठवणिज्जाइं ' ति चिट्ठंतु, ण तेसिं हवइ उद्देसादि, किरियाओ कज्जंतीत्ति वुत्तं भवति, अहवा ताइं अप्पप्पणो सरूववन्नणे ण ठप्पाइं, एवंविधस्वरूपाणीत्येवं ताइं च गुरूअणहीणत्तणतो इध अणुयोगदारदरिसणकमे य अणहिगारत्तणतो उद्देसणादिकिरियासु य ठवणिज्जाइंति भणिताइं, अहवा ठप्पाइं ठवणिज्जाइंति एते दोऽवि एगट्ठिता पदा । इदाणिं इह सुतणाणस्स अधिकारत्तणतो सुतणाणं भण्णइ, तं च पदीवोव्व आयपरप्पगासगं पराहीणं च, तस्स सपराहीणत्तणओ उद्देसणादिकिरियाओ पवत्तंति, ता पगयं उच्यते, आयारस्संगस्स उत्तरज्झयणादिकालियसुतखंधस्स य ओवादियाइउकालितउवंगस्स य इमा उद्देसणविधी-पुव्वं सज्झायं पट्ठवेत्ता ततो सुतग्गाही विण्णत्तिं करेति-इच्छाकारेण अमुकं मे सुतं उद्दिसह, गुरू इच्छामोत्ति भणति, ततो सुतग्गाही वंदणं देइ पढमं, ततो गुरू उट्ठेत्ता ठंति, ते वंदइ, ततो वंदिय पुव्वट्ठितो सुतग्गाही वामपासे ठवेत्ता जोगुक्खेवुस्सग्गं पणुवीसुस्सासकालितं करेति, उस्सारितकट्ठितचउवीसत्थतो तहट्ठितो चेव पंचणमोक्कारं तओ वारे उच्चारेत्ता णाणं पंचविहं पण्णत्तं इच्चादि उद्देसणंदिं कड्ढइ, तस्संते भणति-इमं पट्ठवणं पडुच्च इमस्स साहुस्स इमं अंगं सुतखंधं अज्झयणं च उद्दिस्सामि, अहंकारवज्जणत्थं भणइ-खमासमणाणं हत्थेणं सुत्तं अत्थो तदुभयं व उदिट्ठं, ततो सीसो इच्छामोत्ति भणित्ता वंदणं देति, बितियं, ततो उट्ठितो भणादि-संदिसह किं भणामो? गुरू भणाति-वंदित्ता पवेदेसुत्ति, ततो इच्छामोत्ति भणित्ता वंदणं देति, ततियं, सीसो पुणुट्ठितो भणति-तुब्भेहिं मे अमुगं सुतमुद्दिट्ठं इच्छामि अणुसट्ठिं, गुरू भणति-जोगं करेहित्ति, एवं संदिट्ठो इच्छामोत्ति भणित्ता वंदणं देइ, चउत्थं, एत्थं-

अनुज्ञा विधिः

॥ २ ॥

सूत्र २, ज्ञानस्य पंच-भेदा:, अनुज्ञा-विधि: प्रदर्शयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ॥-॥

दीप अनुक्रम [२]

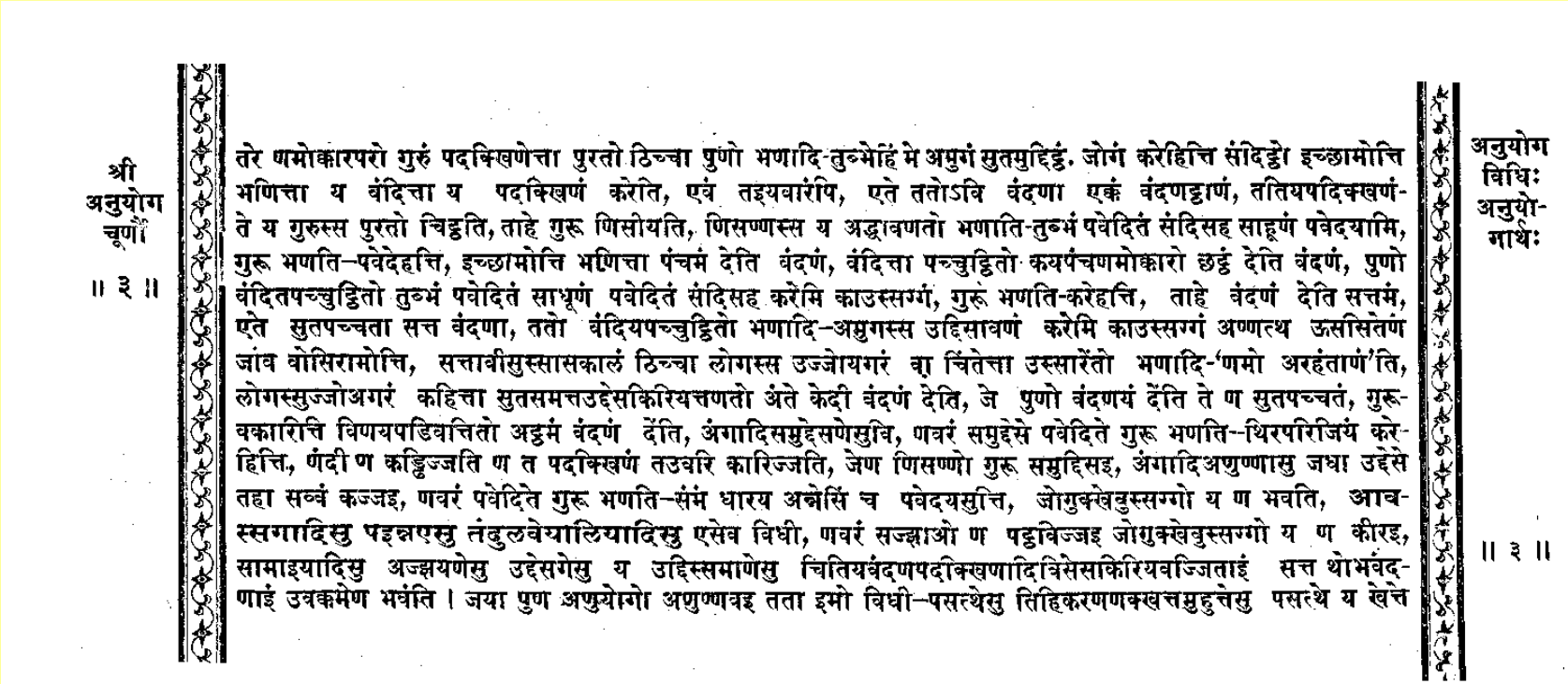

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ३ ॥

तेर णमोक्कारपरो गुरुं पदक्खिणेत्ता पुरतो ठिच्चा पुणो भणादि-तुब्भेहिं मे अमुगं सुतमुद्दिट्ठं, जोगं करेहित्ति संदिट्ठो इच्छामोत्ति भणित्ता य वंदित्ता य पदक्खिणं करेति, एवं तइयवारंपि, एते ततोऽवि वंदणा एक्कं वंदणट्ठाणं, ततियपदिक्खणंते य गुरुस्स पुरतो चिट्ठति, ताहे गुरू णिसीयति, णिसण्णस्स य अद्धावणतो भणाति-तुब्भं पवेदितं संदिसह साहूणं पवेदयामि, गुरू भणति–पवेदेहत्ति, इच्छामोत्ति भणित्ता पंचमं देति वंदणं, वंदित्ता पच्चुट्ठितो कयपंचणमोक्कारो छट्ठं देति वंदणं, पुणो वंदितपच्चुट्ठितो तुब्भं पवेदितं साधूणं पवेदितं संदिसह करेमि काउस्सग्गं, गुरू भणति-करेहत्ति, ताहे वंदणं देति सत्तमं, एते सुतपच्चता सत्त वंदणा, ततो वंदियपच्चुट्ठितो भणादि–अमुगस्स उद्दिसावणं करेमि काउस्सग्गं अण्णत्थ ऊससितेणं जाव वोसिरामोत्ति, सत्तावीसुस्सासकालं ठिच्चा लोगस्स उज्जोयगरं वा चिंतेत्ता उस्सारेंतो भणादि-'णमो अरहंताणं'ति, लोगस्सुज्जोअगरं कहित्ता सुतसमत्तउद्देसकिरियत्तणतो अंते केदी वंदणं देति, जे पुणो वंदणयं देंति ते ण सुतपच्चतं, गुरूवकारित्ति विणयपडिवत्तितो अट्ठमं वंदणं देंति, अंगादिसमुद्देसणेसुवि, णवरं समुद्देसे पवेदिते गुरू भणति--थिरपरिजियं करेहित्ति, णंदी ण कड्ढिज्जति ण त पदक्खिणं तउवरि कारिज्जति, जेण णिसण्णो गुरू समुद्दिसइ, अंगादिअणुण्णासु जधा उद्देसे तहा सव्वं कज्जइ, णवरं पवेदिते गुरू भणति–संमं धारय अन्नेसिं च पवेदयसुत्ति, जोगुक्खेवुस्सग्गो य ण भवति, आवस्सगादिसु पइण्णएसु तंदुलवेयालियादिसु एसेव विधी, णवरं सज्झाओ ण पट्ठविज्जइ जोगुक्खेवुस्सग्गो य ण कीरइ, सामाइयादिसु अज्झयणेसु उद्देसगेसु य उद्दिस्समाणेसु चितियवंदणपदीक्खणादिविसेसाकिरियवज्जिताइं सत्त थोभवंदणाइं उवक्कमेण भवंति । जया पुण अणुयोगो अणुण्णवइ तता इमो विधी–पसत्थेसु तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तेसु पसत्थे य खेत्ते

अनुयोग विधिः अनुयोगार्थः

॥ ३ ॥

अथ अनुयोग-विधि: प्रदर्शयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [२]

श्री अनुयोग चूर्णी ॥ ४ ॥

अनुयोग विधिः अनुयो-गाथः

जिणायतणादिसु भूमिं पमज्जित्ता दो णिसेज्जातो कज्जंति, एका गुरुणो बितिया अक्खाण, चरिमकाले य पवेदिए णिसेज्जाए णिसण्णो गुरू अहजातोवगरणो य पुरतो ठितो सीसो, गुरू सीसो दोवि मुहपोत्तियं पडिलेहंति, ततो तीए ससीसोवरियं कायं पडिलेहंति, ततो सीसो बारसावत्तवंदणं दातुं भणादि-संदिसह सज्झायं पट्ठवेमि, पट्ठवेहत्ति, ततो दुवगावि सज्झायं पट्ठेंवेति, तो पट्ठविते गुरू णिसीतइ, ततो सीसो बारसावत्तेणं वंदेइ, ततो दोवि ओट्ठेन्ति, अणुयोगे पट्ठविते य गुरू णिसीयति, ततो सीसो बारसावत्तेणं वंदइ, वंदित्ता गुरुणा अभिमंतणे कते गुरू णिसेज्जातो उट्ठेइ, णिसेज्जं पुरतो काउं अधीतसुतं सीसं वामपासे ठवेत्ता चेतिए वंदइ, समत्ते चेतियवंदणे ठितो णमोक्कारं कड्ढित्ता णंदीं कड्ढइ, तस्संते भणइ-इमस्स साधुस्स अणुओगं अणुजाणामि खमासमणाणं हत्थेणं दव्वगुणपज्जवेहिं अणुण्णातो, ततो वंदति सीसो, सो उट्ठितो भणाति--संदिसह किं भणामो ?, गुरू भणति-पवेहित्ति, ततो वंदति, उट्ठितो भणइ-तुब्भेहिं मे अणुओगो अणुण्णातो, इच्छामि अणुसट्ठिं, गुरू भणइ-संमं धारय अन्नेसिं च पवेदय, ततो वंदइ, वंदित्ता गुरुं पदक्खिणेइ, एवं तओ वारा, ताहे गुरू णिसेज्जाए णिसीयइ, ताहे सीसो पुरतो ठितो भणति-तुब्भं पवेदितं, संदिसह साधूणं पवेदयामि, एवं सेसं पूर्ववत्, उस्सग्गस्संते वंदित्ता ततो सीसो गुरुं सह णिसेज्जाए पदक्खिणं करेति वंदइ य, एवं ततो वारा, ताहे उट्ठित्ता गुरुस्स दाहिणभुयासन्ने णिसीयइ, ततो से गुरू गुरुपरंपरागते मंतपदे कहेति तओ वारा, ताहे वड्ढंतीओ ततो अक्खमुट्ठीतो गंधसहितातो देति, ताहे गुरू णिसेज्जातो उट्ठेइ, सीसो तत्थ णिसीयइ, ताहे सह गुरुणा अहासन्निहिया साहवो वंदणं देंति, ताहे सो निसेज्जठितो अणुओगी णाणं पंचविहं पण्णत्तं इच्चादि सुतं कड्ढेति, कड्ढित्ता जहासत्तीए वक्खाणं करेति, वक्खाते साधवो वंदणं ॥ ४ ॥

प्रत सूत्रांक [३-६] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [३-६]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ५ ॥

आवश्यका- धिकारः

देंति, ताहे सो उद्दे्ति णिसेज्जाए, पुणो गुरू तत्थणिसीयइ, ते य अणुयोगविसज्जणं उस्सग्गं करेंति कालस्स य पडिकमंति, अणुण्णायअणुयोगसाधू य निरुद्धं पवेदेति, एते उद्देसाइया सुत्तणाणस्सेवेत्यवधारिता, न मत्यादीनां, जतो भणितं-' सुतणाणस्स उद्देसो ' इत्यादि, तेसुवि ण उद्देसादिसु अहिकारो, पुव्वमहीतत्तणतो अणुयोगद्दाराहिकारातो य, अनुयोगेनात्राहिकारः, तस्स णिरुत्तं इमं-अणुयोगणमणुयोगो, निजेन अभिधेयेनेत्यर्थः, अहवा जोगोत्ति वावारा जो सुतस्स सो यऽणुरूवो अणुकूलो वा, अनुयोग इत्यर्थः, अथवा अणु पच्छा थोवभावेति, अत्थतो जम्हा सुत्तं थोवं पच्छुप्पण्णं च, तेण सह अत्थस्स जोगो अनुयोग इत्यर्थः, 'सुतणाणस्स अनुयोग ' इत्यादि सुत्तं (३-६) (४-६) (५-७) 'इमं' ति वट्टमाणकालासण्णकिरियपच्चक्खभावे, अंगाणंगादिविसेसणो पुणसद्दो, पट्ठवणं प्रारंभः—प्रवर्त्तनेत्यर्थः, दिवासि णिसि पढमचरिमासु जं पढिज्जइ तं कालितं, जं पुण कालवेलवज्जं पढिज्जइ तं उक्कालियं, अवस्सं जं उभयसंझकालं कज्जइ उभयसंझकाले वा जेण किरिया कज्जइ तं आवस्सयं, सेसं सव्वं वइरित्तं ' आवस्सयगं णं ' (६-९) इत्यादि, णमिति वाक्यालंकारे देसीवयणतो वा, अंगं अंगाइं ' ति इच्चादि, अट्ठ पुच्छातो, तासु णिण्णयावध (धार) णे ततियाछट्ठापुच्छातो आदेया, सेसा अणादेया, त्याज्या इत्यर्थः, एत्थ चोदक आह-आवस्सगस्स अंगं अंगाइन्ति पुच्छा ण कातव्वा, जतो नंदिवक्खाणे आवस्सगं अणंगपविट्ठं वक्खाणितं, इह अणंगपविट्ठे य उक्कालितादिक्कमेण आवस्सगस्स उद्देसादिया भणिता, एवं भणिते का संका ?, आचार्य आह-अकते णंदिवक्खाणे संका भवति, किह?, ण णियमो अवस्सं णंदी पढमं वक्खाणेतव्वा, जतो णाणपंचकाभिधाणमेसमेव मंगलमिट्ठं, इहंपि अंगाणंगकालिउक्कालियादिक्कमो जो दरिसितो सोवि कस्स सुतस्स उद्देसा पवत्तंत इति जाणणत्थं भणितो, अणुयोग-

॥ ५ ॥

अथ 'आवश्यक'-अधिकार: वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [७-११] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [७-१२]

कहणे पुण ण सो लद्धो कमो घोसेतव्वो, जतो णाणपंचके वक्खाते भणितं ' एत्थं पुण अहिगारो ' गाहा, तत्थवि अहिकारो अणुयोगेण, तस्स य इमे दारा भणिता-णिक्खेवेगट्ठ णिरुत्ति विहि पवित्तीय केण वा कस्स?। तद्दार भेद लक्खण तदरिहपरिसा य सुचत्थे ॥ १ ॥ तीए से वक्खाणं जधा कप्पपेढे, एत्थ य कस्सत्ति दारं, तत्थ वत्तव्वं आवस्सगस्स, तं आव० किं अंगं किं अंगाहंति इच्चादि, एवं अट्ठपुच्छासंभवो, न दोष इत्यर्थः । खंधो नियमाज्झयणा अज्झयणावि य ण खंधवइरित्ता । तम्हा न दोवि गेज्झा अण्णतरं गेण्ह चोदेति॥१॥ आ०-खंधोत्ति सुत्तणामं तस्स य अत्थस्स भेदा अज्झयणा फुडभिण्णत्था, एवं दोण्ह महो भण्णति, ता सूरिः ' आवस्सगं णिक्खिविस्सामी ' त्यादि सुत्तं (७-१०) जाव ' आवस्सगंति णामं कोई कस्सति जहिच्छता कुणते । दीसइ लोए कस्सइ जह सीहगदेवदत्तादी ॥ १ ॥ अज्जीवेसुवि केसुवि आवासं भणति एगदव्वं तु । जह अच्चिन्तदुमभिणं भणंति सप्पस्स आवासं ॥ २ ॥ जीवाण बहूण जधा भणंति अगणिंति मूसआवासं । अज्जीवाविहु बहवो जह आवासं तु सउणिस्स ॥३॥ उभयं जीवाजीवा तण्णिप्फण्णं भणंति आवासं । जह राईणावासं देवावासं विमाणं वा ॥४॥ सम्मुदाएणुभयाणं कप्पावासं भणंति इंदस्स । नगरनिवासावासं गामावासं च भिक्खादि ॥ ५ ॥ (इतोऽग्रे पतितः पाठः कियान्)। गोलसालिया मुहमंडणं वा कीरइ, एते कीर अथिरत्तणओ ण गेज्झा, इमे गेज्झा-संखदण्णे तुवट्टादि-घट्टिता वराडया चेय गेज्झा, एतेसु एगाणेगेसु इच्छितागारणिव्वत्तणा सब्भावठवणा, जा पुण इच्छिताकारविसुहा अणागिती सा असब्भावठवणा इति, ' णामठवणाणं को पतिविसेसो ' इत्यादि (११-१३) सूत्र, ' भावरहितंमि दव्वे णामं ठवणा त दोवि अविसिट्ठा । इतरेतरं पडुच्चा किह उ विसेसो भवे तासिं? ॥१॥ कालकतो स्थ विसेसो णामं तो धरति जाव

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१२-१३] गाथा ||१..||

दीप अनुक्रम [१३-१४]

तं दव्वं । ठवणा दुभेद इत्तर आवकहा इत्तरा इणमो ॥ २ ॥ इय जो ठवणीदकतो अक्खो सो पुण ठविज्जते राया । एवित्तर आवकहा कलसादी जं विमाणेसु ॥ ३ ॥ अहव विसेसो भण्णति अभिहाणं वत्थुणो णिराकारं । ठवणा जो आगारो सोवि त णामस्स णिरवेक्खो ॥४॥ 'से किं तं दव्वावस्सए' इत्यादि (१२-१४) देहागमकिरिया वा दव्वावासं भणंति समयण्णा । भावाभावत्तणतो दव्वजियं भावरहितं वा ॥ १ ॥ दव्वावासयं किं भण्णति ?, उच्यते, देहो आगमो क्रिया वा, तिण्णिवि भावसुण्णा दव्वावस्सतं, कहं ?, उच्यते ?, जधा भावसुअत्तणतो दव्वजियं भण्णति तथा आवस्सगभावसुअत्तणतो दव्वावस्सयं, तं इमं 'जस्स आवस्सएत्ति पदं सिक्खितं' इत्यादि (१३-१४), जं आदितो आरब्भ पढंतेणं अंतं णीतं तं सिक्खितं, तं चेव हितए अविस्सरणभावठितं ठितं भन्नति, जं परावत्तयतो परेण वा पुच्छितस्स आदिमज्झंते सव्वं वा सिग्घमागच्छति तं जितं, जं वण्णतो तनुगुरुयबिंदुमत्ताहि पयसिलोगादिहि य संखितं तं मितं भण्णति, जं कमेण उक्कमेण उ अणेगधा आगच्छति तं परिजियं, जधा सणामं सिक्खितं ठितं च तेण समं जं तं णामसमं, अहवोवदिट्ठं गुरूवदिट्ठं जं सिक्खितं णामसमं स्वनामवत्, उदात्तादिता घोसा ते जधा गुरूहिं उच्चारिया तधा गहितंति, घोससममिति एगदुगादिअक्खरेहिं कोलियकयपातसोव्व पण्णविज्जमाणे सुते काउं भवतो विच्चामेलितं, दिट्ठंतो कोलियकयपातसोव्व, एवं ण विच्चामेलितं अविच्चामेलियं जहा गणधरदव्वं स्वभावास्थितमेवेत्यर्थः, बिंदुमत्तादिएहिं जं बूवइ अणूणातिरित्तं पडिपुण्णं भण्णति, जतोवइट्ठं वा छंदेण, लहुगुरुअंसेहिं पुण्णं उदत्तादिएहिं वा घोसेहिं उच्चरतो पुण्णं, गुरुणा अव्वत्तं शुभासंतं बालमूअभणितं वा, कहं वा भासतो गहियं? उच्यते, कंठे वट्टितणे परिफुडउट्ठविप्पमुक्केण भासतो गहियं, एवं गुरुसमीवातो तेणागतं,

॥ ७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४] गाथा ||१..||

दीप अनुक्रम [१५]

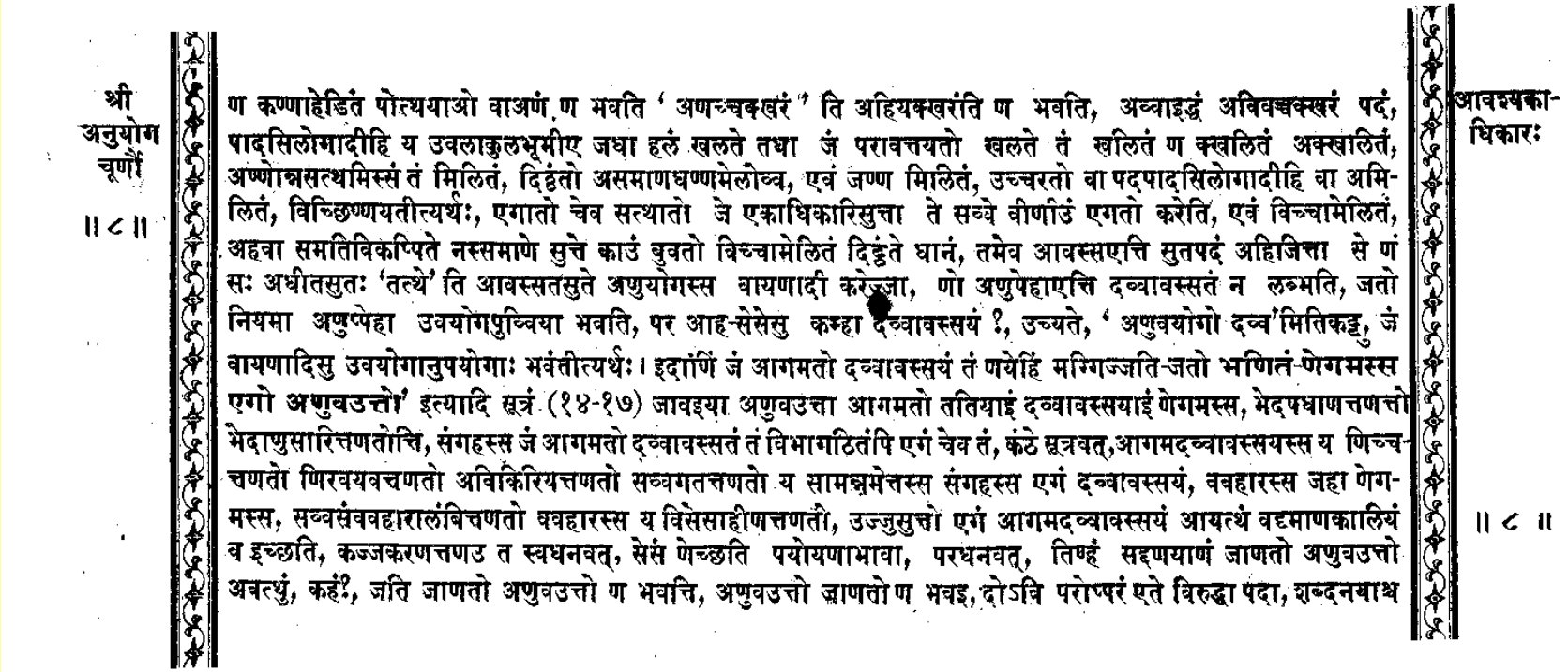

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८ ॥

ण कण्णाहेडितं पोत्थयाओ वाअणं ण भवति ‘ अणच्चक्खरं ’ ति अहियक्खरंति ण भवति, अव्वाइद्धं अविवच्चक्खरं पदं, पादसिलोगादीहि य उवलाकुलभूमीए जधा हलं खलते तधा जं परावत्तयतो खलते तं खलितं ण क्खलितं अक्खालितं, अण्णोन्नसत्थमिस्सं तं मिलितं, दिट्ठंतो असमाणधण्णमेलोव्व, एवं जण्ण मिलितं, उच्चरतो वा पदपादसिलोगादीहि वा अमिलितं, विच्छिण्णयतीत्यर्थः, एगातो चेव सत्थातो जे एकाधिकारिसुत्ता ते सव्वे वीणीउं एगतो करेति, एवं विच्चामेलितं, अहवा समतिविकप्पिते नस्समाणे सुत्ते काउं वुयतो विच्चामेलितं दिट्ठंते धानं, तमेव आवस्सएत्ति सुतपदं अहिजित्ता से णं सः अधीतसुतः ‘तत्थे’ ति आवस्सतसुते अणुयोगस्स वायणादी करेज्जा, णो अणुपेहाएत्ति दव्वावस्सतं न लब्भति, जतो नियमा अणुप्पेहा उवयोगपुव्विया भवति, पर आह-सेसेसु कम्हा दव्वावस्सयं ?, उच्यते, ‘ अणुवयोगो दव्व’मितिकट्टु, जं वायणादिसु उवयोगानुपयोगाः भवंतीत्यर्थः। इदाणिं जं आगमतो दव्वावस्सयं तं णयेहिं मग्गिज्जति-जतो भणितं-णेगमस्स एगो अणुवउत्तो’ इत्यादि सूत्रं (१४-१७) जावइया अणुवउत्ता आगमतो ततियाइं दव्वावस्सयाइं णेगमस्स, भेदपधाणत्तणत्तो भेदाणुसारित्तणतोत्ति, संगहस्स जं आगमतो दव्वावस्सतं तं विभागठितंपि एगं चेव तं, कंठे सुत्रवत्,आगमदव्वावस्सयस्स य णिच्चत्तणतो णिरवयवत्तणतो अविकिरियत्तणतो सव्वगतत्तणतो य सामन्नमेत्तस्स संगहस्स एगं दव्वावस्सयं, ववहारस्स जहा णेगमस्स, सव्वसंववहारालंबित्तणतो ववहारस्स य विसेसाहीणत्तणतो, उज्जुसुत्तो एगं आगमदव्वावस्सयं आयत्थं वट्टमाणकालियं व इच्छति, कज्जकरणत्तणउ त स्वधनवत्, सेसं णेच्छति पयोयणाभावा, परधनवत्, तिण्हं सद्दणयाणं जाणतो अणुवउत्तो अवत्थुं, कहं?, जति जाणतो अणुवउत्तो ण भवत्ति, अणुवउत्तो जाणतो ण भवइ, दोऽवि परोप्परं एते विरुद्धा पदा, शब्दनयाश्च

आवश्यकाधिकारः

॥ ८ ॥

अत्र द्रव्य-आवश्यक अधिकार: प्रस्तूयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१५-१९] गाथा ||१..||

दीप अनुक्रम [१६-२०]

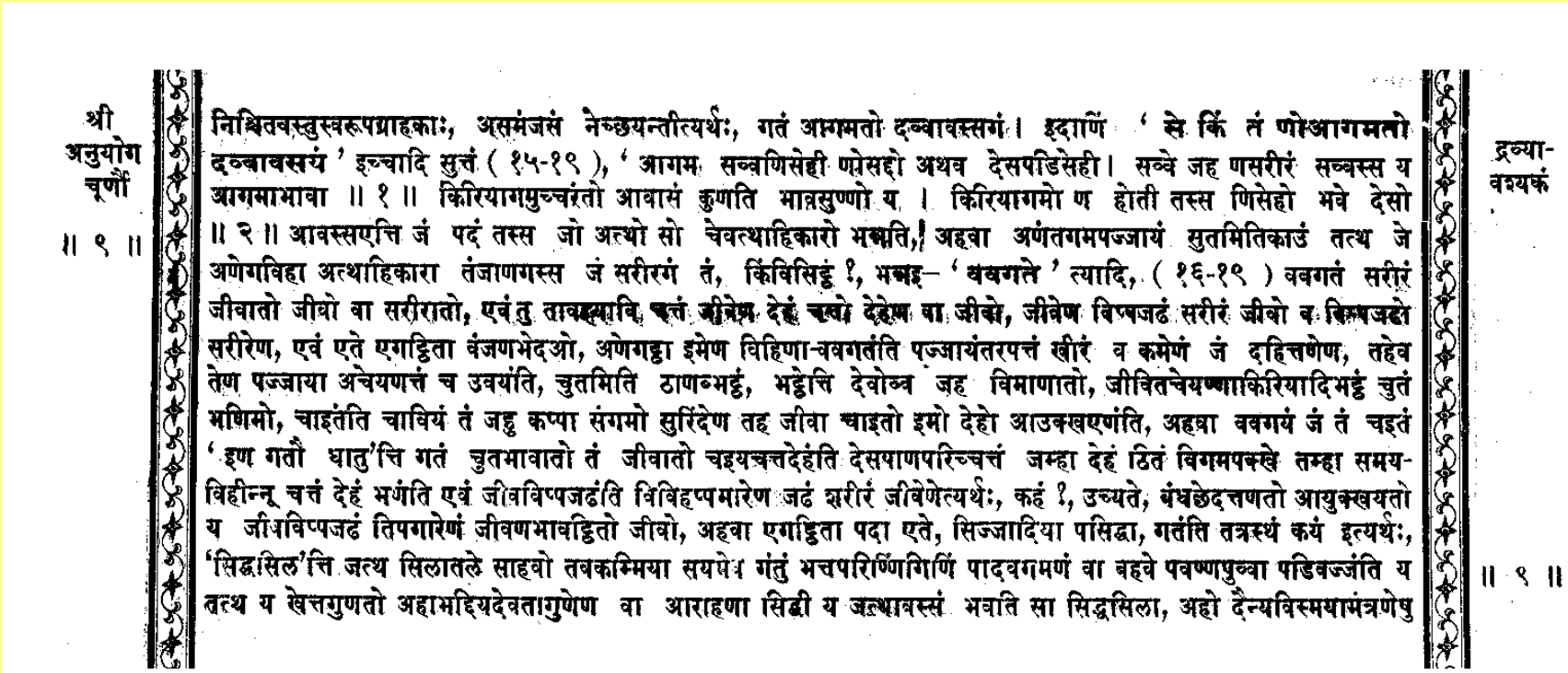

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ९ ॥

द्रव्यावश्यकं

निश्चितवस्तुस्वरूपग्राहकाः, असमंजसं नेच्छयन्तीत्यर्थः, गतं आगमतो दव्वावस्सगं। इदाणिं 'से किं तं णोआगमतो दव्वावस्सयं' इच्चादि सुत्तं (१५-१९), 'आगम सव्वणिसेही णोसद्दो अथव देसपडिसेही। सव्वे जह णसरीरं सव्वस्स य आगमाभावा ॥ १ ॥ किरियागमुच्चरंतो आवासं कुणति भावसुण्णो य। किरियागमो ण होती तस्स णिसेहो भवे देसो ॥ २ ॥ आवस्सएत्ति जं पदं तस्स जो अत्थो सो चेवत्थाहिकारो भवति, अहवा अणंतगमपज्जायं सुतमितिकाउं तत्थ जे अणेगविहा अत्थाहिकारा तंजाणगस्स जं सरीरगं तं, किंविसिट्ठं?, भण्णइ- 'ववगते'त्यादि, (१६-१९) ववगतं सरीरं जीवातो जीवो वा सरीरातो, एवं तु तावद्यावि चत्तं जीवेण देहं चत्तो देहेण वा जीवो, जीवेण विप्पजढं सरीरं जीवो व विप्पजढो सरीरेण, एवं एते एगट्ठिता वंजणभेदओ, अणेगट्ठा इमेण विहिणा-ववगतंति पज्जायंतरपत्तं खीरं व कमेणं जं दहित्तणेण, तहेव तेण पज्जाया अचेयणत्तं च उवयंति, चुतमिति ठाणब्भट्ठं, भट्ठेत्ति देवोव्व जह विमाणातो, जीवितच्चेयण्णाकिरियादिभट्ठं चुतं भणिमो, चाइतंति चावियं तं जह्न कप्पा संगमो सुरिंदेण तह जीवा चाइतो इमो देहो आउक्खएणंति, अहवा ववगयं जं तं चइतं 'इण गतौ धातु'त्ति गतं चुतभावातो तं जीवातो चइयचत्तदेहंति देसपाणपरिच्चत्तं जम्हा देहं ठितं विगमपक्खे तम्हा समय-विहीन्नू चत्तं देहं भणंति एवं जीवविप्पजढंति विविहप्पगारेण जढं शरीरं जीवेणेत्यर्थः, कहं?, उच्यते, बंधछेदत्तणतो आयुक्खयतो य जीवविप्पजढं तिपगारेणं जीवणभावट्ठितो जीवो, अहवा एगट्ठिता पदा एते, सिज्जादिया पसिद्धा, गतंति तत्रस्थं कथं इत्यर्थः, 'सिद्धसिल'त्ति जत्थ सिलातले साहवो तवकम्मिया सयमेव गंतुं भत्तपरिण्णिगिणिं पादवगमणं वा बहवे पवण्णपुव्वा पडिवज्जंति य तत्थ य खेत्तगुणतो अहाभद्दियदेवतागुणेण वा आराहणा सिद्धी य जत्थावस्सं भवति सा सिद्धसिला, अहो दैन्यविस्मयामंत्रणेषु ॥ ९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१५-१९] गाथा ॥१..॥

दीप अनुक्रम [१६-२०]

त्रिष्वपि युज्यते, अनित्यं शरीरमिति दैन्ये, आवश्यकं सुजातमिति विस्मये, अन्यं पार्श्वस्थमामंत्रयतो वा आमंतणे, गुरुसमीपातो आगमितं आघवितं, शिस्साणं कहणे पन्नवितं, सुत्ते सुत्ते जहत्थेणऽत्थनिरूवणं जं तं परूवितं, आवस्सगपडिलेहणादिकिरियाओवदंसितं, इयं क्रिया एभिरर्थैः कर्त्तव्येत्यर्थः, सिस्सपडिच्छयाणं अण्णोण्णाणं पुणो पुणो जो जधा जावइयं वा घेत्तुं समत्थो तस्स तधा दंसितं उवदंसितं, उत्प्राबल्यार्थः, अहवा आघवितं आख्यातं,–आवासतं अवस्सं करणिज्जं धुवणिग्गहो विसोही य । अज्झयणछक्क वग्गो णातो आराहणा मग्गो ॥१॥ समणेण सावएण य अवस्स कायव्वयं हवति जम्हा। अंतो अहो णिसस्स उ तम्हा आवस्सयं णाम ॥ २ ॥ आघवेत्ता जं भेदेहि कहितं तं पण्णवितं, जहा णामठवणादव्वभावावस्सयामिति, आघवियभेदकहियस्स भेदाणं प्रति प्रति अत्थरूवणा परूवणंति भण्णति, आघवियभेदयत्थपरूवियस्स जं उदाहरणेण दंसणं जधा जणस्स सूरुदयादिवेलासु सुहबोधणादिअवस्सकिरियाकरणं आवस्सयं, धिज्जादियाण वा ण (अ)ज्जा(उवलेवण) वासणादिकरणं वा एवं दंसियं, आघवियपरूवियदंसियस्स णिदंसणं उवसंधारेणं जधा तेसिं जणवताणं सुहबोधणादिकिरिया अवस्सकरणतातो आवस्सताणि भण्णंति तहा अम्हवि उभयसंझासु अवस्सपडिक्कमणभावातो जधा जत्थ काले पडिलेहणादि अवस्सं कज्जति तं आवस्सगं एवं णिदंसितं उवदंसितं, आघवितं आघवेत्ता पण्णवितं पण्णवेत्ता परूवियं परूवित्ता दंसितं दंसित्ता निदंसियं णिदंसित्ता उवदंसितं जधासत्ति सव्वणएहिं अत्थगमपज्जवा पंचावयवेण (दशा) वयवेन वा एवं उवदंसितं, अहवा एते एगट्ठितपदा, सीसो पुच्छति-कहं अचेयणं सरीरं आगमकिरितातीतं दव्वावस्सगं भण्णति ?, एत्थ जधा को दिट्ठंतो ?, आचार्य आह–अतीतमधुघृतघटपर्याये मधुघृतघटादिवत्, 'भविए'त्ति योग्यं, आवस्सगस्स ग्रहणधारणव्याख्यानाच्च नेत्यर्थः, जोणी गब्भाधारस्थानं ततो सव्वहा पज्जत्तो जन्मत्वेन

प्रत सूत्रांक [१५-१९] गाथा ||१..||

दीप अनुक्रम [१६-२०]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ११ ॥

द्रव्या-वश्यकं

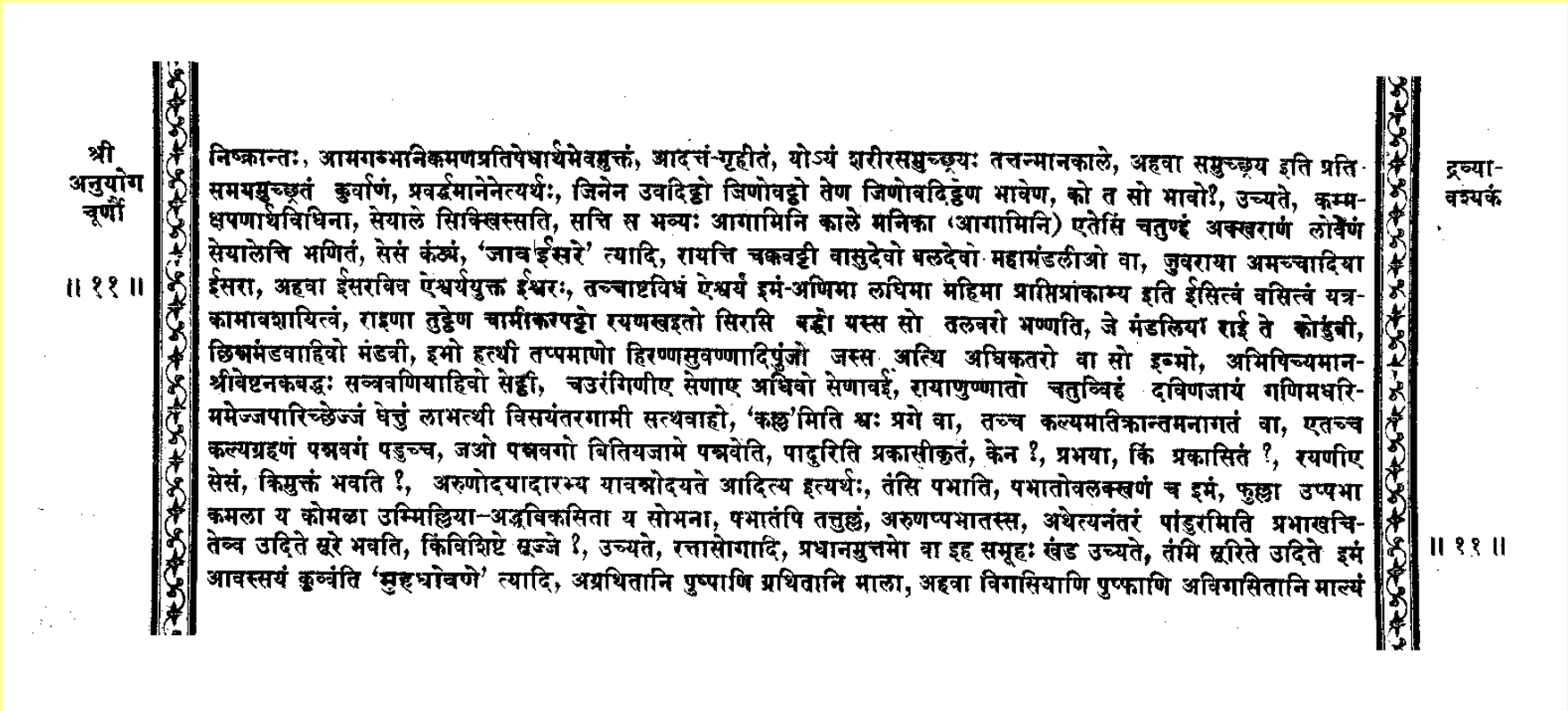

निष्क्रान्तः, आमगब्भनिक्कमणप्रतिषेधार्थमेवमुक्तं, आदत्तं-गृहीतं, योऽयं शरीरसमुच्छ्रयः तत्तन्मानकाले, अहवा समुच्छ्रय इति प्रति समयमुच्छ्रतं कुर्वाणं, प्रवर्द्धमानेनेत्यर्थः, जिनेन उवदिट्ठो जिणोवदिट्ठो तेण जिणोवदिट्ठेण भावेण, को त सो भावो?, उच्यते, कम्मक्षपणार्थविधिना, सेयाले सिक्खिस्सति, सत्ति स भव्यः आगामिनि काले मनिका (आगामिनि) एतेसिं चतुण्हं अक्खराणं लोवेणं सेयालेत्ति भणितं, सेसं कंठ्यं, 'जाव ईसरे' त्यादि, रायत्ति चक्कवट्टी वासुदेवो बलदेवो महामंडलीओ वा, जुवराया अमच्चादिया ईसरा, अहवा ईसरविच ऐश्वर्ययुक्त ईश्वरः, तच्चाष्टविधं ऐश्वर्यं इमं-अणिमा लघिमा महिमा प्राप्तिप्राकाम्य इति ईसित्वं वसित्वं यत्र-कामावशायित्वं, राइणा तुट्ठेण चामीकरपट्टो रयणखइतो सिरसि बद्धो यस्स सो तलवरो भण्णति, जे मंडलिया राई ते कोडुंबी, छिन्नमंडवाहिवो मंडवी, इभो हत्थी तप्पमाणो हिरण्णसुवण्णादिपुंजो जस्स अत्थि अधिकतरो वा सो इब्भो, अभिषिच्यमान-श्रीवेष्टनकबद्धः सव्ववणियाहिवो सेट्ठी, चउरंगिणीए सेणाए अधिवो सेणावई, रायाणुण्णातो चतुव्विहं दविणजायं गणिमधरिममेज्जपारिच्छेज्जं घेत्तुं लाभत्थी विसयंतरगामी सत्थवाहो, 'कल्ल'मिति श्वः प्रगे वा, तच्च कल्यमातिक्रान्तमनागतं वा, एतच्च कल्यग्रहणं पच्चवगं पडुच्च, जओ पच्चवगो बितियजामे पच्चवेति, पादुरिति प्रकासीकृतं, केन ?, प्रभया, किं प्रकासितं ?, रयणिए सेसं, किमुक्तं भवति ?, अरुणोदयादारभ्य यावन्नोदयते आदित्य इत्यर्थः, तंसि पभाति, पभातोवलक्खणं च इमं, फुल्ला उप्पभा कमला य कोमला उम्मिल्लिया-अर्द्धविकसिता य सोभना, पभातंपि तत्तुल्लं, अरुणप्पभातस्स, अथेत्यनंतरं पांडुरमिति प्रभाखचितेव्व उदिते सूरे भवति, किंविशिष्टे सज्जे ?, उच्यते, रत्तासोगादि, प्रधानमुत्तमो वा इह समूहः खंड उच्यते, तंमि सूरिते उदिते इमं आवस्सयं कुव्वंति 'मुहधोवणे' त्यादि, अग्रथितानि पुष्पाणि ग्रथितानि माला, अहवा विगासियाणि पुप्फाणि अविगासितानि माल्यं ॥ ११ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२०] गाथा ॥१..॥

दीप अनुक्रम [२१]

अहवा वत्थामरणा मल्लं, सभा जत्थ भारहाइयाइकहाहिं जणो अच्छती, पवा जत्थ उदगं दिज्जति, आरामो विविधफलजाति-उवसोभितो आरमंते वा जत्थ णरणारीजणा, उज्जाणं विविहजणोवसोभितं अहवा ऊसवअणूसवेसु वा मंडियपसाहितो जणो अस-णादि णेतुं जत्थ भुंजति तं उज्जाणं। गतं लोइयं दव्वावस्सयं, 'से किं तं कुप्पावयणितं' (२०-२४) इत्यादि, जडाहि भिक्खं हिंडंति ते चरगा, चीरपरिहाणा चीरपाउरणा चीरभंडोवकरणा य चीरीया, चम्मपरिहाणा चम्मपाउरणा चम्मभंडोवकरणा य चम्महिं-डंता चम्मखण्डिता वा, भिक्खं उडेंति भिक्षाभोजना इत्यर्थः बुद्धसासणत्था वा सिक्खंडी, पंडुरंगा सारक्खा, पायवडणादिविविह-सिक्खाइ बहुलं सिक्खावंतो तं चेव पुरो कातुं कण्णभिक्खादि अडंतो गोतमा, गावीहिं समं गच्छंति चिट्ठंति वसंति य आहारिमे य कंदमूलपत्तपुप्फफले आहरिंति सरगवरगभायणेसु य दिण्णं असणादि गोण इव भक्खयंतो गोव्वतिया, सव्वसाधारणतो गृह-धर्म एव श्रेयान् अतो गृहधर्मे स्थिता गृहधम्मत्था, गौतमयाज्ञवल्क्यप्रभृतिभिः ऋषिभिर्य्या धर्म्मसंहिता प्रणिता तं चिंतयंतः तामिर्व्यवहरंतो धर्मचिंतगा भवंति, ते च जने प्रत्याख्याताः धर्मसंहितापाठकाः, अविरुद्धा वेणइया वा हत्थियारपासंडत्था जहा वेसियायणपुत्तो सव्वदेवताणं तिरियाण य सव्वाविरोधपणामकारित्तणतो य अविरुद्धधम्मठिता भणिता, विरुद्धा अकिरियावाय-ट्ठिता सव्वकिरियाबादी अण्णाणियवेणईएहिं सह विरुद्धा, ण य तेसिं कोवि देवो पासंडो वा विज्जति, तहवि केई धिज्जी-विताइक्कज्जेण देवतं पासंडं वा पडिवन्ना विरुद्धधम्मचिन्ता भणिया, उस्सण्णं वुड्ढवते पव्वयंतित्ति तावसा वुड्ढा भणिता, सावगध-म्मातो पसूयत्ति बंभणा बोहगत्ति भणिता, अण्णे भणंति—वुड्ढा सावगा बंभणा इत्यर्थः, स्कंदः— कार्तिकेयः मुगुंदो—बल-देवः, दुर्गायाः पूर्वरूपं अत्र कूष्माण्डिवत् तथाठिता अज्जा भन्नति, सेव महिषव्यापादनकालात्प्रभृति तद्रूपस्थिता कोट्टन्या भण्णति,

॥ १२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२१-२७] गाथा ||१..||

दीप अनुक्रम [२२-२८]

सेसा इंदाइया कंठा, तेसु इमे आवस्सए करेंति-उवलेवणं लिंपणं, संमज्जणं वोहरणं, आवरिसणं उदकेण, सेसं कंठ्यं । कुप्पावयणियं दव्वावस्सतं गतं, ‘से किं तं लोगुत्तरियं’ इत्यादि (२१--२६) जहा टे(फे)णगादिणा घट्टा सरीरं केसा वा उदकादिणा मट्ठा कता केसा सरीरं वा तेल्लेण तुप्पिता--मक्खिता जेसिं ते तुप्पोट्ठा तुप्पिता वा उट्ठा सिद्धकेण जेसिं ते तुप्पोट्ठा, सेसं कंठ्यं, सद्धासंवेगरहितत्तणतो, दव्वावस्सतं गतं । ‘ से किं तं भावावस्सयं ’ इत्यादि, (२२--२८) संवेगजणितविसुज्झमाणभावस्स सुतमणुस्सरतो तदा भावयोगपरिणयस्स आगमतो भावावस्सगं भवति, णोआगमतो भावावस्सयं णाणुपयोगेण किरियं करेमाणस्स णाणकिरियारूवसुभोवयोगपरिणयस्स णोआगमतो भावावस्सतं, तं तिविधं--तत्थ ‘लोइयं पुव्वण्हे भारहं’ (२५--२८) इत्यादि कंठ्यं, कुप्पावइणियं ‘ जे इमे चरग ’ इत्यादि इज्जत्ति वज्जा माया मज्जा भणिया देवपूया वा इज्जा तं गायत्र्या आदिक्रियया उभयस्स सोहणा करेंति दोवि करा नउलसंठिया तं इट्ठदेवताए अंजलिं करेंति, अण्णे भणंति-इज्जा इति माता तीए गब्भस्स णिग्गच्छतो जो करतलाणं आगारो तारिसं देवताए अंजलिं करेंति, अहवा माउपियं भत्ता देवयमिव मण्णमाणा अंजलिं करेंति, सा इज्जंजली, इट्ठदेवयाए वा अंजलिं इट्ठंजली, होमं अग्निहोत्तियाणं जं पढमओ जपः, देसीवयणतो उंडं मुहं तेण रुकंति-सद्दकरणं, तं च वसभढिक्किया, णमोक्कारो जधा णमो भगवते आदित्याय, एवं खंदादियाणवि वत्तव्वं, गतं कुप्पावयणीणं भावावस्सयं । इदाणिं ‘ से किं तं लोगुत्तरियं ’ इत्यादि (२७--३०) तच्चित्तादि पया एगट्ठिता, अहवा एगस्सेवऽत्थस्स तदंसत्ता भिण्णत्था भवंति घटग्रीवाकुक्ष्यादि, इह पुण इमेण विहिणा-णिच्छयणयाभिप्पाएण चित्त इत्यात्मा, तहेव चित्तं तम्हि वा चित्तं तच्चित्तं, अहवा मतिसुतणाणभावे चित्तं, अहवा आवस्सयकरणकाले चेव अण्णोण्णसुत्तत्थकिरियालोयणं चित्तं, तदेव मनोद्रव्योपरंजितं मनः,

॥ १३ ॥

अत्र भावावश्यक वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२७-२८] गाथा ||२-३||

दीप अनुक्रम [२९-३२]

तदेव चित्तं द्रव्यलेश्योपरंजितं लेश्या, एते परिणामवसा वर्त्तमानभिण्णकाला भवंति, क्रियया करोमीति प्रारंभकाले, मनसाऽध्यवसितं, तदेवोत्तरकालं संतानक्रियाप्रवृत्तस्य प्रवर्द्धमानश्रद्धस्य तीव्राध्यवसितं, प्रतिसूत्रं प्रत्यर्थं प्रतिक्रियं वाऽर्थेऽस्य साकारोपयोगोपयुक्तो तदट्ठोवयुत्ते, तस्साहणे जाणि सरीररजोहरणादियाणि दव्वाणि ताणि किरियाकरणत्तणतो अप्पियाणि प्रतिसमयावलिकादिकालविभागं प्रतिसूत्रार्थं प्रतिक्रियं प्रतिसंध्यं संताणतो तब्भावणाभावितो भवति, एवं अणन्नमणस्स उवयोगोवयुत्तस्स भावावस्सतं भवति, एत्थ पसत्थेण लोउत्तरभावावस्सएणं अधिकारो, तस्स य अभिण्णत्था पज्जायवयणा असंमोहणत्थं भणिता, ते य णाणावंजणा णाणावंजणत्तणतो चेव णाणाविहघोसा भवंति, ते य इमे ‘आवस्सगं’ गाहा (*२-३०) आवस्सगं अवस्सकरणिज्जं जं तमावासं, अहवा गुणाणमावासत्तणतो, अहवा आ मज्जायाए वासं करेइत्ति आवासं, अहवा जम्हा तं अवासयं जीवं आवासं करेति दंसणणाणचरणगुणाण तम्हा तं आवासं, अहवा तक्करणातो णाणादिया गुणा आवासिंतित्ति आवासं, अहवा आ मज्जायाते पसत्थभावणातो आवासं, अहवा आ मज्जाए वस आच्छादने पसत्थगुणेहिं अप्पाणं छादेतीति आवासं, अहवा सुण्णमप्पाणं तं पसत्थभावेहिं आवसेतीति आवासं, कम्ममट्ठविहं कसाया इंदिया वा धुवा इमेण जम्हा तेसिं णिग्गहो कज्जइ तम्हा धुवाणिग्गहो, अवस्सं वा णिग्गहो, कम्ममलिणो आता विसोहिज्जतीति विसोही, सामादिकादि गण्यमानानि षडध्ययनानि, समूहः वग्गो, णायो युक्तः अभिप्रेतार्थसिद्धिः आराधणा मोक्खस्स सव्वपसत्थभावाण वा, लद्धीण पंथो मार्ग इत्यर्थः, ‘समणेण’ गाहा (*३-३१) एसा अहोणिसत्ति दिणरयणीमज्झे, आवस्सगेत्ति गतं ॥ ‘से किं तं सुते’ त्यादि (२९-३१) तं चतुर्विधं णामादि, नामठवणा कंठ्या, दव्वसुतं आगमओ णोआगमतो य, जं आगमतो तं अणुवयोगतो सुतमुच्चारयंतस्स जं तं,

अथ श्रुतस्य नामादि भेदा: कथयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२९-३७] गाथा ||३..||

दीप अनुक्रम [३३-४१]

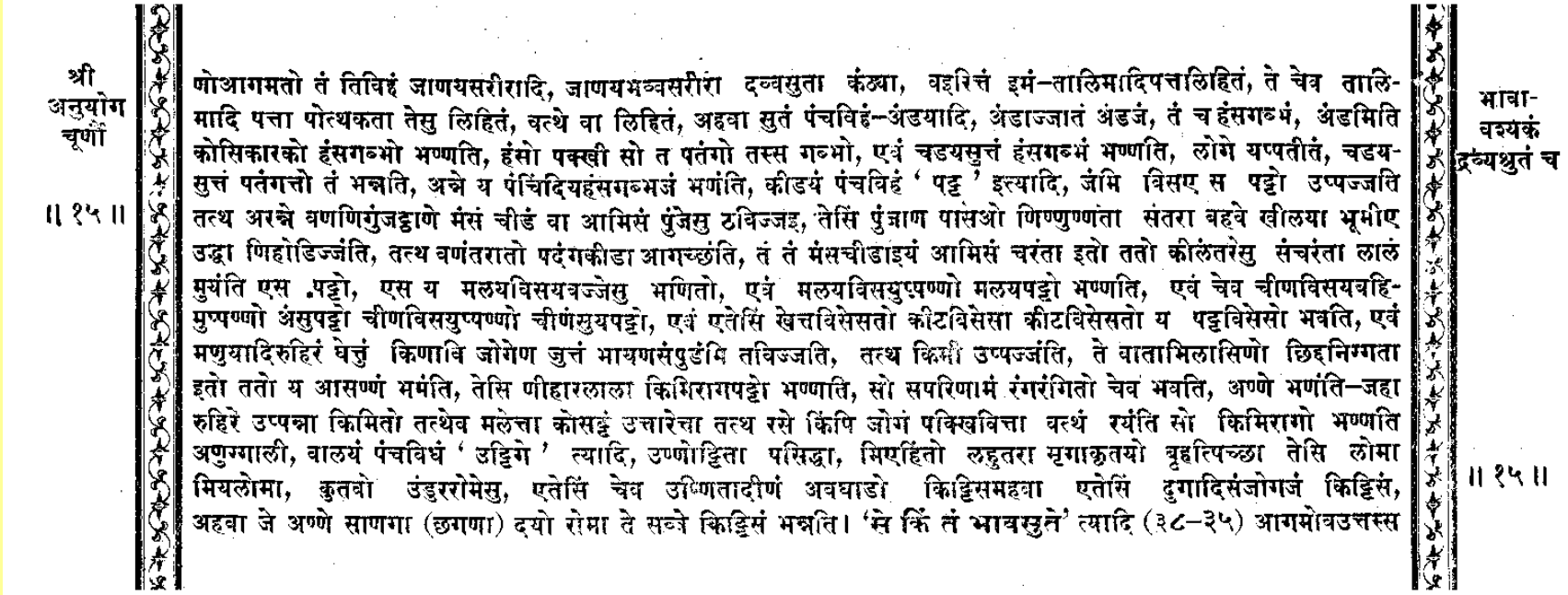

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ १५ ॥

णोआगमतो तं तिविहं जाणयसरीरादि, जाणयभव्वसरीरा दव्वसुता कंठ्या, वइरित्तं इमं–तालिमादिपत्तलिहितं, ते चेव तालिमादि पत्ता पोत्थकता तेसु लिहितं, वत्थे वा लिहितं, अहवा सुतं पंचविहं–अंडयादि, अंडाज्जातं अंडजं, तं च हंसगब्भं, अंडमिति कोसिकारको हंसगब्भो भण्णति, हंसो पक्खी सो त पतंगो तस्स गब्भो, एवं चडयसुत्तं हंसगब्भं भण्णति, लोगे यप्पतीतं, चडयसुत्तं पतंगत्तो तं भन्नति, अन्ने य पंचिंदियहंसगब्भजं भणंति, कीडयं पंचविहं ‘ पट्ट ’ इत्यादि, जंमि विसए स पट्टो उप्पज्जति तत्थ अन्ने वणणिगुंजट्ठाणे मंसं चीडं वा आमिसं पुंजेसु ठविज्जइ, तेसिं पुंजाण पासओ णिण्णुण्णंता संतरा बहवे खीलया भूमीए उद्धा णिहोडिज्जंति, तत्थ वणंतरातो पदंगकीडा आगच्छंति, तं तं मंसचीडाइयं आमिसं चरंता इतो ततो कीलंतरेसु संचरंता लालं मुयंति एस .पट्टो, एस य मलयविसयवज्जेसु भणितो, एवं मलयविसयुप्पण्णो मलयपट्टो भण्णति, एवं चेव चीणविसयवहिमुप्पण्णो अंसुपट्टो चीणविसयुप्पण्णो चीणंसुयपट्टो, एवं एतेसिं खेत्तविसेसतो कीटविसेसा कीटविसेसतो य पट्टविसेसो भवति, एवं मणुयादिरुहिरं घेत्तुं किणावि जोगेण जुत्तं भायणसंपुडंमि तविज्जति, तत्थ किमी उप्पज्जंति, ते वाताभिलासिणो छिद्दनिग्गता इतो ततो य आसण्णं भमंति, तेसि णीहारलाला किमिरागपट्टो भण्णति, सो सपरिणामं रंगरंगितो चेव भवति, अण्णे भणंति–जहा रुहिरे उप्पन्ना किमितो तत्थेव मलेत्ता कोसट्ठं उत्तारेत्ता तत्थ रसे किंपि जोगं पक्खिवित्ता वत्थं रयंति सो किमिरागो भण्णति अणुग्गाली, वालयं पंचविधं ‘ उट्टिगे ’ त्यादि, उण्णोट्टिता पसिद्धा, मिएहिंतो लहुतरा मृगाकृतयो वृहत्पिच्छा तेसि लोमा मियलोमा, कुतवो उंडुररोमेसु, एतेसिं चेव उण्णितादीणं अवघाडो किट्टिसमहवा एतेसिं दुगादिसंजोगजं किट्टिसं, अहवा जे अण्णे साणगा (छगणा) दयो रोमा ते सव्वे किट्टिसं भन्नति। ‘से किं तं भावसुते’ त्यादि (३८–३५) आगमोवउत्तस्स

भावावश्यकं द्रव्यश्रुतं च ॥ १५ ॥

‘द्रव्य-श्रुत’ अधिकार: वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ॥४॥

दीप अनुक्रम [४२-४९]

भावसुतं, जम्हा सुतोवयुत्तो ततो अणण्णो लब्भति णोआगमतो भावसुतेत्यादि, इह चोदक आह–सुतोवयोगोवयुत्तस्स आगमतो भावसुतं जुत्तं, णोआगमतो कहं भावसुतं भवतीति, णोगारो सुयपडिसेधे, सुदमागमो ण भवति, अह ते ण सुत्तपडिसेहे तो सुतं णोआगमो कहं भवति ? आचार्याह–अणेगत्था निवाता इति कातुं भण्णति चरणगुणसंजुत्तस्स सुतोवयुत्तस्स णोआगमं भणिमो, एत्थ चरणगुणा आगमो ण भवति, तस्स पडिसेहे एव णोसद्दो देसपडिसेहे, तं च णोआगमओ भावसुत्तं दुविहं-लोइयं लोउत्तरं च, मिच्छद्दिट्ठिप्पणीयं मिच्छासुतं, तं च लोइयं भारहादि, सम्मद्दिट्ठिपणीतं संमसुतं, तं च लोउत्तरं आयारादि, सेसं जहा नंदीए वक्खातं तधा दट्ठव्वं । इदाणिं तस्स एगट्ठिता पंच णाणावंजणा णाणाघोसा, ते य इमे 'सुतनंत' गाथा(*४--३८)कंठ्या, एत्थ अण्णे इमे पढंति 'सुय सुत्त' गाहा। एते अत्थपज्जायतो अणेगट्ठिया इमेण विहिणा-सोइंदियलद्धिविसयमुवगतं सुतं भण्णति, गुरुसमीवा वा सवणभावे सुतं, गुरूहिं अणक्खातं जम्हा णो बुज्झति तम्हा पासुत्तसमं सुत्तं, वितिभिण्णपुप्फठिता इव अत्था, जम्हा तेण गंथिया तम्हा गंथो, सिद्धमत्थमंतं णयतित्ति सिद्धंतो, अन्नाणमिच्छविसयकसायप्पवलभावावट्ठितजीवाणं सासणेण सत्थं, अहवा कडसासणमिव सासणं भणितव्वं, आणमणं आणा, तद्भाव इत्यर्थः, आणयंति वा एयाए आणा, वायते वयणं, वइजोगेण वा गेण्हति, जम्हा वायोगविसयं णं भण्णति, इहपरलोगहियपवत्तणअहियणियत्तणउवदेसप्पदाणातो उवदेसो भण्णति, प्रति जीवादिभेदतत्त्वस्य पण्णवणत्तणतो पण्णवणा, अहवा पण्णा बुद्धी तं च मतिणाणं भावसुतणाणं वा, तेहुवलद्धे अत्थे वणाइति सद्दकरणं, तेण सह योजयंतस्स पण्णवणा भण्णति, सुधम्मातो आरब्भ आयरियपरंपरेणागतमिति आगमो, अत्तस्स वा वयणं आगमो। 'से किं तं खंधे' इत्यादि (४४--३८) खंधो नामादिचतुर्विधो तत्थ णामट्ठवणा कंठा, दव्वेवि जाव वति-

॥ १६ ॥

अथ भावश्रुतस्य अधिकार: आरभ्यते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [४४-५८] गाथा ||५-७||

दीप अनुक्रम [५०-६९]

रित्ते सचित्तादि, तत्थ सचित्ते हयाई, अचित्ते दुपदेसीदाइ, मीसे सेणाए अग्गिमखंधादी, अहवा एसेव सचित्ताइ अण्णाभिधाणेण तिविहो कसिणादिसण्णत्ति, तत्थ कसिणो जो च्चेव हतादी सचित्तो भणितो, सोच्चेव अविसिट्ठो, अकसिणोवि दुपदेसादी चेव अविसिट्ठो, अणेगदवियदवियखंधो पुण उवचितो भाणितव्वो, अहवा सुत्तकारेण विसेसदंसणत्थमेव वितितो कसिणादिभेदो उवण्णत्थो, किं चान्यत्, अभिधाणविसेसतो णियमा चेव अत्थविसेसतो भवति, सो त वक्खाणतो विसेसो लक्खिज्जति, तत्थ हयादिए सच्चित्तो, सचित्तगहणातो जीवसमूहखंधो विवक्खितो, दुपदेसादियाणं अचित्तत्तणतो अचित्तखंधत्तणं भणितं, जियाजियदव्वाण विसिस्सट्ठिताण जाव समूहकप्पना स मीसखंधो, सो चेव हयादी सचित्तखंधो कसिणो भन्नति, कहं ?, उच्यते, जीवाजीवपदेसेसु तं जे सरीरपरिणया दव्वा, एरिसो विवक्खियपिंडसमूहो कसिणखंधो भन्नति, अकसिणेवि दुपदेसतिपदेसादिए पडुच्च पदेससंखया अकसिणो भण्णति, एवं ससावि भाणियव्वा, जाव सव्वहा कसिणं ण हवति, अणेगदवियखंधो जीवपयोगपरिणामिया जीवपदेसोपाचिया य जे दव्वा ते अणेगविधा, अन्ने तत्थेव जीवपयोगपरिणामिता जीवपदेसेसु त अवचिता एरिसावि दव्वा अणेगविधा, एरिसाणं उवचियाण्णावचयिदव्वाणं बहूणं समूहो अणेगदवियखंधो भण्णति, गतो दव्वखंधो । से किं तं भावखंधो इत्यादि (५४-४२) खंधपदत्थोवयोगपरिणामो जो सो आगमतो भावखंधो, णोआगमतो भावखंधो णाणकिरियागुणसमूहमतो, सो त सामादियादि छण्हं अज्झयणाणं संमेलो, एत्थ किरिया णोआगमोत्तिकाउं, णोसद्दो मीसभावे भवति, तस्स य भावखंधस्स एगट्ठिया इमे ‘गणकाय’ गाथा (❀५-४३) एवेसु अत्थदंसगा उदाहरणा इमे-मल्लजनगणवद् गणः पृथिवीसमस्तकायजीवकायवत् कायः छजीवणिकायवत् निकायः द्व्यादिपरमाणु-

॥ १७ ॥

अत्र ‘स्कन्ध’ शब्दस्य निक्षेपा: कथयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [४४-५८] गाथा ||५-७||

दीप अनुक्रम [५०-६९]

स्कंधवत् स्कंधः गोवर्गवत् वर्गः मीलितधान्यराशिवत् राशिः, विप्रकीर्णधान्यपुंजीकृतपुंजवत् पुंजः गुडादिपिंडीकृतपिंडवत् पिंडः, हिरण्यादिद्रव्यनिकरवत् निकरः, तीर्थादिषु संमिलितजनसंघातवत् संघातः, राज्ञो गृहांगणे जनाकुलवत् आकुलः पुरादिजनसमूहवत् समूहः। सीसो पुच्छति-कइं छव्विहं आवस्सयंति?, भण्णति, जतो सामादियादियाण सावज्जवज्जणादि छव्विहो अत्थणिबंधो, इमे य ते अत्था-'सावज्जजोग' गाथा (*६-४३) पढमे सामादियज्झयणे पाणादिवायादिसव्वसावज्जजोगविरती कायव्वा, बितिए दरिसणविसोहिणिमित्तं पुणबोधिलाभत्थं च कम्मखवणत्थं च तित्थगरणामुक्कित्तणा कता, ततिए चरणादिगुणसमूहवतो वंदणणंमसणादिएहिं पडिवत्ती कातव्वा, चउत्थे मूलुत्तरावराहक्खलणाए क्खलितो पच्चागतसंवेगे विसुज्झमाणभावो पमातकरणं संभरंतो अप्पणो णिंदणगरहणं करेति, पंचमे पुण साधू वणोवणएण दसविहपच्छित्तेण चरणादियाइयारवणस्स तिगिच्छं करेति, छट्ठे जहा मूलुत्तरगुणपडिवत्ती निरतियारधारणं च जधा तेसिं भवति तथा अत्थपरूवणा। इदाणिं ओवस्सयस्स जं वक्खातं तस्य ज्ञापनार्थं जं च व्याख्येयं तस्य च ज्ञापनार्थं इदमाह-'आवस्सगस्स एसो' गाथा (*७-४४) छण्हवि अज्झयणाणं जो सामण्णत्थो स पिंडत्थो भण्णति, सो य पवण्णितो, इदाणिं अज्झयणेसु जो जहा पत्तेयमत्थि स तहा सवित्थरो वण्णिज्जति, तंजधा—'सामादियं' इत्यादि (५९—४४) सूत्रं, तत्थत्ति अज्झयणछक्कमज्झे जं पढमं सामादियंति अज्झयणं, तं च समभावलक्खणं सव्वचरणादिगुणाधारं वोमंपिव सव्वदव्वाणं सव्वविसेसलद्धीण य हेतुभूतं पायं पावअंकुसदाणं, चउवीसत्थवाइया विसेसलक्खणेहिं भिण्णा भाणितव्वा, अहवा जतो तं सामायिकं णाणदंसणचरणगुणमयं, णाणादिवइरित्तो य अण्णो गुणो णत्थि, सेसज्झयणावि जतो णाणादिगुणातिरित्ता ण

॥ १८ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [५९-७०] गाथा ||७..||

दीप अनुक्रम [७०-८०]

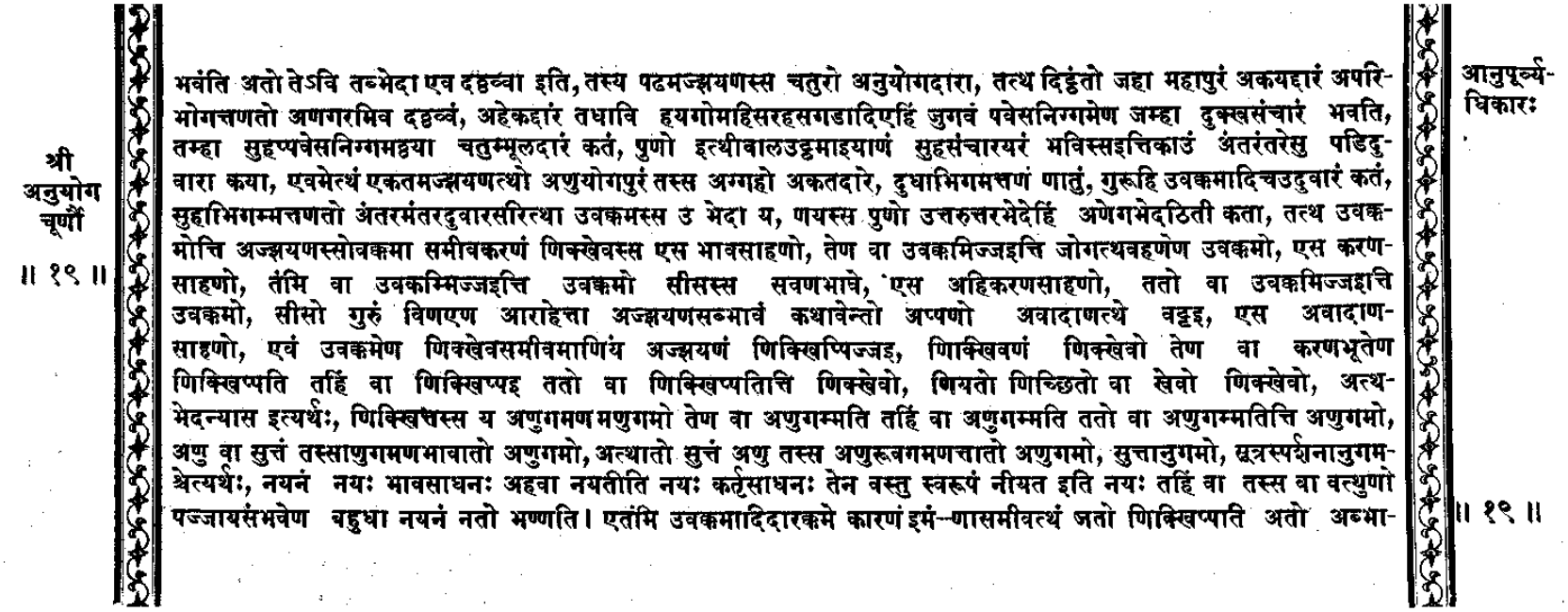

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ १९ ॥

भवंति अतो तेऽवि तब्भेदा एव दट्ठव्वा इति, तस्य पढमज्झयणस्स चतुरो अनुयोगदारा, तत्थ दिट्ठंतो जहा महापुरं अकयद्दारं अपरिभोगत्तणतो अणगरमिव दट्ठव्वं, अहेकद्दारं तधावि हयगोमहिसरहसगडादिएहिं जुगवं पवेसनिग्गमेण जम्हा दुक्खसंचारं भवति, तम्हा सुहप्पवेसनिग्गमट्ठया चतुम्मूलदारं कतं, पुणो इत्थीबालउड्ढमाइयाणं सुहसंचारयरं भविस्सइत्तिकाउं अंतरंतरेसु पडिदुवारा कया, एवमेत्थं एकतमज्झयणत्थो अणुयोगपुरं तस्स अग्गहो अकतदारे, दुधाभिगमत्तणं णातुं, गुरूहि उवक्कमादिचउद्दुवारं कतं, सुहाभिगम्मत्तणतो अंतरमंतरदुवारसरित्था उवक्कमस्स उ भेदा य, णयस्स पुणो उत्तरुत्तरभेदेहिं अणेगभेदट्ठिती कता, तत्थ उवक्कमोत्ति अज्झयणस्सोवक्कमा समीवकरणं णिक्खेवस्स एस भावसाहणो, तेण वा उवक्कमिज्जइत्ति जोगत्थवहणेण उवक्कमो, एस करणसाहणो, तंमि वा उवक्कम्मिज्जइत्ति उवक्कमो सीसस्स सवणभावे, एस अहिकरणसाहणो, ततो वा उवक्कमिज्जइत्ति उवक्कमो, सीसो गुरुं विणएण आराहेत्ता अज्झयणसब्भावं कथावेन्तो अप्पणो अवादाणत्थे वट्टइ, एस अवादाणसाहणो, एवं उवक्कमेण णिक्खेवसमीवमाणियं अज्झयणं णिक्खिप्पिज्जइ, णिक्खिवणं णिक्खेवो तेण वा करणभूतेण णिक्खिप्पति तंहिं वा णिक्खिप्पइ ततो वा णिक्खिप्पतित्ति णिक्खेवो, णियतो णिच्छितो वा खेवो णिक्खेवो, अत्थभेदन्यास इत्यर्थः, णिक्खित्तस्स य अणुगमणमणुगमो तेण वा अणुगम्मति तंहिं वा अणुगम्मति ततो वा अणुगम्मतित्ति अणुगमो, अणु वा सुत्तं तस्साणुगमणभावातो अणुगमो, अत्थातो सुत्तं अणु तस्स अणुरूवगमणत्तातो अणुगमो, सुत्तानुगमो, सूत्रस्पर्शनानुगमश्चेत्यर्थः, नयनं नयः भावसाधनः अहवा नयतीति नयः कर्तृसाधनः तेन वस्तु स्वरूपं नीयत इति नयः तंहिं वा तस्स वा वत्थुणो पज्जायसंभवेण बहुधा नयनं नतो भण्णति। एतंमि उवक्कमादिदारकमे कारणं इमं--णासमीवत्थं जतो णिक्खिप्पति अतो अब्भा-

आनुपूर्व्यधिकारः

॥ १९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [७१-८१] गाथा ॥८॥

दीप अनुक्रम [८१-९२]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २० ॥

सकरणत्थं आदावेव उवक्कमो कतो, जम्हा य अणिक्खित्तं णाणुगम्मति तम्हा उवक्कमाणंतरं च गयं णिक्खेवो, णिक्खित्तं च णियमा णाणत्थमणुगम्मति णाणं च अत्थपज्जायाणुसारी य नियमा णयतो अतो णयदारातो पुव्वं णिक्खेवाणंतरं वा अणुगमो भणितो, अणुगमो य णयतो णियमा णयवइरित्तो य अणुगमो जतो णत्थि, किं वा सव्वाभिधाणसव्वपज्जायाणुगया य णयत्ति काउं अंते णयदारं। इदाणिं जं वुत्तं छव्विधो उवक्कमो, तो गुरू समीहितत्थाय अत्थकते छ भेदे देसेति, तंजधा णामट्ठवणा दव्वखेत्त-कालभावोवक्कमे य, णामट्ठवणा जधा पुव्वं, दव्वे आगमतो णोआगमतो य, तत्थ णोआगमे जाणयभव्वसरीरातिरित्तो तिविधो सचित्तअचित्तमीसा, सचित्ते दुपयचउप्पयापदेसु, एक्केको दुहा-परिकम्मणे वत्थुविणासे य, खेत्तकालेसु य सवित्थरं भाणितव्वं, भावतो इमो णोआगमे पसत्थो अपसत्थो य, अप्पसत्थे मरुइणिगणियाअमच्चदिट्ठंतो, पसत्थे गुरुमादिभावोवक्कमो, एतं सव्वं सवित्थरं जधा आवस्सगादिसु तथा भाणितव्वं, अहवा सुतभणितो उवक्कमो छव्विधो इमो आणुपुव्विमादी 'से किं तं आणुपुव्वी' ?२ दसविधे'त्यादि (७१–५१) आकारस्स दीहत्वं अनुपूर्वशब्दस्याकारादित्वात् अनुपूर्वादिषु प्रत्ययान्तरस्य चाश्रवणात् प्राकृतेषु 'एते सव्वसमाणा' इति दीर्घहस्वत्वं क्वचित् विषये क्रियत इति, जधा अणणुगामी अणाणुगामी अभिणिबोधो आभिणिबोधियं, एवं आणुपुव्वी, आयणुए अणुजेट्ठ परिवाडित्तिवुत्तं भवति, अहवा पुव्वुद्दिट्ठस्स जं पच्छा उद्दिट्ठं तं अणु भण्णति तं अणुपूर्वत्वं लभते जत्थ तं भणंति आणुपुव्वी, तृतीयस्य द्वितीयः पूर्वं इत्यर्थः, अणु पच्छाभावो पुव्वंति आदिभावो अत्थतो पडुप्पन्नं मज्झमादो य, एतं जत्थऽत्थिसूधो (भावो) सा होति आणुपुव्वी, अहवा पढमातो परं जत्थ अणुपुव्वं च अत्थि स भवति आणुपुव्वी, एसा आणुपुव्वी दसविधा णामादी, ' से किं तं णामे ' त्यादि कंठ्या, जाव उवणिधिकेत्यादि, उवणि-

आनुपूर्व्य-धिकारः

॥ २० ॥

अत्र आनुपूर्वी अधिकार: आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [७१-८१] गाथा ||८||

दीप अनुक्रम [८१-९२]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ २१ ॥

आनुपूर्व्य-धिकारः

हियत्ति दुपयं सुत्तं, इदाणिं एतस्सत्थो--इमं अज्झयणं गुरुवतिजोगे आणुपुव्वीए उवयंतित्ति वा पक्खतित्ति वा छुभतित्ति वा, अहवा इमं अज्झयणं आणुपुव्वीए आतभावेण उवेतित्ति वा उत्तरतित्ति वा अवतरतित्ति वा एगट्ठं, अहवा णिहितंति वा णिहेतित्ति वा ठवेतित्ति वा एगट्ठा, एवं बहुधा पयत्थो भणिओ, इमस्स अज्झयणस्स उवणिहि-तेण ठ्विता जाव आणुपुव्वी सा उवणिहिया भवति, पुड्डतरं भण्णति, जा अणुपुव्वी इमं अज्झयणं पुव्वाणुपुव्वीयादीहि अणेगधा भवति, उवक्कमेति पक्खिवइत्ति वुत्तं भवति, जधासंभवपक्खिते य इमं अज्झयणं णिहीकतं भवति, एवं उवणिहिया भवति, सिस्सा-भावेऽवणिहितं इत्यर्थः, इमो समुदायत्थो उवक्कमाधिकारे जोयेज्जा, सा उवणिहिता अनया अधिकारः इत्यर्थः, जा पुण अणेगधा अत्थपरूवणाए परूवितावि इमस्स अज्झयणस्स णो योइया ण उवणिहियभावे दंसिता आणुपुव्वी सा अणोवणिहिया अध्ययने अनधिकार इत्यर्थः, उवणिहिया ठप्पात्ति चिट्ठतु ताव उवणिहिया, अणोवणिहियं ताव वक्खाणेति, तस्स पिट्ठतो उवणिहिया भण्णिहिति, किं पुण वक्कमकरणं?, उच्यते, अणोवणिहिया सह(विसेस)त्था, तत्थ जो सामण्णत्थो सो परूवितो चेव लब्भातित्तिकाउं अतो उक्कमो कतो, सा य अणोवणिहिया दव्वट्ठियणतमतेणं दुविधा, ते य णया सत्त णेगमादी एवंभूतपज्जंता, ते दुविधा कता-दव्व-ठितो पज्जवठितो य, आदिमा तिण्णि दव्वठितो, सेसा पज्जवठितो, पुणो दव्वठितो दुविधो--अविसुद्धो विसुद्धो य, अविसुद्धो णेगमववहारा दव्वमिच्छंति किण्हादिअणेगविहगुणावहितं तिकालभवंति अणेगभेदाठितं णिच्चमणिच्चं च तम्हा ते अविसुद्धो दव्वाठितो, एतेहिंतो विसुद्धतरो दव्वठितो संगहः, कहमुच्यते--जम्हा संगहो विसेसभेदं परमाणुआदियं एगं चेव दव्वमिच्छते, कण्हादिअणेगगुणपरमाणुत्तसामण्णतणतो, एवमादि संगहो विसुद्धतरो, एत्थ अविसुद्धदव्वेहि य णेगमववहारमतेण अणोवणि-

॥ २१ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [७१-८१] गाथा ||८||

दीप अनुक्रम [८१-९२]

हिया पंचविधा ‘ अत्थपदपरूवणे ’ त्यादि (*१३--५३) अर्थ्यत इत्यर्थः अर्थः तेन युक्तं पदं अर्थपदं तस्स परूवणा कथितव्वेत्यादि, तेसिं चेव अत्थपदाण विगप्पकरणं भंगो, तेसिं जहासंभवं उच्चारणा उक्कित्तणा, भंगसमुत्कीर्तने जो भंगो जेण अत्थपदेण जेऽहिया अन्नपदेहि भवंति तं तहा दंसेइत्तिभंगोवदंसणा भण्णति, अणुपुव्विमादियाण पयत्थाण सट्ठाणपरट्ठाणावतारगवेसणमग्गो जो सो समोतारो, अणुपुव्विमादियाण चेव दव्वाण संतपदादिएहि अणेगधा जं अत्थाणुसरणं तं अणुगमोत्ति, इमा अत्थपदपरूवणा, ‘तिपदेसिते अणुपुव्वी’ इत्यादि, तिपदेसो खंधो आणुपुव्वी जाता, तस्स अणुत्ति--पच्छाभागो पुव्वत्ति-आदिभागो अत्थओ मज्झभागो य, अहवा इतिसद्दातो मज्झभागो पुव्वट्ठो, एवं चउप्पदेसादयोवि उवउज्ज वत्तव्वा, परमाणुत्तणतो परमाणू तस्स किण्हादिभावेहिं पूरणगलणत्तणतो य पुग्गलता, सो अणाणुपुव्वी भन्नति, जतो तस्स ण अणुभागो पुव्वभागो वा अण्णो परमाणू तेण सो अणाणुपुव्वी, दो पदेसा जस्स खंधस्स सो दुपदेसो, अत्थपदपरूवणाए अवत्तव्वो भाणितव्वो, जतो तस्स पुव्वभागो पच्छभागो य अत्थि, ण मज्झभागो, सो एवंविहरूवेण ण आणुपुव्वीअणाणुपुव्विलक्खणेसु अवतरतित्ति द्विप्रदेशिकः अवक्तव्यतां प्राप्तः, एतदेव अणुपुव्विमादी त्रितयं बहुवचनेन वक्तव्यं, अनंतद्रव्यसंभवात्, चोदक आह--किं एते अत्थपदा उक्कमेणं कता, जुत्तं कमेणं अणाणुपुव्वी अव्वत्तव्वतं अणुपुव्वी य काउं ?, आचार्याह-अणाणुपुव्वीवि वक्खाणंगंति ण दोसो, किं चान्यत्-आनुपुव्वीद्रव्यबहुत्वज्ञापनार्थं स्थानबहुत्वज्ञापनार्थं च पूर्वनिर्देशो, ततोऽल्पतरद्रव्यज्ञापनार्थं अणानुपुव्वी ततोऽल्पतरावक्तव्यज्ञापनार्थमवक्तव्य इत्यदोषः, गता अत्थपदपरूवणा । इदाणिं भंगकित्तणा-तत्थ तिण्हं अत्थपदाणं एगवयणेण तिन्नि, अणुपुव्वि अणाणुपुव्वीए य चतुभंगो, आणुपुव्वि अवत्तव्व ए य चतुभंगो, अणाणुपुव्वी अवत्तव्वए य चतुभंगो, आणुपुव्वि अणाणुपुव्वी

॥ २२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [७१-८१] गाथा ||८||

दीप अनुक्रम [८१-९२]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २३ ॥

अवत्तव्वए य अट्ठ भंगा, एवं एते सव्वे छव्वीसं भंगाः, स्याद् बुद्धिः-किमत्थं भंगोत्कीर्त्तनं ?, उच्यते, वक्तुरभिप्रेतार्थं १, प्रतिपर्यायं नयमतप्रदर्शनार्थं च, किंच-असंजुत्तं संजुत्तं वा समाणमसमाणं वा अण्णदव्वसंजोगं जह चेव वत्ता दव्वविवक्खं करेति तहेव वेंति णेगमववहारत्ति भंगसमुक्कित्तणा कता । इदाणिं भंगोवदंसणत्ति तिपदेसित्तेणं आणुपुव्वीत्ति भंगो, परमाणुपोग्गलेणं अणाणुपुव्वित्ति भंगो, दुपदेसितेणं अव्वत्तव्वेत्ति भंगो भवति, एवं बहुवयणेणवि तिण्णि भंगा भावेतव्वा, तधा तिपदेसिएण परमाणुपोग्गलेण य आणुपुव्विअणाणुपुव्वित्ति भंगो भवति, एवं सव्वे संजोगभंगा भावेतव्वा, चोदक आह-णणु अट्ठपयपरूवणाए त्रिप्रदेशात्मिका आनुपूर्वीत्यादि लब्धं भंगुक्कित्तणाए य भण्णति अणुपुव्वीत्यादि, आणुपुव्विग्रहणे य कते अवगतमेव भवति जधा तिपदेसिए ण अणाणुपुव्वित्ति भंगो, किं पुणो भंगोवदंसणाए भणाति जधा तिपदेसिता आणुपुव्वीत्यादि, आचार्य आह-सुणेहि जहा संहिताइछव्विधव्याख्यानलक्षणे पदत्थं भाणिऊणं पुणो तमेवत्थं सवित्थरं सुत्तफासियाए समासचालणापसिद्धीहि भणंतस्स ण दोसो तधा इहंपि सु(यत्थे)पदपरूवणाए पदत्थमेत्ते उवदिट्ठा भंगसमुक्कित्तणे य हेतुविकले कते भंगोवदंसणाए सहेतुभंगोवदंसणे सवित्थरे ण दोसो भवति, सेसं कंठ्यं, गता भंगोवदंसणा। ‘ से किं तं समोतारे ’ इत्यादि, सम्यक् अवतारो समोतारो अर्थाविरोधेनेत्यर्थः, समसंख्यावतारो वा समोतारो, जधा एगपदेसितो एगपएसिए दुपदेसितो दुपएसिए तिपएसिओ तिपदेसिए एवमादि, समाभिधाणे वा उतारो जधा उरालत्तणतो ओरालियदव्वा सव्वे ओरालियवग्गणाते समोयरंति, तहा अणुपुव्विदव्वेसु चेव उयरंति, एवं सेसा सट्ठाणे भाणियव्वा, णो परट्ठाणेसुत्ति, गतो समोतारो । इयाणिं ‘ से किं तं अणुगमे’ त्यादि, अर्थानुगमनमनुगमः अनुरूपार्थगमनं वा अनुगमः अनुरूपं वाऽन्तस्यानुगमनाद्वा अनुगमः सूत्रार्थानुकूलगमनं वा अनुगमः, एवं नयेष्वपि वक्तव्यं, संतं-विज्जमानं पदं तस्स

आनुपूर्व्यधिकारः

॥ २३ ॥

अत्र अनुगमस्य वर्णनं आरभ्यते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [८२-८६] गाथा ॥८॥

दीप अनुक्रम [९३-९७]

अत्थकहणा परूवणा सा संतपदपरूवणा भन्नति, ते य अणुपुव्विमादिया, तथा अणुपुव्विमादियाणं दव्वाणं पमाणं वत्तव्वं, तेसिं चेव खेत्तकाला फुसणा य, तेसिं चेक्कदव्वाणं तब्भावअपरिच्चाएण ठितिकालो वोत्तव्वो, तदत्थत्तेण पुच्छणया अंतरं, आणुपुव्वि-दव्वा लोगस्स कतिभाए भावे य, सेसावि त दव्वा कतरंमि भावे, आणुपुव्विअणाणुपुव्वीअव्वत्तव्वाण य परोप्परं अप्पबहुत्तणं दट्ठव्वं, सवित्थरं सुत्तेणेव भण्णति, ' आणुपुव्विदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ' त्ति पुच्छा, पन्नवग आह-कुतः संशयः ?, भण्णति-दुहाभिहाणं सत्थमितरं घडं खपुप्फादी । दिट्ठमतो आरेका किमत्थि णत्थित्ति पुच्छाए ॥ १ ॥ नत्थित्ति गुरूवयणं, अभिहाणं सत्थयं जतो सव्वं । अभिहाणं खरमातियतं पत्थुते, सो उ सद्दत्थो ॥ २ ॥ तेसिं इमं दव्वप्पमाणं, किं संखेज्ज ' इत्यादि (८२-६०) पुच्छा, उत्तरं च सुत्तसिद्धं, तिण्णिवि अणंता जिणवयणे दिट्ठत्तप्पमाणातो केवलणाणिवयणयत्तणओ संदिट्ठियहेतुतो णेयव्वाणि, ताणि खेत्तओगाहे ' लोगस्स किं संखेज्जतिभागो ' इत्यादि (८३-६०) पंचविधा पुच्छा सुत्तसिद्धा, उत्तरं ' एगं दव्वं पडुच्चे ' त्यादि, आणुपुव्विदव्वविसेसा परिणतिविसेसेण अप्पत्तमहत्तणतो य जधाविभत्तखेत्तभागे पूरेंति, पुच्छासमं चेव उत्तरं वाच्यं, किं चान्यत्-जम्हा एक्केके आगासपदेसे सुहुमपरिणामपरिणता अणंतआणुपुव्विदव्वा संति, णाणा-दव्वमग्गणाए नियमा सव्वलोए, ण सेसविभागेसुत्ति, अणाणुपुव्विएगदव्वे पंच पुच्छा, उत्तरं-लोगस्स असंखेज्जइभागे एगपदेसा-वगाहणत्तणतो, ण सेसविभागेसु, अणाणुपुव्विदव्वे पूर्ववत्, एवं अव्वत्तव्वगदव्वावि, णवरं दुपदेसावगाहणत्तणतो एगपदेसाव-गाहणत्तणतो वा । इदाणिं फुसणा ' किं संखेज्जतिभागे ' इत्यादि (८४-६२) सव्वं सुत्तसिद्धं, णवरं अवगाहणाणंतरठिते छद्दिसिं पदेसे फुसतित्ति भावेतव्वं, ' कालतो केवच्चिरं ' इत्यादि [८५-६३] आणुपुव्विदव्वाण आनुपूर्वित्वोत्पादप्रथमसम-

॥ २४ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [८२-८६] गाथा ॥८॥

दीप अनुक्रम [९३-९७]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २५ ॥

यारब्भं संताणतो अव्वोच्छिन्नं जहण्णुक्कोसतो कालमग्गणा एगाणेगदव्वेसु समयादि यावत्परा असंख्येयं स्थितिः, सेसं सुत्तसिद्धं, अणाणुपुव्विअव्वत्तव्वेसु एवं चेव, ' केवतियं कालं अंतर ' इत्यादि [८६-६३] आणुपुव्विदव्वाणं अंतरंति जं तिपदेसादि आदिट्ठं पुव्वदव्वत्तणं पाविस्संति, उत्तरं सुत्तसिद्धं, एगादिसमयंतरं विस्ससपरिणामहेतुतो वाच्यं, अणंतकालंतरं पुण दव्वाणेगदुपदेसिगादि जाव अणंतपदेसुत्तरो खंधो ताव अणंतट्ठाणहेतुत्तणतो भाणियव्वं, णाणादव्वेहि लोगस्स असुन्नत्तणतो णत्थि अंतरं, अणाणुपुव्विदव्वाणं अंतरं उक्कोसतो असंखेज्जं कालं, कहं ?, उच्यते, अणाणुपुव्विदव्वेण अवत्तव्वगदव्वेण वा आणुपुव्विदव्वेण वा सह संजुत्तं उक्कोसठितिं होतुं ठितिअंते ततो भिण्णं तं णियमा परमाणू चेव भवति, अण्णदव्वाण चोक्खत्तणतो, एवं उक्कोसेण असंखेज्जो अंतरकालो भणितो, सेसं सुत्तसिद्धं, अव्वत्तव्वतंदव्वाणवि अंतरं उक्कोसेण अंतर(अणंत)कालो, कहं ? उच्यते, जं आदिट्ठं अव्वत्तव्वगदव्वं तं जया तद्दव्वत्तेण विगतं ततो तस्स परमाणवो अण्णअव्वत्तव्वगदव्वेहिं आणुपुव्विदव्वेहिं अणाणुपुव्विदव्वेहिं संजुत्ता जहण्णमज्झिमुक्कोससंठितीहि य अणंतकालं परोप्परतो विसंघयाहेतुं पुणो ते चेव दोवि आदिट्ठअव्वत्तव्वगदव्वपरमाणवो विस्ससापरिणामहेतुतो परोप्परं संबद्धा पुव्वसमं चेव अव्वत्तव्वगदव्वत्तं लभंति, एवं तेसिं अंतरं अणंतकालो दिट्ठो, ' आणुपुव्विदव्वाइं सेसगदव्वाणं कतिभागे ' (८७-६५) इत्यादि, सेसगदव्वातिं-अणाणुपुव्वीदव्वा अव्वत्तगदव्वा य दोवि एक्को रासी कतो, ततो पुच्छा चउरो, एत्थ णिदरिसणं इमं--संखेज्जतिभागो पंच, पंचभागे सतस्स वीसा भवंति, सतस्स असंखेज्जइभागो दस, दसभागे दस चेव भवंति, सतस्स संखेज्जेसु भागेसु दोमाइगेसु पंचभागे पुव्वुत्ता वीसादी भवंति, सतस्स असंखेज्जेसु भागेसु अट्ठ दसभागेसु असीती भवति, चोदक आह--णणु एतेण णिदंसणेण सेसगद-

आनुपूर्व्यधिकारः

॥ २५ ॥

प्रत सूत्रांक [८७-८९] गाथा ॥८..॥

दीप अनुक्रम [९८-१००]

व्वाणआणुपुव्विदव्वा थोवयरा भवंति, जतो सयस्स असीती थोवतराचि, आचार्य आह-ण मता तिन्निचि तब्भागसमा ते दव्वा, तह गच्छेसु ते समा मया भण्णई, सेसदव्वा असंखेज्जभागे एव भवंतीत्यर्थः, अणाणुपुव्विदव्वा अव्वत्तव्वगदव्वा य असंखेज्जतिभागे भवंति, सेसं सुत्तसिद्धं, 'कतरंमि भावे' इत्यादि (८८--९६)भवनं भूतिर्वा भावः, औदयिकादिस्स पंचधा भण्णति, कश्च एत्थ ?, परिणतिलक्खणो पारिणामिको, सो दुविधो--सादि अणादी य, अभिंदधणुमादिएसु सादि सो, धम्मादीएसु अणादी, आणुपुव्वि-मादिया तिण्णिवि दव्वविकप्पा सातिपरिणामिते भावे भवंति, सेसा उस्सण्णं जीवसंभवा भावा तेण तेसिं पडिसेधो, सेसं सुत्तसिद्धं । इदाणिं आणुपुव्विमादियाणं दव्वट्ठपदेसट्ठादिएहिं अप्पबहुयत्तणाचिंता, तत्थ दव्वट्ठया एगाणेगपुग्गलदव्वेसु जधा-संभवतो पदेसगुणपज्जयाधारया जा सा दव्वट्ठता भण्णति, पदेसट्ठया पुण तेसु चेव दव्वेसु प्रतिपदेसं गुणपज्जायाधारया जा सा पदेसट्ठया, उभतरूवा उभतट्ठया, एतेहिं आणुपुव्विमादियाण दव्वाण अप्पबहुसंखा सा सुत्तसिद्धा, णवरं अव्वत्तव्वगदव्वा दव्वतो सव्वत्थोवा, कहं ?, उच्यते, संघातभेदा उप्पत्तिहेतुअप्पत्तणतो, तेहिंतो अणाणुपुव्विदव्वा विसेसाहिया, कहं ?, उच्यते, बहुतरा-सयउप्पत्तिहेतुत्तणतो, तेहिंतो आणुपुव्विदव्वा संखेज्जगुणा, कहं ?, उच्यते, तिगादिएगपदेसुत्तरवुड्ढिदव्वठाणबहुत्तणतो संघात-भेददव्वबहुत्तणतो, एत्थं भावणविही इमा-एगदुतिचतुपदेशे य ठविता १--२--३--४, एत्थ संघातभेदो पंच अवत्तव्वगा दव्वा भवंति, दस अणाणुपुव्विदव्वा, भेदतो भवंति संघाततो वा, एगकाले तिन्नि अणुपुव्विदव्वा भवंति, क्रमेण वा एगदुगादिसंजोग-भेदतो एत्थ चउदस आणुपुव्विदव्वा भवंति, एवं पंचपदेसादीसुवि भावेयव्वं, सव्वण्णुवयणयोगा अप्पाबहुयचिंता सद्धयत्ति, सेसं कंठ्यं, इदाणिं पदेसट्ठताए अप्पबहुत्वं, तत्थ पदेसट्ठताए सव्वत्थोवा अणाणुपुव्विदव्वा, कहं ?, उच्यते, तेसिं अणाणुपुव्विदव्वाणं

॥ २६ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [८७-८९] गाथा ॥८..॥

दीप अनुक्रम [९८-१००]

अपदेसट्ठताए--अपदेसहेतुत्तणत्तोत्ति वुत्तं भवति, चोदक आह--पएसट्ठताए थोवत्ति भणिउं पुणो अपदेसट्ठयं भणह णणु विरुद्धं, आचार्य आह--जं अणाणुपुव्विदव्वं तं णियमा एकप्रदेशात्मकं, ण तस्स अण्णो दव्वरूवो पदेसो अत्थित्ति अपदेसट्ठता भणिया, अत्र अपएसट्ठया पदेसट्ठता य ण तत्थ परोप्परं विरुद्धत्था इति, अव्वत्तव्वगदव्वा अणाणुपुव्विदव्वेहिंतो पदेसट्ठताएत्ति प्रदेशादेशाच्चेह सप्रदेशहेतुत्तणतो वा विसिट्ठा विसेसाहिता भवंति, एत्थ उदाहरणं--बुद्धीए संतमेत्ता अव्वत्तव्वगदव्वा कता, अणाणुपुव्विदव्वा पुण दिवड्ढसतमेत्ता कता, एवं द्रव्यत्वेन विसिष्टा विशेषाधिका भवंति, पदेसत्तेणं पुण अणाणुपुव्विदव्वा अप्पणो दव्वट्ठताए तुल्ला चेव, अपदेसत्तणतो, अव्वत्तव्वगदव्वा दुअणुपदेसत्तणपदेसत्तणतो विसिट्ठा विसेसाधिका इदाणिं दुसतमेत्ता भवंति, तेहिंतो अणुपुव्विदव्वा पदेसट्ठताए अणंतगुणा भणिता, कहं ?. उच्यते, आणुपुव्विदव्वाणट्ठाणबहुत्ततो तेसिं च संखासंखमणंतपदेसत्तणतो य, इदाणिं उभतट्ठता, सुत्तसिद्धा उवयुज्जिउं भाणितव्वा, गता णेगमववहाराणं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी । इदाणिं संगहणयमएणं अणोवणिधिया दव्वाणुपुव्वी भण्णति, सा पंचविधा ' अत्थपदपरूवणे ' त्यादि (९०--६९) संगहितपिंडितत्थं संगहणतो इच्छइत्तिकाउं भवे तिपदेसा खंधा तिपदेसाविसेसत्तणतो एका तिपएसाणुपुव्वी, एवं चउप्पदेसादयोवि भाणितव्वा, पुणो आणुपुव्वी अवि एका सव्वा तिचउप्पदेसादिया एकअविसिट्ठअणुपुव्विए इक्कं इच्छइत्ति, अणाणुपुव्वि अव्वत्तव्वा ताइंपि, भंगसमुक्कित्तणाभंगोवदंसणाए वा सत्त भंगा कित्तिया पदंसेइ य, सेसो अक्खरत्थो जधा णेगमववहाराणं तहा वत्तव्वो, संगहस्स समोयारो सट्ठाणे पूर्ववत् कत्तव्वो, चोदक आह--जं सट्ठाणे समोदरंतीत्ति भणह किं तं ?, आयभावो सट्ठाणं, तो आतभावट्ठत्तणे समोयारो भवति, अथ परदव्वं तो अणुपुव्विदव्वस्सा अणाणुपुव्विअवत्तव्वगदव्वावि मुत्तित्तवण्णादिएहिं समभावत्तणतो सट्ठाणं भवि-

॥ २७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [९०-९७] गाथा ॥९॥

दीप अनुक्रम [१०१-११०]

स्सति, एवं चोदिए गुरू भणति-सव्वदव्वा आतभावेसु वण्णिज्जमाणा आतभावसमोयारा भवंति, जतो जीवदव्वा जीवभावेसु समोयारेज्जंति णो अजीवभावेसु, अजीवदव्वा अजीवभावेसु न जीवभावेस्वित्यर्थः, परं दव्वंपि समप्पंते समत्तणत्तणतो सट्ठाणे चेप्पतित्ति ण दोसो, इह पुण अधिकारे आणुपुव्विभावविसेसत्तणतो आणुपुव्वित्ति दव्वपक्खे समोतरतित्ति सट्ठाणं भणितं, एवं अणाणुपुव्विअव्वत्तव्वेसुवि सट्ठाणे समोतारो भाणितव्वो इति । इदाणिं अणुगमे,—संतपदपरूवणादितो अट्ठविधो, कहं ?, उच्यते ? भागद्दारप्पबहुआण दोण्हवि एगत्तणतो, तत्थ संतपदं पूर्ववत्, संगहस्स दव्वप्पमाणं णियमा एक्को रासी, चोदक आह-दव्वप्पमाणे पुट्ठे असिलिट्ठमुत्तरं, न, को रासित्ति पमाणं कथितं, जतो बहूणं सालिवीयाणं एगो रासी भण्णति, एवं बहूणं आणुपुव्विदव्वाणं एक्को रासी भविस्सति, बहू पुण दव्वा, आचार्य आह-एकराशिगहणेणं बहूसुवि आणुपुव्विदव्वेसु एग एव आणुपुव्विभावं दंसिति जधा बहुसु कठिणगुणत्तं, अहवा जधा बहू परमाणवो खंधभावपरिणता एगखंधो भण्णति एवं बहू आणुपुव्विदव्वा आणुपुव्विभावपरिणतत्तातो एगाणुपुव्वितं, एगत्तणतो य एगो रासित्ति भणितं ण दोसो, संगहखेत्तावगाहमग्गणाए आणुपुव्विमादिदव्वा सेसदव्वाणं नियमा तिभागेत्ति, चोदक आह--णणु आदीए अव्वत्तव्वगेहिंतो अणाणुपुव्वी विसेसाहिया तेहिंतो आणुपुव्वि असंखेज्जगुणा, आचार्य आह--तं णेगमववहाराभिप्पायतो, इमं संगहाभिप्पाएणं भणितं, किं चान्यत्-जहा एगस्स रन्नो तयो पुत्ता, तेसिं अस्से मग्गंताण एक्कस्स एक्को आसो दिण्णो सो छ सहस्सं लभति, बितियस्स दो आसा दिण्णा, ते तिण्ण तिण्णि सहस्से लभंति, ततियस्स बारस आसा दिण्णा, ते पंच पंच सते लभंति, विसमावि ते मुल्लभावं पडुच्च तिभागे पडिता भवंति, एवं अणुपुव्विट्ठिया विसमावि दव्वा अणुपुव्वीअणाणुपुव्वीअव्वत्तव्वगत्तिभागसमत्तणतो णियमा तिभागोत्ति भणियं ण दोसो,

॥ २८ ॥

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ २९ ॥

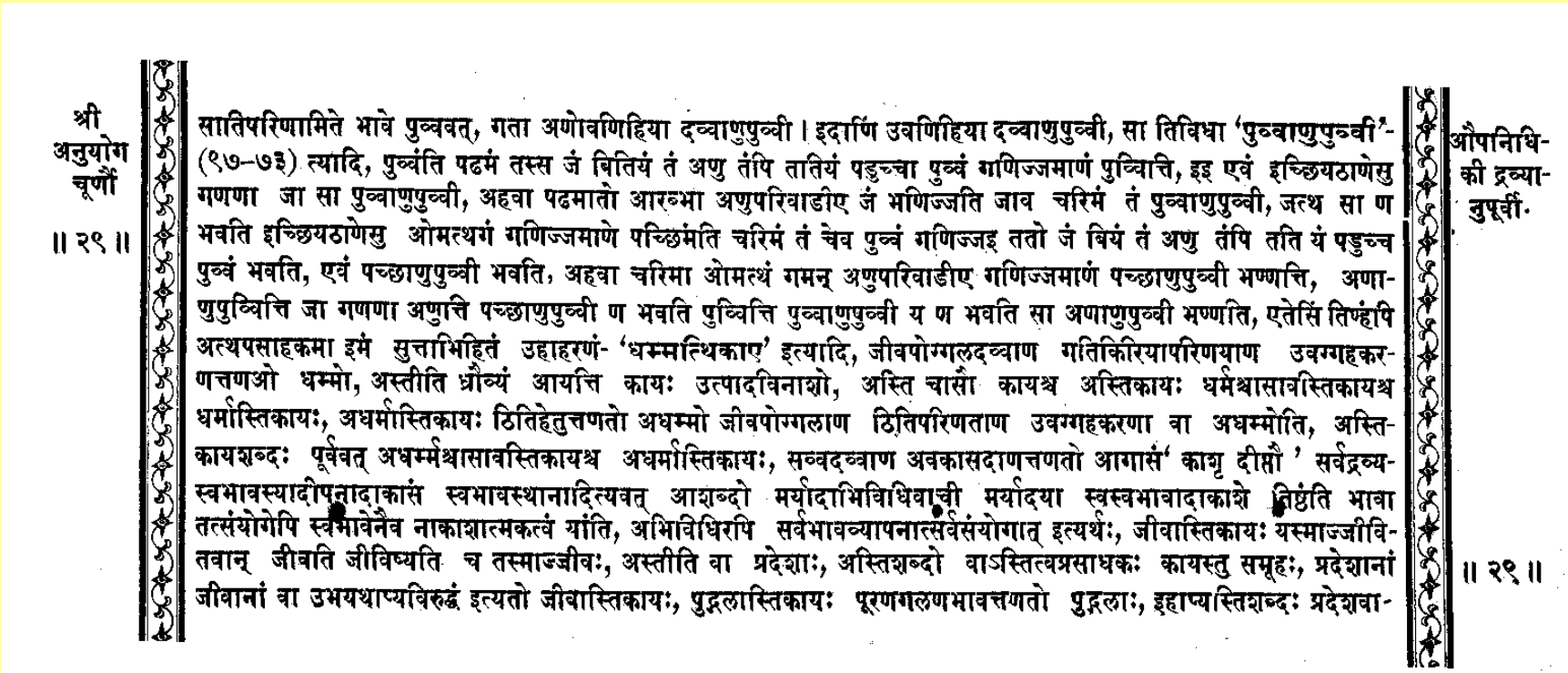

सातिपरिणामिते भावे पुव्ववत्, गता अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी। इदाणिं उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी, सा तिविधा 'पुव्वाणुपुव्वी'- (९७-७३) त्यादि, पुव्वंति पढमं तस्स जं बितियं तं अणु तंपि तातियं पडुच्चा पुव्वं गणिज्जमाणं पुव्वित्ति, इइ एवं इच्छियठाणेसु गणणा जा सा पुव्वाणुपुव्वी, अहवा पढमातो आरब्भा अणुपरिवाडीए जं भणिज्जति जाव चरिमं तं पुव्वाणुपुव्वी, जत्थ सा ण भवति इच्छियठाणेसु ओमत्थगं गणिज्जमाणे पच्छिमंति चरिमं तं चेव पुव्वं गणिज्जइ ततो जं बियं तं अणु तंपि तति यं पडुच्च पुव्वं भवति, एवं पच्छाणुपुव्वी भवति, अहवा चरिमा ओमत्थं गमन् अणुपरिवाडीए गणिज्जमाणं पच्छाणुपुव्वी भण्णत्ति, अणाणुपुव्वित्ति जा गणणा अणुत्ति पच्छाणुपुव्वी ण भवति पुव्वित्ति पुव्वाणुपुव्वी य ण भवति सा अणाणुपुव्वी भण्णति, एतेसिं तिण्हंपि अत्थपसाहकमा इमं सुत्ताभिहितं उहाहरणं- 'धम्मत्थिकाए' इत्यादि, जीवपोग्गलदव्वाण गतिकिरियापरिणयाण उवग्गहकरणत्तणओ धम्मो, अस्तीति ध्रौव्यं आयत्ति कायः उत्पादविनाशो, अस्ति चासौ कायश्च अस्तिकायः धर्मश्चासावस्तिकायश्च धर्मास्तिकायः, अधर्मास्तिकायः ठितिहेतुत्तणतो अधम्मो जीवपोग्गलाण ठितिपरिणताण उवग्गहकरणा वा अधम्मोति, अस्तिकायशब्दः पूर्ववत् अधर्म्मश्चासावस्तिकायश्च अधर्मास्तिकायः, सव्वदव्वाण अवकासदाणत्तणतो आगासं' काशृ दीप्तौ ' सर्वद्रव्यस्वभावस्यादीपनादाकासं स्वभावस्थानादित्यवत् आशब्दो मर्यादाभिविधिवाची मर्यादया स्वस्वभावादाकाशे तिष्ठंति भावा तत्संयोगेपि स्वभावेनैव नाकाशात्मकत्वं यांति, अभिविधिरपि सर्वभावव्यापनात्सर्वसंयोगात् इत्यर्थः, जीवास्तिकायः यस्माज्जीवितवान् जीवति जीविष्यति च तस्माज्जीवः, अस्तीति वा प्रदेशाः, अस्तिशब्दो वाऽस्तित्वप्रसाधकः कायस्तु समूहः, प्रदेशानां जीवानां वा उभयथाप्यविरुद्धं इत्यतो जीवास्तिकायः, पुद्गलास्तिकायः पूरणगलणभावत्तणतो पुद्गलाः, इहाप्यस्तिशब्दः प्रदेशवा-

औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी·

॥ २९ ॥

अथ औपनिधिकी-द्रव्यानुपूर्वी वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [९०-९७] गाथा ||९||

दीप अनुक्रम [१०१-११०]

चकोऽस्तित्वे वा कायशब्दोऽप्यत्र समूहवचनः, समूहः प्रदेशानां सोऽवयवद्रव्यसमूहवचनो वा। अद्धासमयेत्ति अद्धा इति कालः समूहवचनतः तद्विसेसः समयं, अहवा आदिच्चादिधावणकिरिया चेव परिमाणविसिट्ठावत्थगता अद्धा एवं काल उभयथावि तस्स समयो, सो य णिच्छयणताभिप्पायतो एक एव वत्तमानसमयः तस्स एगत्तणतो खंधदेसादिकायकप्पणा णत्थि, तीताणागता य विणट्ठाणुप्पन्नत्तणतो अभावो, चोदक आह--णणु आवलिकादिग्रहणं, आचार्य आह--संववहारस्स हेउं, ततः जहा अण्णदव्वाण खंधभावो तह कालस्य न भवतीत्यर्थः। शिष्य आह--किं कारणं सव्वसुत्तेसु धम्मादिओ कमो ?, आचार्याह--सव्वकिरियाधारत्तणओ मंगलाभिधाणतो य पुव्वं धम्मत्थिकायं, तव्विपक्खत्तणतो तदंते अधम्मो किओ, ते दोऽवि लोगागासखेत्तोवलक्खणं सेसमलोगोत्ति तेण तेसंते आगासं, किं च--पुग्गलजीवाधारणत्तणतो तेसिं पुव्वमागासं, आगासे णियमा पोग्गलाऽचेयणत्तणतो बहुत्तणतो य आगासाणंतरं पुग्गला, सव्वत्थिकाया जीवे बद्धा जतो तेणंते जीवात्थिकायो, जीवाजीवपज्जायत्तणतो कालस्स णियमा आहेयत्तणतो य अंते अद्धासमय इति, गता पुव्वाणुपुव्वी। इदाणिं पच्छाणुपुव्वी, ‘ अद्धासमए ’ इत्यादि सूत्रं कंठं। इदाणिं अणाणुपुव्वी--‘ एतेसिं चेव ’ इत्यादि, एतेसिंति--धम्मादियाणं चसद्दो अत्थविसेससमुच्चये एवसद्दो अवधारणे, एक्को आदि जाते गणणसेढीए एक्को य उत्तरं जाए गणणसेढीए ताए एगादियाए एगुत्तराए पढमातो बितिए गणणट्ठाणे एक्कोत्तरं एवं बितियातो ततिते एक्कोत्तरं ततियातो चउत्थे एक्को उत्तरं चउत्थातो पंचमे एक्को उत्तरं पंचमातो छट्ठे एक्को उत्तरं, एवं एगुत्तरेण ताव गती जाव छक्को गच्छोत्ति-समूहो सेढित्ति--सरिसाविच्चयट्ठंताण पंती, एयाए छगच्छगताए सेढीए अण्णोण्णब्भासो--गुणणा पुव्वाणुपुव्वीए पच्छाणुपुव्वीए वा अणाणुपुव्वीहि वा जहेव गुणितं तहेव सत्त सता वीसाहीया भवंति, ते पढमंतिमहीणा अट्ठारसुत्तरा सत्त-

॥ ३० ॥

अत्र अनानुपूर्वी वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [९०-९७] गाथा ||९||

दीप अनुक्रम [१०१-११०]

सया अणाणुपुव्वीण भवंति, तेसिं आणणोवायो इमो-' पुव्वाणुपुव्विहेट्ठा ' तधा ' पुव्वाणुपुव्वि हेट्ठा समयाभेदेण कुण जहाजेट्ठं । उवरिमतुल्लं पुरओ णसेज्ज पुव्वक्कमो सेसे ॥ १ ॥ पुव्वाणुपुव्वित्ति व्याख्या पूर्ववत्, हेट्ठित्ति--पढमाए पुव्वाणुपुव्विलताए, अहो भंगरयणं बितियादिलतासु, समया इति इह अणाणुपुव्विभंगरयणव्यवस्था समयो तं अभिंदमाणोत्ति तं भंगरयणअवस्थं अविणासेमाणो, तस्स य विणासो जति सरिसंकं एगलताए ठवेति, जति व ततिय लक्खणातो उवक्कमेणं पट्ठवेति ता भिण्णो समयो, तं भेदं अकुव्वमाणो, कुणसु ' जधाजेट्ठं ' ति जो जस्स आदीए स तस्स जेट्ठो भवति, जहा दुगस्स एगो जेट्ठो, अणुजेट्ठो तिगस्स एक्को, जेट्ठाणुजेट्ठो जहा चउक्कस्स एक्को, अतो परं सव्वे जेट्ठाणुजेट्ठा भाणितव्वा, एतेसिं अण्णतरे ठविते पुरतोत्ति--अग्गतो उवरिमे अंके ठवेत्ता जेट्ठाति अंकतो पुव्वक्कमेण ट्ठवेति, जो जस्स अणंतरो परंपरो वा पुव्वो अक्खो स पुव्वं ठवेज्ज अतो पुव्वक्कमो भणतीत्यर्थः, अहवा अणाणुपुव्वीणमायरणविधी--पुव्वाणुपुव्वीइच्छित जति वण्णा ते परोप्परब्भत्था । अंतहियभागलद्धा वोच्चत्थंकाण ठाणंते ॥१॥ आदित्थेसुवि एवं जे जत्थ ठिता य ते तु वज्जेज्जा । सेसेहि य वोच्चत्थं कमुक्कमा पूर सरिसेहिं ॥२॥ भागाहितलद्धठवणा दुगादि एगुत्तरेहिं अब्भत्था । सरिसंकरयणठाणा तिगादियाणं मुणेयव्वा ॥ ३ ॥ पढमदुगट्ठाणेसु जेट्ठादितिगेण अत्तदिट्ठंतो । अणुलोमं पडिलोमं पूरे सेसेहि उवउत्तो ॥४॥ 'अहवा तिविहा दव्वाणुपुव्वी' त्यादि (९८--७७) परमाणुमादिसु तिविहावि सुत्तसिद्धा, सिस्सो आह-किं पत्तेयं पुग्गलेसु तिविहा उवणिही दंसिता ण धम्मादिएसु ?, आचार्याह--धम्माधम्मागासाण पत्तेयमेगदव्वत्तणतो अणुपुव्विमादि ण घडति, जीवट्ठिकाएवि सव्वजीवाण तुल्लपदेसत्तणतो एगादिएगुत्तरवुड्ढी णत्थित्ति, अहवाऽवगाहेण विसेसो होज्ज, तत्थवि आणुपुव्वी चेव, णो अणाणुपुव्वीअवत्तव्वगाइं, ठितिकालस्सवि एगसमयत्तणत्ताभावतो नोक्ता इत्यर्थः, पुग्गलेसु

प्रत सूत्रांक [९८-१०२] गाथा ||१०-११||

दीप अनुक्रम [१११-११९]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ३२ ॥

क्षेत्रानुपूर्वी

एगादिएगुत्तरदव्वट्ठाणमणंतं संभवइत्ति दर्शनार्थं प्रत्येकमुक्ता इति । गता दव्वाणुपुव्वी, दव्वावगाथोवलक्खितं खेत्तं खेत्ताणुपुव्वी, अहवा अवगाहवगाहीण अण्णोण्णसिद्धिहेतुत्तणेवि आगासस्सऽवगाहलक्खणत्तणतो खेत्ताणुपुव्वी भण्णति, अहवा दव्वाण चेव खेत्तावगाहमग्गणा खेत्ताणुपुव्वी, सो य अवगाधो दव्वाण इमेण विहिणा-अणाणुपुव्वीदव्वाण णियमा एगपदेसावगाहो, अव्वत्तव्वगदव्वाणं पुण एगपदेसावगाहो दुपएसावगाहो वा, तिपदेसादीया पुण जहन्नतो एगपदेसे उक्कोसेणं पुण जो खंधो जत्तिएहिं परमाणूहिं णिरुप्यते सो तत्तिएहिं चेव पदेसेहि अवगाहति, एवं जाव संखासंखपदेसो, अणंतपदेसा खंधा एगपदेसारद्धा एगपदेसुत्तरवुड्ढीए उक्कोसतो जाव असंखेज्जपदेसोगाढा भवंति, लोगागासखेत्तावगाहणत्तणतो, नानन्तप्रदेशावगाढा इत्यर्थः, एवं खेत्ताणुपुव्विसमासत्थे दंसिते इदाणिं संतदारखेत्ताणुपुव्वी भन्नति—दुविधा उवणिही अणोवणिहिकेत्यादि, एता दोवि सभेदा जधा दव्वाणुपुव्वीए तहा खेत्ताभिलावेण सव्वं भणितव्वं, पमाणे विसेसो, णो संखेज्जा ण अणंता असंखेज्जा तिन्निवि भाणितव्वा, दव्वाण अवगाहखेत्तासंखेज्जत्तणतो सरिसावगाहणाण एगत्तणतो, खेत्तदारे सुत्तं-' एगं दव्वं पडुच्च देसूणे बा लोए होज्ज' त्ति, कहं ?, उच्यते, अणाणुपुव्वीपदेसेण अवत्तव्वपदेसेहि य दोहि ऊणो लोओ देसूणो भवति, सेसखेत्तप्पदेसोगाढं वा दव्वं उक्कोसतो खेत्ताणुपुव्वी भण्णति, चोदक आह—जति दव्वाणुपुव्वीए एगं दव्वं पडुच्चा सव्वलोगावगाढं खेत्ताणुपुव्वीए कहं देसूणो लोगेत्ति णणु विरुद्धं, अत्रोच्यते, उक्तं पूर्वमुनिभिः-' महखंधापुव्वी अव्वत्तव्वगअणणुपुव्विदव्वाइं । जंदेसोगाढाइं तद्देसेणं स लोगूणो ॥ १ ॥ किं च—अचित्तमहाखंधेण पूरिएवि लोगे देसपदेसादिदव्वकरणतो देसूणो भण्णति, जहा अजीवपन्नवणाए भणितं ' धम्मत्थिकाए धम्मात्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसे, एवं अधम्मागासपुग्गलेसुऽवि' जधा एतेसु देसपदेसपरिकप्प- ॥ ३२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [९८-१०२] गाथा ॥१०-११॥

दीप अनुक्रम [१११-११९]

णाए धम्मादयो तदणा दिट्ठा, एवं विभागदव्वादेसतो अचित्तमहाखंधावगाहो तउणोत्ति देसूणो लोगो, ण दोसो, अहवा उग्ग-होत्ति वा अवगाहोत्ति वा एगट्ठं, एगावगाहठिताणवि एत्थावगाहकालभेदयो अप्पत्तराणुभावत्तणतो वा उग्गहपाहण्णता दिट्ठा, जधा उग्गहसुते देविंदोग्गहादियाणं जाव साधम्मिउग्गहो, एतेसिं हेट्ठिल्ला जे पुरिल्ला ते उवरिल्लेहिंति-पच्छिमेहिं बाहियत्ति-पीडिया पाहण्णंति-प्रधानं अवग्रहात्मस्वभावं न भजंत इत्यर्थः, एवं अचित्तमहाखंधेगदव्वस्स सव्वलोगोवगाढस्सवि अणाणुपुव्वीअव्वत्त-व्वावगाहेहिं बाहितोत्ति तप्पदेसेसु पाहन्नं ण लभतित्ति, तदणो देसूणो भण्णति, ण दोसो, किं च--खेत्ताणुपुव्वीए अणुपुव्विअणा-णुपुव्विअव्वत्तव्वगदव्वविभागत्तणतो तेसिं परोप्परमवगाहो परिणती वा तेसिं खंधाभावे अवि, कथं ?, उच्यते, पदेसाण अचल-भावत्तणतो अपरिणामत्तणतो तेसिं भावप्पमाणणिच्चत्तणतो, अण्णोण्णपरिणामत्तणतो खंधभावपरिणामत्तणतो य, अतो एगं दव्वं पडुच्च सव्वलोगेत्ति, भणितं च--" कह णवि दविए चेवं खंधे सविवक्खता पिहत्तेणं । दव्वाणुपुव्वी ताइ परिणमई खंधभावेणं ॥ १ ॥ अण्णं वा बायरपरिणामेसु आणुपुव्विदव्वपरिणामो भवति णो अणाणुपुव्विअव्वत्तव्वदव्वत्ते, ण जतो बादरपरिणामो अखंधभावे चेव भवति, जे पुण सुहुमा ते तिविधा अत्थि, किं वा जदा अचित्तमहाखंधपरिणामो भवति तदा सव्वे ते सुहुमा आयभावपरिणामं अमुंचमाणा तप्परिणता भवंति, तस्स सुहुमत्तणतो सव्वगतत्तणतो य, कहमेवं ?, उच्यते, छायातपोद्योतबादर-पुद्गलपरिणामवत् अग्निसोध्यवस्त्राग्निपरिणतिवत् स्फटिककृष्णादिवर्णोपरंजितवत्, सीसो पुच्छति--दव्वाणुपुव्वीए एगदव्वं सव्व-लोगावगाढंति, कहं पुण एमहंतं एगदव्वं भवति ?, उच्यते, केवलिसमुग्घातवत्, उक्तं च--'केवलिउग्घातो इव समयट्ठकपूरए य तियलोगं। अचियत्तमहाखंधो वेला इव अतर नियतो य ॥१॥ अचित्तमहाखंधो सो लोगमेत्तो वीससापरिणामतो भवति, तिरियमसं-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [९८-१०२] गाथा ||१०-११||

दीप अनुक्रम [१११-११९]

खेज्जजोयणप्पमाणो संखेज्जजोयणप्पमाणे वा अणियतकालोवाई वट्टो उड्ढअधोचोद्दसरज्जुप्पमाणो सुहुमपोग्गलपरिणामपरिणतो पढमसमए दंडो भवति, बितिए कवाडं ततिए मत्थंकरणे चउत्थे लोगपूरणं, पंचमादिसमएसु पडिलोमसंथारे अट्ठमए सव्वहा तस्स खंधत्तविणासो, एस जलनिहिवेला इव लोगापूरणसंहारकरणठितो लोगपुग्गलाणुभावो सव्वण्णुवयणतो सद्धेतो इति, सेसं कंठ्यं । अणणुपुव्विदव्वाण एगं दव्वं पडुच्च असंखेज्जतिभागे होज्जत्ति एगपदेसावगाहत्तणतो, एवं अव्वत्तव्वगदव्वाणवि एगदुगपदेसावगाहत्तणतो,सेसं कंठ्यं । इदाणिं फुसणेति,खप्पदेसाण फुसणातो अणुपुव्विमादिदव्वत्तेणादिट्ठपदेसाण छद्दिसियमणंतरपदेसाण फुसणतो णिबद्धा, इह पुण सुत्ताभिप्पातो खप्पदेसावगाढदव्वस्स फुसणा भाणितव्वा, सा त दव्वाणुपुव्विसरिसा । कालो खप्पदेसावगाहठितिकालो चिंतिज्जइ, सोवि दव्वाणुपुव्विसरिसो चेव । खप्पदेसाण अंतरं नत्थि, अणादिकालसभावठियणिच्चत्तणतो, खप्पदेसावगाढदव्वाणं पुण अणंतकालमंतरं न भाणियव्वं, कहं?, जहा दव्वाणुपुव्वीए, कहं?, उच्यते, सव्वपोग्गलाण सव्वावगाहखेत्तस्स असंखेज्जत्तणतोवि ठिइकालासंखेज्जत्तणतो य, भावेऽवि जता खप्पदेसाणुपुव्वीमादि चिंतिज्जंति तया पन्नवगाभिप्पायतो अप्पसमबहुविकप्पकरणतो भावेयव्वं, अवगाहिदव्वेसु उण जधा दव्वाणुपुव्वीए तहा सव्वं णिव्विसेसं भाणितव्वं, नवरं जत्थ अणंतगुणं तत्थ असंखेज्जगुणं भावेतव्वं, अवगाहिखेत्तस्स असंखेज्जत्तणतो, गता णेगमववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी । इदाणिं संगहस्स अणोवणिहिता खेत्ताणुपुव्वी, सा य जहा दव्वाणुपुव्वीए जो य विसेसो सो सुत्तओ चेव नायव्वो । इयाणिं उवणिहिया, सा तिविहा ‘ अहोलोगे ’ त्यादि (१०३–८८), पंचत्थिकायमतितो लोगो, सो य आयामतो उड्ढमहट्ठितो, तस्स तिहा परिकप्पणा इमेणविधिणा-बहुसमभूमिभागे रयणप्पभामज्झभागे मेरुमज्झे। अट्ठपदेसो रुयगो, तस्सऽधोपतरातो अहे य णं नव जोयणसताणि जावं ता तिरि-

अत्र त्रिविधा औपनिधिकी

प्रत सूत्रांक [१०३-११४] गाथा ||१२-१५||

दीप अनुक्रम [१२०-१३७]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ३५ ॥

अधस्तिर्यगूर्ध्वलोकाः

यलोगो, ततो परेण अहेट्ठितत्तणतो अहोलोगो साहियसत्तरज्जुप्पमाणो, रुचतोवरिपतरातो उवरिहुत्तो नवजोयणसताणि जोतिसचक्कस्स उवरितलो ताव तिरियलोगो, ततो उड्डभागठितत्तणतो उड्डलोगो देसूणसत्तरज्जुप्पमाणो, अहउड्डलोगाण मज्झे अट्ठारसजोयणसतप्पमाणो तिरियभागट्ठियत्तणतो तिरियलोगो, 'अहव अहो परिणामे खेत्तणुभावेण जेण उस्सण्णं। असुभो अहोत्ति भणितो द्व्वाणं तो अहो लोगो ॥१॥त्ति (उड्डंति उवरिमंति य सुहखेत्तं खेत्तओ य द्व्वगुणा। उप्पज्जंति य भावा तेण य सो उड्डलोगोत्ति॥२॥)'मज्झणुभावं खेत्तं जं तं तिरियंति वयणपज्जयओ। भण्णति तिरिय विसालं अतो य तं तिरियलोगोत्ति ॥ ३ ॥ सेसं कंठ्यं । इदाणिं अहोलोगखेत्ताणुपुव्वीए रयणप्पभासुत्तं, एतासि रयणप्पभादीणं इमे अणादिकालसिद्धा जधासंखं णामधेज्जा भवंति--घम्मा वंसा सेला अंजण रिट्ठा मघा य माघवती। एते अनादिसिद्धा णामा रयणप्पभादीणं ॥१॥ एतासिं चेव घम्मादियाणं सत्तण्हं इमा गोत्राख्या, कहम्?,उच्यते, इंदनीलादिबहुविहरयणसंभवओ रयणप्पभादीसु क्वचित् रत्नप्रभासनसंभवाद्वा रयणप्रभा रयणकंडप्रतिभागकल्पितोवलिखिता वा रयणप्रभा, नरकवज्जेप्रदेशेषु, सक्करोपलस्थितपटलमधोऽधः एवंविधस्वरूपेण प्रभाव्यत इति सर्करप्रभा, एवं वालुकात्ति वालुकारूपेण प्रख्यातेति वालुकप्रभा, नरकवज्जेष्वेव, पंक इवाभाति पंकप्रभा, धूमाभा—धूमप्रभा, कृष्ण तमो इवाभाति तमःप्रभा, अतीवकृष्ण-महत्तम इवाभाति महातमःप्रभा। इदाणिं 'तिरियलोगखेत्ताणुपुव्वी' तिविहे त्यादि सूत्रं, जंबुद्दीवे लवणसमुद्दे धायतिसंडे दीवे कालोदे समुद्दे उदगरसे पुष्करवरे दीवे पुक्खरोदे समुद्दे उदगरसे वरुणवरे दीवे वरुणोदे समुद्दे वारुणिरसे खीरवरे दीवे खीरोदे समुद्दे घृतवरे दीवे घतोदे समुद्दे खातवरदीवो खातरसे समुद्दे, अतो परं सव्वे दीवसरिणामता समुद्दा, ते य सव्वे खोयरसा भाणितव्वा, इमे दीवणामा-णंदीस्सरवरदीवो अरुणवरो दीवो अरुणावासो दीवो कुंडलो दीवो संखवरो दीवो रुयगवरो एए जंबूदीवा णिरंतरा, ॥ ३५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१०३-११४] गाथा ||१२-१५||

दीप अनुक्रम [१२०-१३७]

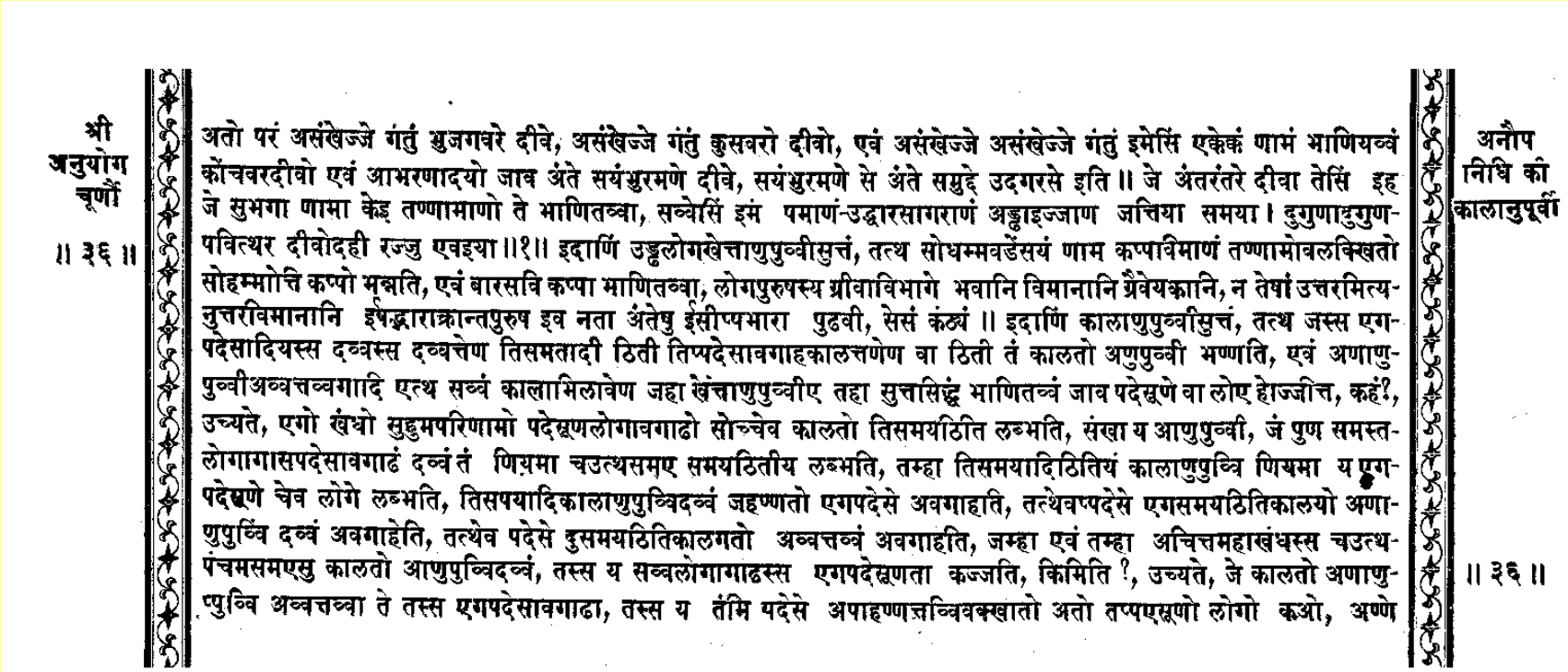

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ३६ ॥

अतो परं असंखेज्जे गंतुं भुजगवरे दीवे, असंखेज्जे गंतुं कुसवरो दीवो, एवं असंखेज्जे असंखेज्जे गंतुं इमेसिं एक्केक्कं णामं भाणियव्वं कोंचवरदीवो एवं आभरणादयो जाव अंते सयंभुरमणे दीवे, सयंभुरमणे से अंते समुद्दे उदगरसे इति ॥ जे अंतरंतरे दीवा तेसिं इह जे सुभगा णामा केइ तण्णामाणो ते भाणितव्वा, सव्वेसिं इमं पमाणं-उद्धारसागराणं अड्ढाइज्जाण जत्तिया समया। दुगुणादुगुणपवित्थर दीवोदही रज्जु एवइया ॥१॥ इदाणिं उड्ढलोगखेत्ताणुपुव्वीसुत्तं, तत्थ सोधम्मवडेंसयं णाम कप्पविमाणं तण्णामोवलक्खितो सोहम्मोत्ति कप्पो भन्नति, एवं बारसवि कप्पा भाणितव्वा, लोगपुरुषस्य ग्रीवाविभागे भवानि विमानानि ग्रैवेयकानि, न तेषां उत्तरमित्यनुत्तरविमानानि ईषद्भाराक्रान्तपुरुष इव नता अंतेषु ईसीप्पभारा पुढवी, सेसं कंठ्यं ॥ इदाणिं कालाणुपुव्वीसुत्तं, तत्थ जस्स एगपदेसादियस्स दव्वस्स दव्वत्तेण तिसमतादी ठिती तिप्पदेसावगाहकालत्तणेण वा ठिती तं कालतो अणुपुव्वी भण्णति, एवं अणाणुपुव्वीअव्वत्तव्वगादि एत्थ सव्वं कालाभिलावेण जहा खेत्ताणुपुव्वीए तहा सुत्तसिद्धं भाणितव्वं जाव पदेसूणे वा लोए होज्जीत्ति, कहं?, उच्यते, एगो खंधो सुहुमपरिणामो पदेसूणलोगावगाढो सोच्चेव कालतो तिसमयठितीत लब्भति, संखा य आणुपुव्वी, जं पुण समस्तलोगागासपदेसावगाढं दव्वं तं णियमा चउत्थसमए समयठितीय लब्भति, तम्हा तिसमयादिठितियं कालाणुपुव्वि णियमा य एगपदेसूणे चेव लोगे लब्भति, तिसपयादिकालाणुपुव्विदव्वं जहण्णतो एगपदेसे अवगाहति, तत्थेवप्पदेसे एगसमयठितिकालयो अणाणुपुव्वि दव्वं अवगाहेति, तत्थेव पदेसे दुसमयठितिकालगतो अव्वत्तव्वं अवगाहति, जम्हा एवं तम्हा अचित्तमहाखंधस्स चउत्थपंचमसमएसु कालतो आणुपुव्विदव्वं, तस्स य सव्वलोगागाढस्स एगपदेसूणता कज्जति, किमिति ?, उच्यते, जे कालतो अणाणुपुव्वि अव्वत्तव्वा ते तस्स एगपदेसावगाढा, तस्स य तंमि यदेसे अपाहण्णत्तव्विवक्खातो अतो तप्पएसूणो लोगो कओ, अण्णे

अनौपनिधि की कालानुपूर्वी

॥ ३६ ॥

कालानुपूर्वे: वर्णनं क्रियते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१०३-११४] गाथा ||१२-१५||

दीप अनुक्रम [१२०-१३७]

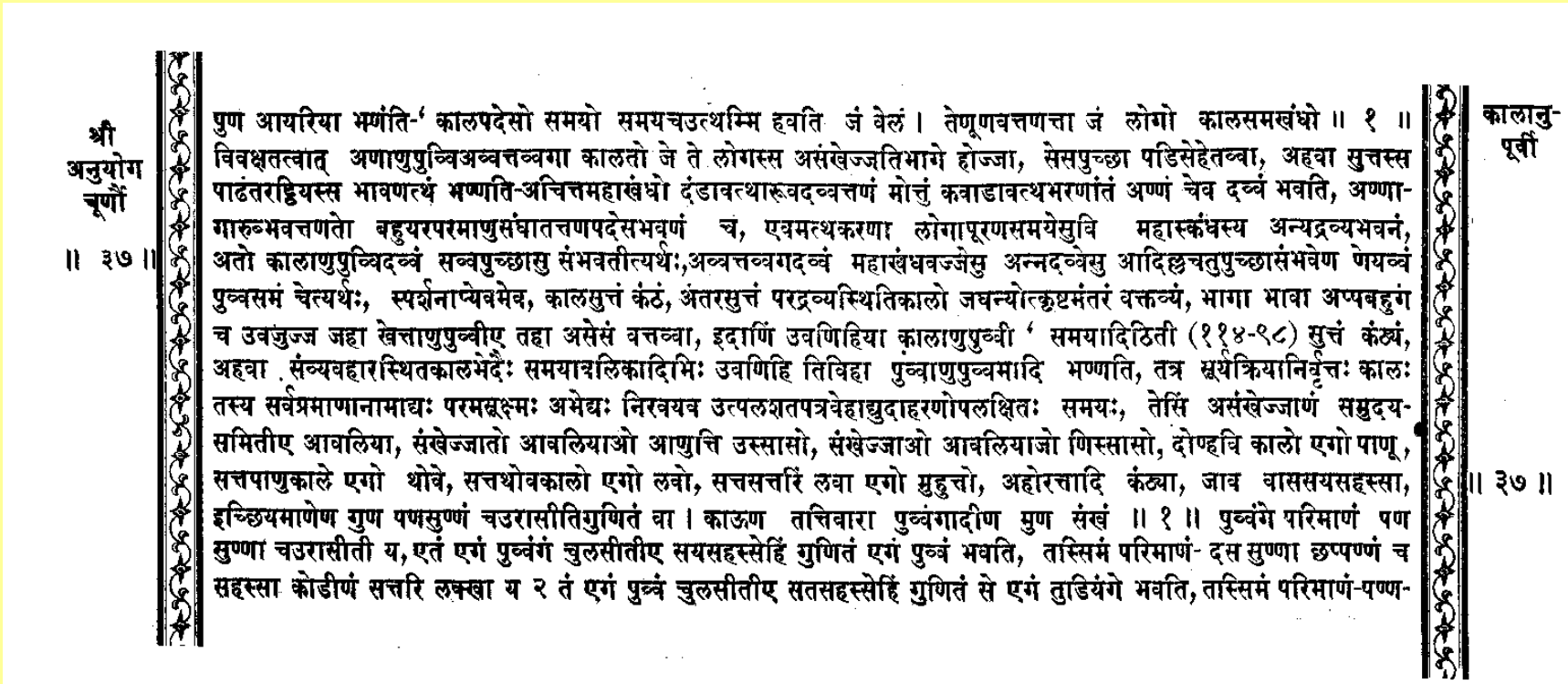

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ३७ ॥

पुण आयरिया भणंति-' कालपदेसो समयो समयचउत्थम्मि हवति जं वेलं । तेणूणवत्तणत्ता जं लोगो कालसमखंधो ॥ १ ॥ विवक्षतत्वात् अणाणुपुव्विअव्वत्तव्वगा कालतो जे ते लोगस्स असंखेज्जतिभागे होज्जा, सेसपुच्छा पडिसेहेतव्वा, अहवा सुत्तस्स पाढंतरट्ठियस्स भावणत्थं भण्णति-अचित्तमहाखंधो दंडावत्थारूवदव्वत्तणं मोत्तुं कवाडावत्थभरणांतं अण्णं चेव दव्वं भवति, अण्णागारुब्भवत्तणतो बहुयरपरमाणुसंघातत्तणपदेसभवणं च, एवमत्थकरणा लोगापूरणसमयेसुवि महास्कंधस्य अन्यद्रव्यभवनं, अतो कालाणुपुव्विदव्वं सव्वपुच्छासु संभवतीत्यर्थः,अव्वत्तव्वगदव्वं महाखंधवज्जेसु अन्नदव्वेसु आदिल्लचतुपुच्छासंभवेण णेयव्वं पुव्वसमं चेत्यर्थः, स्पर्शनाप्येवमेव, कालसुत्तं कंठं, अंतरसुत्तं परद्रव्यस्थितिकालो जघन्योत्कृष्टमंतरं वक्तव्यं, भागा भावा अप्पबहुगं च उवजुज्ज जहा खेत्ताणुपुव्वीए तहा असेसं वत्तव्वा, इदाणिं उवणिहिया कालाणुपुव्वी ' समयादिठिती (११४-९८) सुत्तं कंठ्यं, अहवा संव्यवहारस्थितकालभेदैः समयावलिकादिभिः उवणिहि तिविहा पुव्वाणुपुव्वमादि भण्णति, तत्र सूर्यक्रियानिर्वृत्तः कालः तस्य सर्वप्रमाणानामाद्यः परमसूक्ष्मः अभेद्यः निरवयव उत्पलशतपत्रवेहाद्युदाहरणोपलक्षितः समयः, तेसिं असंखेज्जाणं समुदयसमितीए आवलिया, संखेज्जातो आवलियाओ आणुत्ति उस्सासो, संखेज्जाओ आवलियाजो णिस्सासो, दोण्हवि कालो एगो पाणू, सत्तपाणुकाले एगो थोवे, सत्तथोवकालो एगो लवो, सत्तसत्तरिं लवा एगो मुहुत्तो, अहोरत्तादि कंठ्या, जाव वाससयसहस्सा, इच्छियमाणेण गुण पणसुण्णं चउरासीतिगुणितं वा । काऊण तत्तिवारा पुव्वंगादीण मुण संखं ॥ १ ॥ पुव्वंगे परिमाणं पण सुण्णा चउरासीती य, एतं एगं पुव्वंगं चुलसीतीए सयसहस्सेहिं गुणितं एगं पुव्वं भवति, तस्सिमं परिमाणं- दस सुण्णा छप्पण्णं च सहस्सा कोडीणं सत्तरि लक्खा य २ तं एगं पुव्वं चुलसीतीए सतसहस्सेहिं गुणितं से एगं तुडियंगे भवति, तस्सिमं परिमाणं-पण्ण-

कालानुपूर्वी ॥ ३७ ॥

अथ समयात् शीर्षप्रहेलिका पर्यन्त: काल-आनुपूर्वी: दर्शयते

रस सुण्णा ततो चउरो सुण्णं सत्त दो णव पंच य ठवेज्जा ३ एवं चुलसीतिसतसहस्सगुणा सव्वट्ठाणा कायव्वा, ततो तुडिया-दयो भवंति, तेसिमं जहासंखं परिमाणं-तुडिए वीसं सुण्णा ततो छ ति एक्को सत्त अट्ठ सत्त णव चउरो य ठवेज्जा ४ अडडंगे पणवीस सुण्णा ततो चतु दो चतु णव एक्को एक्को दो अट्ठ एक्को चतुरो य ठवेज्जा ५ तो अडडे तीसं सुण्णा ततो छ एक्को छ एक्कोत्ति सुण्णं अट्ठ णव दो एक्को पण तिगं ठवेज्जा ६ अववंगे पणतीसं सुण्णा ततो चतु चतु सत्त पण पण छ चतु ति सुण्णं णव सुण्णं पण णव दो य ठवेज्जा ७ अववे चत्तालीसं सुण्णा ततो छ णव चतु दो अट्ठ सुण्णं एक्को एक्को णव अट्ठ पण सत्त अट्ठ सत्त चतु दोय ठवेज्जाहि ८ हुहुयंगे पणतालीसं सुण्णा ततो चउ छ छ णव दो णव सुन्नं ति पण अट्ठ चउ सत्त पंच एक्को दो अट्ठ सुण्णं दो य ठवेज्जा९, हुहुए पण्णासं सुण्णा ततो छ सत्त सत्त एक्को णव सुण्णं अट्ठ णव पण छ सत्त अट्ठ दो दो एक्को सुण्णं णव चउ सत्त एक्कं व ठवेज्जा १० उप्पलंगे पणपण्ण सुण्णं ततो चत्तु अट्ठ एक्को णव सुण्णं सत्त णव ति दो चउ ति छत इक्को दो ति सुण्णं सत्त एक्को णव छ चतु एक्कं ठवेज्जा ११ उप्पले सट्ठिं सुण्णा ततो छ पण चतु एक्को सत्त पण पण ति एक्को छ सत्त दो सत्त एक्को सुण्णं सत्त सुण्णं ति सुण्णं एक्को चतु ति दो एकं च ठवेजा १२ पयुमंगे पणसट्ठि सुण्णा ततो चतु सुण्णं ति दु सुण्णं सुण्णं अट्ठ अट्ठ ति पण णव एक्को एक्को पण चतु णव अट्ठ सत्त पण छ चतु छ छ ति सुण्णं एकं च ठवेज्जा १३ पयुमे सत्तरि सुन्ना ततो छ ति पण ति णव एक्को दो णव पण दो एक्को चतु सुण्णं सुण्णं णव ति एक्को ति छ दो एक्को ति अट्ठ सत्त सुण्णं सत्त अट्ठ य ठवेज्जा १४ णलिणंगे पंचसत्तरिं सुण्णा ततो चतु दो सुण्णं सत्त पण दो चतु चतु सत्त सत्त पण छ चउ ति छ सत्त छ ति सुण्णं एक्को छ दो अट्ठ सत्त पण चतु एक्को ति सत्त य ठवेज्जा १५ नलिणे असीतं सुण्णा ततो छ एक्को सुण्णं सुण्णं णव पण सत्त एक्को पण सुण्णं पण दो

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [११४-११५] गाथा ||१५..||

दीप अनुक्रम [१३७-१३८]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ३९ ॥

एक्को एक्को वि एक्को अट्ठ अट्ठ सुण्णं सत्त दो णव ति सत्त पण चतु दो चतु चउ एक्क छ ठवेज्जा १६ निउरंगे पंचासी सुण्णा चउ चउ ति एक्को छ पण ति चतु सुण्ण पण चतु एक्को सुण्ण ति सुण्णं चतु पण सत्त अट्ठ णव सुण्ण दो चतु छ छ एक्को एक्को छ एक्को पंच य ठवेज्जा १७ अत्थणीपुरे णउति सुण्णा ततो छ णव अट्ठ दो पण एक्को पण एक्को एक्को दो पण छ ति अट्ठ एक्को दो ति पण अट्ठ ति ति पण णव दो छ ति णव सत्त णव सत्त ति पण ति ति चतुरो य ठवेज्जा १८ अउतंगे पंचणउति सुण्णा ततो चतु छ दो ति चउ अट्ठ दो सत्त छ सत्त सत्त सत्त छ दो चतु तिण्णि सुण्णं सत्त छ ति चतु अट्ठ सुण्णं अट्ठ अट्ठ चतु छ छ दो सुण्णं णव एक्को सत्त एक्को चतु छ तिण्णि य ठवेज्जा १९ अउए सुण्णसतं ततो छ सत्त एक्को चतु ति अट्ठट्ठ एक्को पण चतु दो ति णव चतु अट्ठ सत्त अट्ठ सुण्णं ति अट्ठ छ अट्ठ सुण्णं णव णव णव चतु अट्ठ ति दो अट्ठ णव ति चतु सुण्णं णव पण सुण्णं तिण्णि य ठवेज्जा २० णउतंगे सुण्णसतं पंचहियं ततो चतु अट्ठ सत्त सुण्णं सत्त सुण्णं सत्त सुण्णं दो अट्ठ पण नव पण दो ति चउ ति नव सत्त ति नव सत्त ति नव दो ति दो नव नव ति ति सुण्ण दो पण चउ नव छ नव पण छ पण दो य ठवेज्जा २१ णउते सुण्णसतं दसाहियं ततो छ पण अट्ठ पण चतु णव ति णव अट्ठ चतु सुन्नं अट्ठ ति तिअट्ठ चतु छ अट्ठ सत्त छ अट्ठ सत्त छ छ पण पण ति पण पण अट्ठ सुण्णं सत्त णव ति ति चतु एक्को छ चतु अट्ठ पण एक्को दोन्नि य ठवेज्जा २२ पउतंगे पण्णरसुत्तरं सुण्णसतं ततो चतु सुण्ण णव एक्को पण चउ एक्को णव सुण्णं एक्को एक्को छ णव ति सुण्णं छ चतु छ सुण्ण सुण्ण णव सुण्ण सुण्ण एक्को छ सत्त अट्ठ णव चतु अट्ठ एक्को पण पण ति पण चतु सुण्ण छ सत्त सुण्ण एक्को ति एक्को अट्ठ एगं च ठवेज्जा २३ पउते वीसुत्तरं सुण्णसतं ततो छ ति णव णव पण णव एक्को अट्ठ छ एक्को ति ति सत्त दो ति सत्त छ दो चतु पण छ पण सत्त चतु दो णव पण णव अट्ठ ति पण पण ति

पूर्वांगा-दित: शीर्ष-पहेलिका

॥ ३९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [११४-११५] गाथा ॥१५..॥

दीप अनुक्रम [१३७-१३८]

अट्ठ णवं सुण्णं अट्ठ सत्त अट्ठ ति सुण्णं एक्को सुण्णं ति दो पण एक्कं च ठवेज्जा २४ चूलियंगे पणवीसुत्तरं सुण्णसतं ततो चतु दो छ चतु ति छ चतु अट्ठ दो एक्को छ अट्ठ पण णव चतु पण पण चतु अट्ठ पण णव चतु पण णव सत्त छ सत्त पण दो सत्त दो पण अट्ठ एक्को छ दो सुण्णं छ सत्त पण दो सत्त अट्ठ दो तिण्णि णव सत्त दो एक्कं च ठवेज्जा २५ चूलियाए तीसुत्तरं सुण्णसतं ततो छ एक्को चतु अट्ठ सुण्णं ति नव सुण्णं णव सत्त चतु ति दो पण छ एक्को छ दो सुण्णं एक्को छ पण एक्को दो अट्ठ सुण्णं पण चतु छ णव अट्ठ दो छ पण णव णव एक्को छ अट्ठ ति छ णव दो एक्को छ ति छ चउ सत्त सुण्ण एक्कं च ठवेज्जा २६ सीसपहेलियंगे पण-तीसुत्तरं सुण्णसतं ततो चउ चउ णव छ सुण्ण णव एक्को अट्ठ ति चतु दो दो सत णव सत्त अट्ठ सत्त णव एक्को छ अट्ठ छ अट्ठ एक्को सुण्णं णव छ अट्ठ एक्को सुण्णं ति ति अट्ठ दो ति. छ सत्त सुण्णं चउ चतु छ णव अट्ठ अट्ठ चतु ति चतु णव छ दो सुण्णं णव य ठवेज्जा २७ सीसपहेलियाए चत्तालं सुण्णसयं ततो छ णव दो ति अट्ठ एक्को सुण्णं अट्ठ सुण्ण अट्ठ चतु अट्ठ छ छ णव अट्ठ एक्को दो छ सुण्णं चतु छ णव छ पण सत्त णव णव छ पण ति सत्त णव सत्त पण एक्को एक्को चतु दो सुण्णं एक्को सुण्णं ति सत्त सुण्णं ति पण दो ति छ दो अट्ठ पण सत्त य ठवेज्जा २८ एवं सीसपहेलियाए चतुणतुयं ठाणसयं जाव ताव संववहारकालो, जाव संववहारकालो ताव संववहारकालविसए, तेण य पढमपुढविणेरइयाणं भवणवंतराण भरहेरवतेसु य सुसमदूसमाए पच्छिमे भागे णरतिरियाणं आऊ उवभिज्जंति, किं च-सीसपहेलियाए य परतो अत्थि संखेज्जो कालो सो य अणतिसईणं अववहारिउत्ति-काउं ओवम्मि पक्खित्तो, तेण सीसपहेलियाए परतो पलितोवमादि उवण्णत्था, सेसं कंठ्यं । उक्कित्तणाणुपुव्विसुत्तं-उक्कित्तणत्ति गुणवतो थुती जहत्थणामुक्कित्तणं वा, तं च जहाकमेणुप्पण्णाण तित्थकराण चक्किबलदेववासुदेवकुलगरगणधराण य थेरावलि-

॥ ४० ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ४१ ॥

याकमेण दिट्ठव्वं, सेसं कंठ्यं । गणणाणुपुव्विसुत्तं (११६-१०१) गणणत्ति-परमाण्वादिराशेः [अ]परिज्ञाने संख्यानं गणणा, संठाणाणुपुव्वि सुत्तं (११७-१०१) तत्थ संठाणं दुविहं-जीवमजीवेसु, जीवेसु सरीरागारणिव्वत्ति, मणुयाणं जस्स उस्सेहे अट्ठसयंगुलुव्विद्धो तावतियं चेव आययपुहुत्तविच्छिण्णा तं चतुरंसं, उस्सन्नमेव समा सव्वावयवा, जस्स णाभीतो उवरिं समचतुरंससी अंगोवंगा नेव अहो तं नग्गोहपरिमंडलं, जंमि अहो समा अवयवा उवरि विसमा तं साति, जस्स बाहुग्रीवाशिरं णाभीए य अधो समचउरंसं विसमेसु वा अंगुवंगेसु पट्ठीहि तयं अतीव संखित्तं सुण्णयं च तं च खुज्जं, सव्वे अंगुवंगावयवा अतीव हस्सा जस्स तं वामणं, असमगं अंगोवंगा य जधुत्तपमाणतो ईसि अधिया अ ऊणा वा जस्स तं हुंडं संठाणं, अजीवेसु संठाणाणुपुव्वी-परिमंडले य वट्टे तंसे चतुरंसमायए य, एते जहा विणयसुते, संघयणाणुपुव्वीवि एत्थेव वत्तव्वा, सामायारियाआणुपुव्वीसुत्तसरूवं [११८-१०२] से जहा आवस्सगे तहा वत्तव्वं, भावाणुपुव्विसुत्तं कंठ्यं, आणुपुव्विपदं गतं । इदाणिं णामं, तस्सिमं णिरुत्तं-जं वत्थुणोऽभिहाणं पज्जवभेदाणुसारि तं णामं । पतिभेतं यण्णमते पडिभेदं जाति जं भणितं ॥ १ ॥ तं च दसविधं-एगनामादि, तत्थ एगनामं एगस्स भावो एगत्तं तेण णमते एगणामं, एगं वा दव्वं गुणं पज्जवं णामेति—आराधयतित्ति जं तं एगनामं, अभेदभावप्रदर्शनं एगनाम इत्यर्थः, एत्थ सुत्त गाहा 'णामाणि जाणि' (*१७-१०५) इत्यादि, दव्वाण जहा जीवो, तस्स गुणो णाणादि पज्जवो णेरइगाइ, अजीवदव्वाण परमाणुमादिण गुणो वन्नादि पज्जवो एगगुणकालकादि, सेसं कंठ्यं । दुणामं जहाभेदं उवउज्जिय सुत्तसिद्धं भाणितव्वं णाम, तत्थ चोदक आह– किं धम्मादियाण गुणपज्जवा णत्थि जतो पुग्गलत्थिकाएणं देसेइ, ण धम्मादिएसु ?, आचार्याह-सव्वदव्वाण गुणपज्जवा अत्थि, किं तते?, उच्यंते, गतिगुणं धम्मदव्वं ठितिगुणो अधम्मो अवगाहगुणमा-

संहनना द्यानुपूर्व्यः नाम च

॥ ४१ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

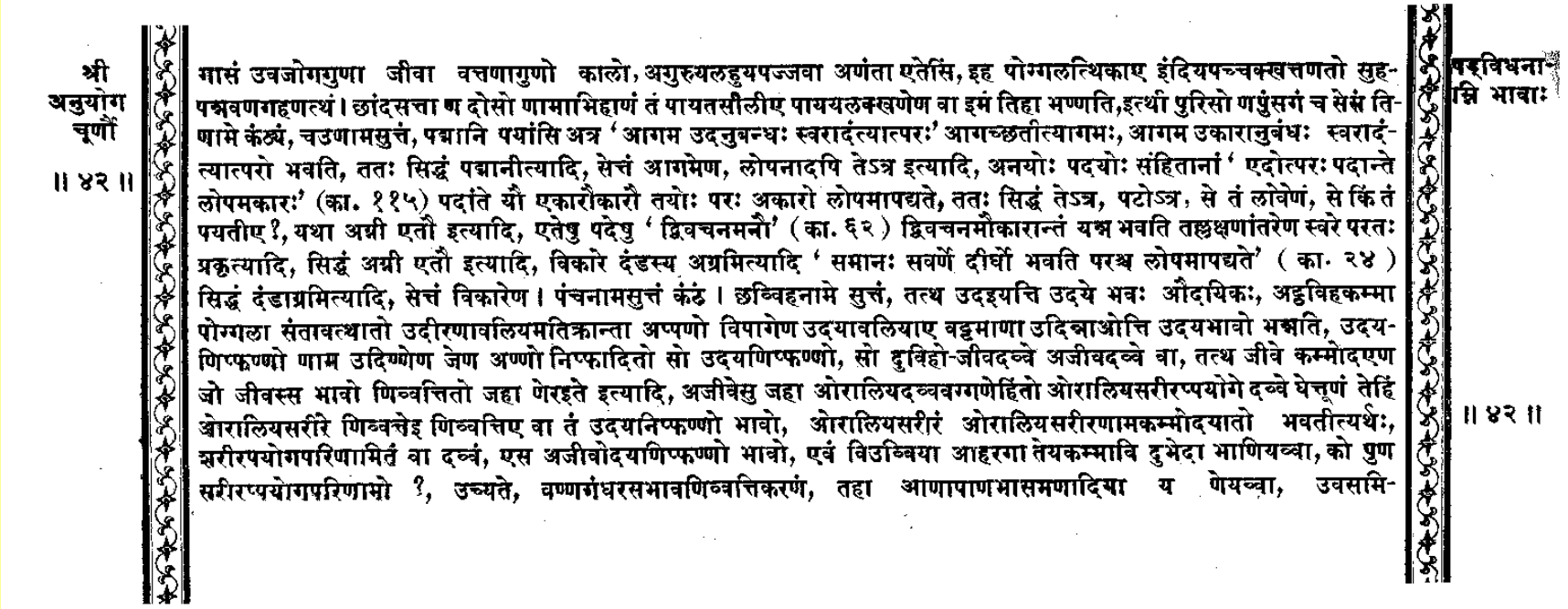

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ४२ ॥

मासं उवजोगगुणा जीवा वत्तणागुणो कालो, अगुरुयलहुयपज्जवा अणंता एतेसिं, इह पोग्गलत्थिकाए इंदियपच्चक्खत्तणतो सुह-पञ्चवणगहणत्थं। छांदसत्ता ण दोसो णामाभिहाणं तं पायतसीलीए पाययलक्खणेण वा इमं तिहा भण्णति,इत्थी पुरिसो णपुंसगं च सेसं ति-णामे कंठ्यं, चउणामसुत्तं, पञ्चानि पयांसि अत्र 'आगम उदनुबन्धः स्वरादंत्यात्परः' आगच्छतीत्यागमः, आगम उकारानुबंधः स्वरादं-त्यात्परो भवति, ततः सिद्धं पञ्चानीत्यादि, सेत्तं आगमेण, लोपनादपि तेऽत्र इत्यादि, अनयोः पदयोः संहितानां 'एदोत्परः पदान्ते लोपमकारः' (का. ११५) पदांते यौ एकारौकारौ तयोः परः अकारो लोपमापद्यते, ततः सिद्धं तेऽत्र, पटोऽत्र, से तं लोवेणं, से किं तं पयतीए?, यथा अग्नी एतौ इत्यादि, एतेषु पदेषु 'द्विवचनमनौ' (का. ६२) द्विवचनमौकारान्तं यच्च भवति तल्लक्षणांतरेण स्वरे परतः प्रकृत्यादि, सिद्धं अग्नी एतौ इत्यादि, विकारे दंडस्य अग्रमित्यादि 'समानः सवर्णे दीर्घो भवति परश्च लोपमापद्यते' (का. २४) सिद्धं दंडाग्रमित्यादि, सेत्तं विकारेण। पंचनामसुत्तं कंठं। छव्विहनामे सुत्तं, तत्थ उदइयत्ति उदये भवः औदयिकः, अट्ठविहकम्मा पोग्गला संतावत्थातो उदीरणावलियमतिक्कान्ता अप्पणो विपागेण उदयावलियाए वट्टमाणा उदिन्नाओत्ति उदयभावो भण्णति, उदय-णिप्फण्णो णाम उदिण्णेण जेण अण्णो निप्फादितो सो उदयणिप्फण्णो, सो दुविहो-जीवदव्वे अजीवदव्वे वा, तत्थ जीवे कम्मोदएण जो जीवस्स भावो णिव्वत्तितो जहा णेरइते इत्यादि, अजीवेसु जहा ओरालियदव्ववग्गणेहिंतो ओरालियसरीरप्पयोगे दव्वे घेत्तूणं तेहिं ओरालियसरीरे णिव्वत्तेइ णिव्वत्तिए वा तं उदयनिप्फण्णो भावो, ओरालियसरीरं ओरालियसरीरणामकम्मोदयातो भवतीत्यर्थः, सरीरपयोगपरिणामितं वा दव्वं, एस अजीवोदयणिप्फण्णो भावो, एवं विउव्विया आहरगा तेयकम्मावि दुभेदा भाणियव्वा, को पुण सरीरप्पयोगपरिणामो?, उच्यते, वण्णगंधरसभावणिव्वत्तिकरणं, तहा आणापाणभासमणादिया य णेयव्वा, उवसामि-

षड्विधनाम्नि भावाः ॥ ४२ ॥

नाम्न: द्वि, त्रि, चतु: आदि भेदानां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ४३ ॥

क्षायिक-भावः

ए वौवसमिकः, उदयअभावो उवसमो, एस दुविहो सुत्तं, अत्थ उवसमो उवसमसेढिपडिवन्नस्स मोहणिज्जमणंताणुबंधिमादिकम्म-
उवसमकाले उवसमेन्तस्स उवसमिए वोवसमितो भावो भवति, उवसमणिप्फण्णो पुण स एवोत्तरकालं उवसमिकसम्मो उवसंतकोधे
इत्यादि भण्णति, सेसं कंठ्यं, कम्माण खयए व खाइयत्ति, जस्स न रहो संभवति अरहा कम्मारिजित्तणातो जिणो णाणसंपुण्णत्त-
णतो केवली णेगमववहाराभिप्पायतो णाणावरणक्खयवेक्खत्तणतो तक्खाइतो, अणावरणादि चउरो एगट्ठिया किंचि विसेसत्थ-
जुत्ता वा इमेण विधिणा—केवलस्स सव्वगतत्तणतो, आवरणाभावः सतः अणावरणे गगनवत्, अहवा अणावरणे पडुप्पण्णकालणय-
वेक्खत्तणओ विसुद्धांबरे चन्द्रबिम्बवत् आवरणातो णिग्गतो, आवरणातो वा णिग्गयं जस्स स णिरावरणो
सस्सिबिंबंव राहुतो, खीणावरणोत्ति खीणं खवियं विणट्ठं विद्धत्थं सव्वहा अभावे य आवरणं जस्सेवं तमो व रविणो जहा उदयतो,
संगहाभिप्पातातो, णाणावरणं कम्मं विसिट्ठं ततो विमुक्को कणगं व किट्टातो चेव, अत्थणुसारा उप्पण्णदंसणादिया उवजुज्ज वत्तव्वा
संपुण्णनाणदंसणस्स, केवलदंसी सव्वं सामण्णयं सव्वधा सव्वायप्पदेसेहिं सव्वग्गेणं सव्वद्धाहि पेक्खंतो सव्वदंसी, सेसं कंठ्यं ।
णामकम्मे 'अणेगबों' इत्यादि, अणेगेति बहू बोंदीतो, ता य जहण्णसंजोगे ओरालियतेयकम्मगसरीरा, तेसु ओरालियाइ-
बोंदीए वंदं-वृदं, तं च अंगाणं उवंगाणं अंगोवंगाण य, ते य कम्मगेसुवि तव्विभागगतेसु अंगुवंगा वत्तव्वा, एकेक्के अंगोवंगे अणंत-
परमाणू, संघायात्ति संघाया, एत्थमणंतसंभवेवि संववहारतो सतग्रहणं कतं, त्तो बोंदिवंदसंघातातो विसिट्ठेण पगारेणं मुक्को
विप्पमुक्को अपुनर्ग्रहणेनेत्यर्थः, सामादिकादिचरणक्रियासिद्धत्वात् सिद्धा, सिद्धत्वात् प्रापणाद्वा सिद्धः, सुभासुभसर्वक्रिया- ॥ ४३ ॥
परिनिष्ठानासिद्धत्वात्सिद्धः, जीवादितत्त्वं बुध्यत इति बोधात्मकत्वात् बुद्धः, बाह्याभ्यन्तरेण ग्रंथेन बंधनेन मुक्तत्वात् सारीरमा-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

नसदुःखेनातितापितमात्मानं परिनिर्वातत्वात् समंतात् णिव्वयिदुक्खे परिनिव्वुडे, ऊर्द्धक्षेत्रलोकान्ते आत्मस्वरूपावस्थापनात्, अन्तकडे सर्वसंसारिभावानां अंतकारित्वात् अंतकडे, उत्तरोत्तरं वा सर्वसुखानां अंतं प्रकर्षं प्राप्त इति अंतकडे, सुखदुःखांतकारित्वात् वा अंतकडे, सर्वे दुखःप्रकाराः प्रहिणा यस्य स भवति सव्वदुःखप्पहीणो, चउण्हं घातिकम्माणं खयोवसमकालकरण एव उभयसभावत्तणतो खओवसमिते भावे, खओवसमणिप्फण्णे पुण उत्तरकालं 'आभिणिबोहियनाणलद्धी' त्यादि, सेसं कंठ्यं, पुरि समंता णामो जं जं जीवं पोग्गलादियं दव्वं जं जं अवत्थं पावति तं अपरिचत्तसरूवमेव तधा परिणमति सा किरिया परिणामितो भावो भण्णति, सो य सादी अणादी दुविहो, तत्थ सादी ' जुण्णसुरे ' त्यादी, इह परिणतीरूपः पारिणामिकः अहवा नवा जीर्णेतरा सुराभावः सर्वास्ववस्थासु परिणता इत्यर्थः, निनादोलीक्षितो घात इव निर्घातः जूवओ-अमोहो जक्खालित्ता-अग्निपिसाचा धूमिका रूक्षा प्रविरला सा धूमामा भूमौ पतितैवोपलक्ष्यते महिया, रजस्वला सो रयुग्घातो, अड्ढाइयदीवसमुद्देसु चंदसूराण जुगवोवरागभावित्तणओ बहुवयणं, कविहसियं अम्बरतले ससद्दं लक्खिज्जति, जलियं वा, सादिपरिणामभावो पुग्गलाण चयोवचयत्तणयेा, सेसं कंठ्यं । इदाणिं सन्निवादितो भावोऽन्यभावेन सह निपात्यत इति संनिपातिकः, अविरोधेन वा द्विकादिनैकत्र मेलकः सन्निपातिकः, द्विकसंयोगे उदयोपशमौ प्रथमसन्निपातिको निष्पन्नः, एवं द्वित्रिचतुःपंचकयोगाः सर्वे षड्विंशतिभंगा उक्ताः । इयाणिं दुगादिसंजोगभंगपरिमाणप्रदर्शकं सूत्रं 'तत्थ णं दस दुगसंयोगा' इत्यादि, कंठ्यं । इयाणिं अपरिण्णायदुगादिसंयोगब्भंगभावुक्कित्तणज्ञापनार्थं सूत्रमाह-'तत्थ णं जे ते दस दुगसंजोगा ते णं इमे-अत्थि एगे उदइएउवसमाणिप्फण्णे' इत्यादि, सव्वं सुत्तसिद्धं, अतो परं सन्निपातियभंगोवदंसणा सवित्थरा कज्जति, तत्थ सीसो पुच्छति 'कतरे से णामे उदइएउवसमाणिप्फण्णे?, आचार्या आह-' उदएत्ति

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ४५ ॥

स्वरप्रकरणं

मणूसे ' इत्यादि, सव्वं सुत्तसिद्धं, कंठ्यं, एवं सन्निवाइयभावपरूवणे कते चोदक आह--जति दुगसंयोगे जीवस्स कम्हिवि अवत्था-विसेसे भावदुगमेव भवे तो जुत्तं दुगभंगो वोत्तुं, जतो य दुभावाभावो, संसारिणो य जीवस्स णियमा भावतिगमत्थि उदय-खओवसमपारिणामिया, तम्हा दुगभंगो ण वत्तव्वो, आचार्य आह--ण तुमं सिद्धंताभिप्पायं जाणसि, विचित्तो सुत्तत्थो भगवतां, सुभभंगोत्ति विकप्पो विविधकप्पणातो विकप्पो सेति किंचि अत्थविसेसेण निरवेक्खा णिरवेक्खो जधेव विकप्पं पयच्छति तधेव कज्जते ण दोसो, गतं छव्विधं णामं । इदाणिं सत्तणामं, तत्थ ' सज्ज ' सिलोगो (*२५--१२०) कज्जं करणायत्तं जीहा य सरस्स ता असंखेज्जा । सरसंख असंखेज्जा करणस्स असंखयत्तातो ॥ १ ॥ सत्त य सुत्तणिबद्धा कह ण विरोहो गुरू ततो आह । सत्तणु-वाई सव्वे बादरगहणंऽवगतव्वं ॥ २ ॥ णाभिसमुत्थो अ सरो अविकारो पप्प जं पदेसं तु । आभोगियरेणं वा उवकारकरं सरट्ठाणं ॥ ३ ॥ 'सज्जं च' सिलोगो ' णीसरते ' सिलोगो (*२७--१२९) जियऽजीवणिस्सियत्ताणिस्सारिय अहव णिसिरिया तेहिं । जीवेसु सण्णिवत्ती पजोगकरणं अजीवेसु ॥ १ ॥ तत्थ जीयणिस्सिता ' सज्जं रवति ' दो सिलोया (* २८/३० -१२८) अजीवेवि दो सिलोगा, गोमुही--काहला तीए गोसिंगं अन्नं वा मुहे कज्जति तेण गोमुही, गोहाचम्मावणद्धा गोहिया सा य दद्दरिका, आडम्ब-रोत्ति पडहो, ' सरफलमव्वभिचारि वाओदिट्ठं णिमित्तमंगेसु । सरि णिव्वत्तिरफला ते लक्खे सरलक्खणं तेणं ॥१॥ ' सज्जेण लभति वित्त ' 'सत्त' सिलोगा। सज्जादि तिधा गामो ससमूहो मुच्छणाण विन्नेयो। ता सत्त एक्कमेक्के तो सत्तसराण इगवीसा॥१॥ अण्णोण्णसरविसेसा उप्पायंतस्स मुच्छणा भणिया । कत्ता व मुच्छितो इव कुणते मुच्छं व सोयत्ति ॥२॥ मंगिमादियाणं इगवीसमु-च्छणाणं सरविसेसो पुव्वगते सरपाहुडे भणितो, तव्विणिग्गतेसु त भरहविसाखिलादिसु विण्णेया इति, 'सत्त सरा कतो' एस ॥ ४५ ॥

अत्र नाम्न: भेदे स्वर-प्रकरणम् वर्णयते

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

स्वरप्रकरणं

पुच्छासिलोगो, (*४३-१३०) ‘ सत्त सरा णाभीतो ’ उत्तरासिलोगो (*४४-१४१) गीयस्स इमे तिण्णि आगारा ‘ आइमिउ ’ गाथा (*४५-१३१) किंचान्यत् ‘ दोसो ’ गाथा (*४६-१३१) इमे छद्दोसा वज्जणिया ‘भीतदुय’ गाहा (*४७-१३१) भीतं-उत्त्रचमानसं द्रुतं-त्वरितं उप्पिच्छं-श्वासयुतं त्वरितं वा पाठान्तरेण ह्रस्वस्वरं वा भणियव्वं, उत्प्राबल्ये अतितालं वा उत्तालं श्लक्ष्णस्वरेण काकस्वरं साऽनुनासिकमनुनासं नासास्वरकारीत्यर्थः । अट्ठगुणसंपयुक्तं गेतं भवति, ते येमे– ‘ पुन्नं रत्तं च ’ गाहा (*४८-१३१) स्वरकलाभिः पूर्णगेयरागेणानुरक्तस्य रक्तं अण्णोऽण्णसरविसेसफुडा सुभकरणत्तणतो अलंकृतं, अक्खरसरफुडकरणत्तणओ व्यक्तं, विस्वरं विक्रोशतीव विघुट्ठं न विघुट्ठं अविघुट्ठं, मधुरस्वरेण मधुरं कोकिलारुतवत्, तालवंससरादिसमणुगतं समं, ललितं ललतीव स्वरघोलना-प्रकारेण सोअइंदियसद्दफुसणा सुहुप्पायणत्तणतो वा सुकुमालं, एभिरष्टाभिर्गुणैर्युक्तं गीतं भवति, अन्यथा विलम्बना, किंचान्यत्-‘उरकंठ’ गाहा (*४९-१३१) जति उरे सरो विशालो तं उरविसुद्धं, कंठे जति सरो वट्टितो अफुडितो य तो कंठविशुद्धं सरं पत्तो, जति णाणुणासिको तो सिरविसुद्धो, अहवा उरकंठसिरेसु श्लेष्मणा अव्याकुलेसु विसुद्धेसु गीयते, किंविशिष्टं ?, उच्यते, ‘ मउयं ’ मृदुना स्वरेण मार्दवयुक्तेन न निष्ठुरेणेत्यर्थः, स च स्वरः अक्षरेषु घोलनास्वरविशेषेषु च संचरन् रंगतीवेरंगितः रिभितः, रायनिबद्धं पदमेवं गीयते, तालसरेण समं समतालं मुखकंशिकादिआतोज्जाणाहताण जो धणिपडुक्खेवो पडिक्खेवो वा तेण व समं नृत्यतो वा पडुक्खेवसमं, एरिसं पसत्थं गिज्जति सत्त[illegible]सीभरं व कज्जति, के य ते सत्तसरा सीभरसमा?, उच्यते, इमं- ‘अक्खरसम’ गाहा (*५०-१३१) दीहक्खरे दीहं सरं करेति हस्से हस्सं प्लुते प्लुतं, दंतादि अंगुलीकोशकः तेनाहततं त्रिस्वरप्रकारो लयः तं लयमणुस्सरतो गेयं लयसमं, पढमतो वंसतंतिमादिए जो सरो गहितो तस्समं गेज्जमाणं गहसमं, तेहिं चेव वंसतंतिमादिएहिं जं अंगुलसं-

॥ ४६ ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ४७ ॥

चारसमं गेज्जति तं संचारसमं, सेसं कंठ्यं। जो गेयसुयणिबंधो सो इमेरिसो–'णिद्दोसं' सिलोगो (*५१–१३१) हिंसालिया- दिबत्तीससुत्तदोसवज्जियं, णिद्दोसं अत्थेण जुत्तं सारवं च अत्थगमककारणजुत्तं हेतुजुत्तं, कव्वालंकारेहि जुत्तं अलंकियं, उव- संथारोवणएहिं जुयमुवणीतं, जं अणिट्ठुराभिधाणेण अविरुद्धालज्जणिज्जेण य बद्धं तं सोवयारं सोत्प्रासं वा, पदपादाक्षरैर्मितं नापरिमितमित्यर्थः, महुरंति त्रिधा शब्दे अर्थाभिधामधुरं च 'तिण्णि य वित्ताइं' ति जं वुत्तं तस्य व्याख्या 'समं अद्धसमं' सिलोगो (*५२–१३१) कंठ्यः, 'दुण्णि य भणितीओ' त्ति अस्य व्याख्या–'सक्कया' सिलोगो (*५४-१३१) भणितित्ति भासा, सेसं कंठ्यं। इत्थी पुरिसो केरिसं गायतित्ति पुच्छा 'केसी' गाथा (*५४–१३१) उत्तरं–'गोरी' गाहा, (*५५–१३२) इमो सरमंडलसंक्षेपार्थः, 'सत्त सरा ततो गामा' गाथा (*५६–१३२) तंतीताना ताणो भन्नति, सज्जादिसरेसु एक्केके सत्त ताणत्ति अउणपन्नासं, एते वीणाए सत्ततंतीए संभवंति, सज्जो सरो सत्तहा तंतीण सरेण गिज्जतित्ति सज्जे सत्तताणता, एवं सेसेसुवि ते चेव, एगतंतीए कंठेण वावि गिज्जमाणे अउणपन्नासं ताणा भवंति। गतं सत्त णामं। इदाणिं अट्ठविहं णामं, तत्थट्ठविहे वयण- विभत्ती 'णिद्देसे पढमा' इत्यादि (* $\frac{५१}{५२}$-१३३) दो सिलोगा, (   ) एतेसिं उदाहरणमात्रं गाथासिद्धं, वित्थरो सिं सद्दपाहुडातो णायव्वो पुव्वणिग्गतेसु वा वागरणादिसु, गतं अट्ठविधं णामं। इंदाणिं णवविधं णामं, तत्थ णव कव्वरसा-'मिउ- महुररिभियसुभयरणीतिणिद्दोसभूसणाणुगतो। सुहदुहकम्मसमा इव कम्म(व्व)स्स रसा भवंति तेणं ॥ १ ॥ 'वीरो सिंगारो' इत्यादि, (*६३–१३५) इमं वीररसलक्खणं–'तत्थ परिच्चाग' गाथा (*६४--१३६) परेण कोपकारणे उदीरिते अनुरायं ण करोति, सेसं कंठ्यं। वीररसे उदाहरणं 'सो णाम' गाहा (*६५--१३६) कंठ्या, इमं सिंगाररसलक्खणं 'सिंगारो' गाथा

काव्यरसाः

॥ ४७ ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ४८ ॥

काव्यरसाः

(*६६--१३६) कंठ्या, सिंगारे रसे उदाहरणं ' मधुर ' गाथा (६७--१३६) अब्भुते रसे लक्खणं 'विम्हय' गाहा (*६८-१३६) अब्भुते रसे उदाहरणं ' अब्भुतर ' गाहा (*६९--१३६) रोद्दे रसे लक्खणं 'भयजणण' गाहा (*७०--१३७) भयुप्पायकं रूवं दष्ट्वा भीमं वा महांतं शब्दं श्रुत्वा अत्यंधकारो वा ग्रामादिदाघचिंता वा मरणाध्यवसायचिंता वा परतः कथां वा रौद्रां श्रुत्वा संमोहादि उप्पज्जाति, अहवा देहस्य रौद्राकारोत्पद्यते। रौद्रे आकाररसे उदाहरणं ' भिकुडी ' गाहा (*७१--१३७) रूषितेन दर्शनेषु संदष्टोष्ट इति ग्रस्तः ओष्ठ इति इत्येवं गतो रौद्राकारं, सेसं कंठ्यं । वेलणरसलक्षणं 'विणयोवयार' गाहा (*७२--१३७) वेलणरसे उदाहरणं ' किं लोइय ' गाहा (*७३--१३७) सहीण पुरतो वधू भणति-किं क्षेपे लौकिककरणी क्रिया चेष्टा ततो अण्णं लज्जणतरं?, णत्थि, पासाठितावि अम्हे लजिम्मो, इमे कोइ वारिज्जंमि गुरुजणो इमं मे वसणं पंतिजणपुरतो परिवंदइ लज्जामित्ति, का एसा वधूपुत्ती!, भण्णति-पढमे वासहरे मत्तुणा जोणिभेए कते तच्छोणियेण पोंतिं खरंडियं स्सुरुदये सयणो से परितुट्ठो पडलकं तं तं पोतिं घरंघरेण गुरुजणपुरतो परिवंदइ दंसेति य, णज्जते रुहिरदंसणातो अक्खयजोणित्ति, बीभत्सो--विकृतस्तस्य लक्षणं ' असुइ ' गाहा (*७४--१३८) कुणिमस्वरूपात् असुचिसरीरं दुर्दक्षं च विकृतप्रदेशत्वात् तत्र निर्वेदं गच्छति, कथं?, उच्यते, विकृतप्रदेशत्वात् यद्वा गंधमाघ्राय अविहिंसकलक्षणः, तत्र उदाहरणं-' असुइ ' गाथा (*७५--१३८) कंठ्या, हासरसलक्षणं ' रूववय ' गाहा (*७६--१३८) रूवादिंविवरीयकरणतो मनःप्रहर्षकारी हासो उप्पज्जइ, प्रत्यक्षलिंगमित्यर्थः, तत्थ उदाहरणं ' पासुत्त ' गाहा (*७७--१३९) हीत्येतत् हास्यादौ कंदर्पवचनं, सेसं कंठ्यं । इदाणिं करुणरसलक्षणं-' पियविप्पयो ' गाहा (*७८--१३९) सोगो मानसो विलवितेति वियोगे विलापः प्रम्लाणत्ति निस्तेजः, कलुणे उदाहरणं 'पज्झाणकिलामि'

॥ ४८ ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ४९ ॥

गाहा (*७९–१३९) किलामियर्य-विच्छायमांसोपचितं पज्झाणं अतिचिंतापवियसुकतभेदेनांगतं च प्रकर्षेण प्लुता अच्छी अंसुपूर्णा बहुवारा–बहुशः तस्येति प्रियजनस्य वियोगे इत्यर्थः। इदाणिं पसंतरसलक्खणं 'णिद्दोस' गाहा (*८०–१३९) हिंसानृतादिदोसरहितस्य क्रोधादित्यागेन प्रशान्तस्य इंद्रियविषयविनिवृत्तस्य स्वस्थमनसः हास्यादिविकारवर्जितः अविकारलक्षणः प्रशान्तो रसो भवति, प्रशान्तरसे उदाहरणं 'सब्भाव' गाहा (*८१–१३९) सब्भाव इति निर्विकारता धर्मार्थं न लोकनिमित्तं निव्वियारस्य व्याक्षेपादिवार्जितः इंद्रियादिदोसेसु उवसंतो कोधादिसु पसंतो पसन्नमणो चिंतेंतो जो सो सम्मदिट्ठी, हीत्यत्यर्थं मुनेः प्रशान्तभावातिशयप्रदर्शने पीवरा महती श्री शोभा महाश्रीक इत्यर्थः, 'एते णव कव्वरसा' (*८२-१३९) बत्तीसं जे सुत्तस्स दोसा ते बत्तीससुत्तदोसा जओ बत्तीसदोसवइकरेण एते उप्पन्ना, कथं?, उच्यते, जधा वीरो रसो संगामादिसु हिंसाए भवति तह तवसंजमकरणादिसुवि संभवईति । एवं सुभवइकरेण उप्पज्जंति, उदाहरणगाथासु य जहाभिहिया जाणितव्वा, सुद्धत्ति कश्चिद्गाथासूत्रबंधः अन्यतमरसेनैव सुद्धेन प्रतिबंधः, कश्चिन्मिश्रः द्विकादिसंयोगेन, गतं णवणामं। इदाणिं दसणामं–'से किं तं दसनामे?,' दसणामे पण्णत्ते, दसविहे गोणे' इत्यादि (१३०-१४०) गुणाज्जातं गौणं, क्षमते इति क्षमण इत्यादि, णोगोण्णो अयथार्थं अकुंतः सकुंत इत्यादि, आदिपदमादाणिदं चूलिकेत्यादि, विपरीतः पक्षः प्रतिपक्षः असिवा सिवा इत्यादि, लवतीति लाबुं आदानार्थेन वा युक्तं ला आदाने इति लाबुं तं अलाबुं भण्णति, सुभवर्णकारी सोभयतीति सुंभकस्तथापि कुसुंभकमित्युच्यते, यथावस्थितं अचलितभाषकं विपरीतभाषकं ब्रूते असत्यवादिनं, अहवा अत्यर्थं लवनं विब्रुवानं तं विपरीतभाषकं ब्रूते असत्यवादिनमित्यर्थः, प्रधानभावः प्राधान्यं बहुत्वे वा प्राधान्यं 'असोगवणे' त्यादि, जो पितुपितामहनाम्नोत्क्षिप्त उन्नमित उच्यते,

दशनामाधिकारः

॥ ४९ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

सरीरैकदेशेन अवयवनाम, संयोगो युक्तिभावः, स चतुर्विधः द्रव्यादिकः, सचित्ते गोण्यादि, अचित्ते छत्रादि, मिश्रे हलादिकः, खेत्तकालभावजोगा जहा सुत्ते इति ॥ इदाणिं पमाणणामं चउव्विहं णामादिकं, ठवणप्रमाणं कट्ठकम्मादिकं, अहवा सत्तविहणक्खत्तादिकं, जीविया णाम जस्स जायमित्तं अवच्चं मरति सा तं जायमित्तं चेव अवगरादिसु छड्डेइ तं चेव णामं कज्जइ ततो जीवति, अभिप्पायणामं ण किंचि गुणमवेक्खति किंतु यदेव यत्र जनपदे प्रसिद्धं तदेव तत्र जनपदाभिप्रायनाम, जनपदसंववहार इत्यर्थः, सेसा णक्खत्तादिया कंठ्या । इदाणिं भावप्पमाणणामं चतुर्विधं सामासिकादिकं, येषां पदानां सम्यग् परस्पराश्रयभावेनार्थः आश्रीयते स समासः ततो जातो अत्थो सामासितो, योऽर्थः येनोपलक्ष्यते स तस्य हेतुकः तद्धितमुच्यते, तद्धितातो अत्थे जाते तद्धितिए, भू सत्तायां इत्यादि धातुभावेनार्थो जातः धातुए भन्नति, अभिधाणक्खराणिच्छियत्थोवलद्धिप्पगारेण उच्चरिज्जमाणो णिरुत्तातो अत्थो जातो णेरुत्तिओ, एतं चउव्विहंपि सभेदं सउदाहरणं जहा सुत्ते तहेव कंठ्यं वत्तव्वं, णामंति मूलदारं गतं । इदाणिं पमाणंतिदारं (१३१--१५१) प्रमीयत इति प्रमाणं प्रमितिर्वा प्रमाणं प्रमीयतेऽनेनेति प्रमाणं, तं दव्वखेत्तकालभावभेदतो चतुव्विहं, अण्णोअण्णपरिमाणसंखाए जं ठितं प्रमाणं तं पदेसणिप्फण्णं, विविहो विसिट्ठो वा भंगः विभंगः, भंगोत्ति विकप्पो, जं ततो पमाणं णिप्फण्णं तं विभागणिप्फण्णं, इमं मागहं धण्णमाणप्पमाणं-ओमत्थहत्थमियं जं धन्नप्पमाणं सा भवे असती, जं धन्नप्पमाणे असतिपरिछेदयो असई, मुत्तोली-मोट्टा हेट्ठुवरिसंकडा ईसि मज्झे विसाला, कोट्ठिता मुरवो, दोछप्पण्णपलसयणीप्पज्जमाणं, तीसे चउसट्ठिभागो चतुसट्ठिया, ते य चउरो पला, माणीए चेव बत्तीसिया, एवं सोलसियादयोवि, करोडागिती विसालमुही जा कुंडी सा करोडी भण्णति, अद्धकुंडी वा करोडी, सेसं कंठ्यं, तुलापमाणेणाणुमिज्जइ एत्तियमेत्तंति तं च, आह-‘ करिसादि ’ कंठं, मयं

अत्र ‘प्रमाण’ अधिकार: कथयते

प्रत सूत्रांक [१३१-१३४] गाथा ||८३-९९||

दीप अनुक्रम [२३५-२६९]

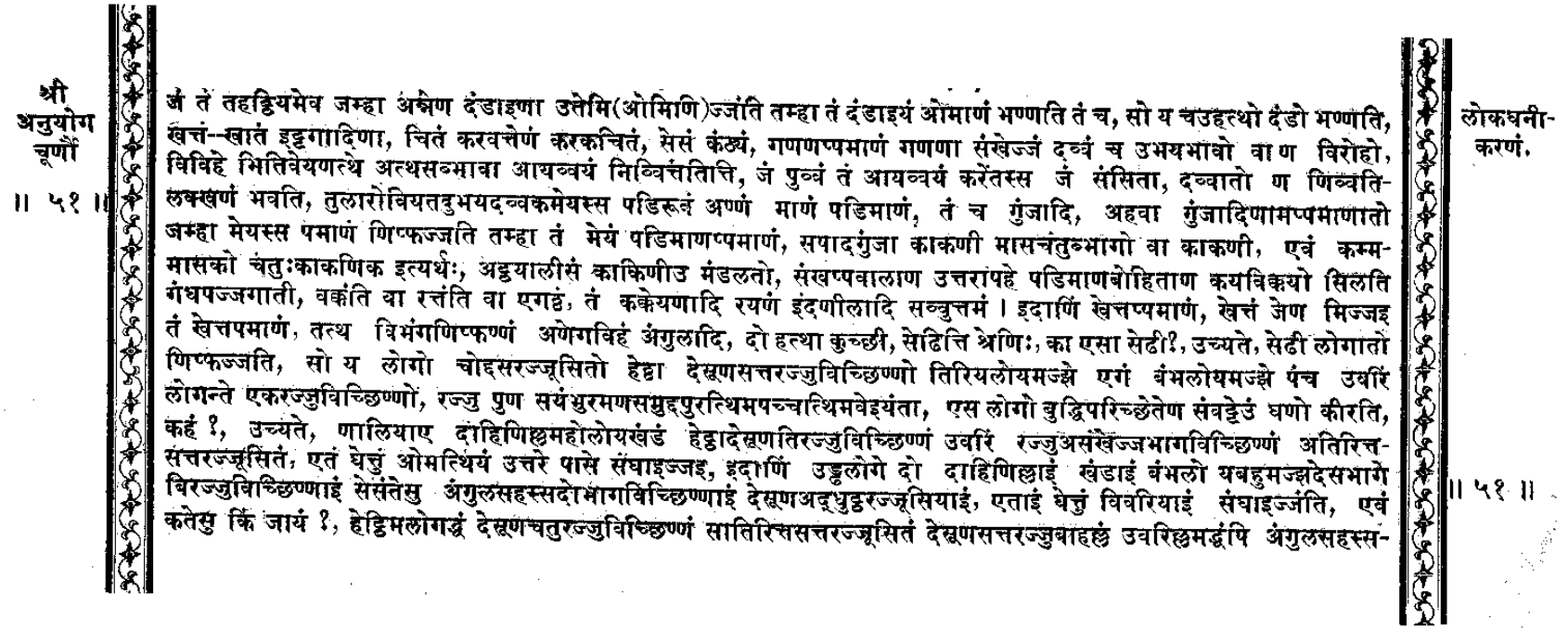

जं तं तहट्ठियमेव जम्हा अन्नेण दंडाइणा उत्तेमि(ओमिणि)ज्जंति तम्हा तं दंडाइयं ओमाणं भण्णति तं च, सो य चउहत्थो दंडो भण्णाति, खत्तं--खातं इट्टगादिणा, चितं करवत्तेणं करकचितं, सेसं कंठ्यं, गणणप्पमाणं गणणा संखेज्जं दव्वं च उभयभावो वा ण विरोहो, विविहे भितिवेयणत्थे अत्थसब्भावा आयव्वयं निव्विंत्ततित्ति, जं पुव्वं तं आयव्वयं करेंतस्स जं संसिता, दव्वातो ण णिव्वति-लक्खणं भवति, तुलारोवियतदुभयदव्वकमेयस्स पडिरूवं अण्णं माणं पडिमाणं, तं च गुंजादि, अहवा गुंजादिणामप्पमाणातो जम्हा मेयस्स पमाणं णिप्फज्जति तम्हा तं मेयं पडिमाणप्पमाणं, सपादगुंजा काकणी मासचंतुब्भागो वा काकणी, एवं कम्म-मासको चतुःकाकणिक इत्यर्थः, अट्ठयालीसं काकिणीउ मंडलतो, संखप्पवालाण उत्तरापहे पडिमाणबोहिताण कयविक्कयो सिलति गंधपज्जगाती, वक्कंति वा रत्तंति वा एगट्ठं, तं कक्केयणादि रयणं इंदणीलादि सव्वुत्तमं । इदाणिं खेत्तप्पमाणं, खेत्तं जेण मिज्जइ तं खेत्तपमाणं, तत्थ विभंगणिप्फण्णं अणेगविहं अंगुलादि, दो हत्था कुच्छी, सेढित्ति श्रेणिः, का एसा सेढी?, उच्यते, सेढी लोगातो णिप्फज्जति, सो य लोगो चोद्दसरज्जूसितो हेट्ठा देसूणसत्तरज्जुविच्छिण्णो तिरियलोयमज्झे एगं बंभलोयमज्झे पंच उवरिं लोगन्ते एकरज्जुविच्छिण्णो, रज्जु पुण सयंभुरमणसमुद्दपुरत्थिमपच्चत्थिमवेइयंता, एस लोगो बुद्धिपरिच्छेतेण संवट्टेउं घणो कीरति, कहं ?, उच्यते, णालियाए दाहिणिल्लमहोलोयखंडं हेट्ठादेसूणतिरज्जुविच्छिण्णं उवरिं रज्जुअसंखेज्जभागविच्छिण्णं अतिरित्त-सत्तरज्जूसितं, एतं घेत्तुं ओमत्थियं उत्तरे पासे संघाइज्जइ, इदाणिं उड्ढलोगे दो दाहिणिल्लाइं खंडाइं बंभलोयबहुमज्झदेसभागे बिरज्जुविच्छिण्णाइं सेसंतेसु अंगुलसहस्सदोभागविच्छिण्णाइं देसूणअद्धुट्ठरज्जूसियाइं, एताइं घेत्तुं विवरियाइं संघाइज्जंति, एवं कतेसु किं जायं ?, हेट्ठिमलोगद्धं देसूणचतुरज्जुविच्छिण्णं सातिरित्तसत्तरज्जूसितं देसूणसत्तरज्जुबाहल्लं उवरिल्लमद्धंपि अंगुलसहस्स-

लोकघनीकरणं.

॥ ५१ ॥

प्रत सूत्रांक [१३१-१३४] गाथा ||८३-९९||

दीप अनुक्रम [२३५-२६९]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ५२ ॥

अंगुलमानादि ॥ ५२ ॥

दोभागहियं तेरज्जुविच्छिण्णं देसूणसत्तरज्जूसियं पंचरज्जुवाहल्लं, एयं घेत्तुं हेट्ठिल्लस्स अद्धस्स उत्तरे पासे संघाइज्जइ, जं तं अहेखंडस्स सत्तरज्जुअहियं उवरि घेत्तुं उत्तरिखंडस्स जतो बाहल्लं ततो उड्डायतं संघाइज्जइ, तहावि सत्तरज्जुतो ण पूरति, ताहे जं दक्खिणिल्लखंडं तस्स जमहियं बाहल्ले तो तस्सद्धं छित्ता उत्तरतो बाहल्लि संघाइज्जा, एवं किं जायं ?, वित्थारतो आयामओ य सत्तरज्जुबाहल्लतो रज्जुते असंखभागेणाहियाउ छरज्जू, एवं एस लोगो ववहारतो सत्तरज्जुघणो दिट्ठो, एत्थं जं ऊणातिरित्तं तं बुद्धीए जधा जुज्जइ तहा संघातेज्जा, सिद्धंते य जत्थ जत्थ अविसिट्ठं सेढीए गहणं तत्थ तत्थ एताते सत्तरज्जुआयताए अवगंतव्वं, पयरस्सवि एयस्स चेव सत्तरज्जुगहणं, लोकस्स पयरीकते तस्स तुल्लपदेसत्तणओ ण विसेसगहणं कज्जति, अलोगे अतिभावप्पमाणं आकतित्तणतो अलोगप्पमाणं भवति। 'से किं तं अंगुले' इत्यादि, अणवट्ठियमातंगुलं, पुरिसप्पमाणाणवट्ठियत्तणतो, कहं ?, उच्यते, जतो हु समाणवट्टीकालवेक्खत्तणतो, जे जत्थ काले पुरिसा तेसिं जं अंगुलं तं आयंगुलं, ववहारियपरमाणुउस्सेधातो जं णिप्फण्णं तं उस्सेहंगुलं, तं च अवट्ठियमेगं, उस्सेहंगुलातो कागणिरयणस्स कोडीप्पमाणमाणियं, ततो कोडीतो वद्धमाणसामिस्स अद्धंगुलप्पमाणमाणियं, ततो उ पमाणातो जस्संगुलस्स पमाणमाणिज्जइ तं पमाणंगुलं, अट्ठसयअंगुलेण जं पमाणं णिप्फाईज्जइ तं तेणप्पमाणेण णिप्फाइयज्जत्तणउ प्पमाणजुत्ते पुरिसे भण्णति, दोणीए जलदोणभरणरेयणमाणुवलंभाओ माणजुत्ते भवति, वइरमिव सारपोग्गलोवचियदेहे तुलारोविते अद्धभारुम्मिते ओमाणजुत्ते भवति, चक्किमाति उत्तमा ते णियमा तप्पमाणजुत्ता भवंति, जतो भण्णंति ' माणुम्माणे गाधा (*९६-१५६) करादिसु संखादिया लक्खणा मसतिलगादिया वञ्जणा अप्पकोधादिया गुणा, सेसं कंठ्यं । उत्तिमज्झिमाहमपुरिसे दंसयति-'होंति पुण' गाहा (*९७--१५७) एक्केक्कभेददंसगो पुणसद्दो, अट्ठ-

प्रत सूत्रांक [१३१-१३४] गाथा ||८३-९९||

दीप अनुक्रम [२३५-२६९]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ५३ ॥

आत्मा-ङ्गुलं

सतंगुलप्पमाणतो जे' हीणा वा ' गाथा (*९८--१५७) सत्त्वमेव सारः सत्त्वसारः अथवा देहे सुभपोग्गलोवचयत्वं सारः एवमा-दिपुरिसाणं आयंगुलं, वावी चतुरस्सा, वृत्ता पुक्खरणी पुष्करसंभवातो वा, सारणी रिजु दीहिया सारणी एवं वंझा गुंजालिया सर-मेगं तीए पंतिट्ठीया दो सरातो सरं कवाडयेण उदगं संचरइत्ति सरपंती, विविधं रुक्खलतोवसोभितं कदलादिपच्छण्णघरेसु य वीसंभियाण रमणट्ठाणं आरामो, पत्तपुप्फफलछायोवगादिरुक्खुवशोभितं बहुजणविविहवेसुण्णयमाणस्स भोयणट्ठा जाणं उज्जाणं, इत्थीण पुरिसाण वा एगे पक्खे भोज्जं जं तं काणणं, अहवा जस्स परतो पव्वयमडवी वा सव्ववणाण य अंते वणांतं काणणं, शीर्ण्णो वा, एगजातियरुक्खेहि वणं, अणेगजातीएहि उत्तमेहि य वणसंडं, एगजादियअणेगजातियाण वा रुक्खाण पंती वणराई, अहो संकुडा उवरि विशाला फरिहा समखाता खाइया अंतो पागाराणं अंतरं, अट्ठहत्थो रायमग्गो चरिया, दुण्हं दुवाराण अंतरे गोपुरं, तिको णामागासमूमि तिपहसमागमो, संघाडगं तिपहसमागमो चेव, तियचतुरंसं चतुप्पहसमागमो चेत्र चच्चरं छप्पह-समागमं वा एवं छच्चरं भण्णति, देउलं चतुमुहं, महतो रायमग्गो महाप्पधो इतरे पहा, सत् सोभणाविहु जं भयंते पोत्थगवायणं वा जत्थ सामन्नतो वा मणुयाणं अच्छणट्ठाणं सभा, जत्थुदकं दिज्जति सा पवा, बाहिरालिंदो सुकिधी अलिंदो वा सरणं, गिरि-गुहा लेणं पव्वयस्सेगदेसलीणं वा लयणं, कप्पाडिआ वा जत्थ लयंति तं लयणं, भंडं-भायणं तं च मून्मयादि मात्रो-मात्रायुक्तो सो य कंसभायणादि भोयणभंडिका, उवकरणं पुण अणेगविहं कडगपिडगसुप्पादिकं, अहवा उवकरणं इमं सकडरहादियं, तत्थ रहोत्ति जाणरथो संगामरथो य, संगामरहस्स कडिप्पमाणा फलयवेइया भवति, जाणं पुण गंडिमाईयं, गोल्लविसए जंपाणं द्विहत्थमात्रं चतुर-स्रं सवेदिकमुपसोभितं, जुग्गयं लाडाणं थिल्ली जुगयं, हस्तिन उपरि कोल्लरं गिलतीव मानुषं गिली लाडाणं जं अडपल्लाणं तं अण्ण- ॥ ५३ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१३१-१३४] गाथा ||८३-९९||

दीप अनुक्रम [२३५-२६९]

विसअेसु गिल्ही भण्णति, उवरिं कूडागारच्छादिया सिविया, दीहो जंपाणविसेसो पुरिसस्स स्वप्रमाणावगासदाणत्तणओ संदमाणिं, लोहेत्ति कवेली, लोहकडाहोत्ति लोहकडिल्लं, एते आयंगुलेणं मविज्जंति, किं च--अज्जकालियाइं च जोयणाइं तं तिविहं सूतिमादि, पदेशतो अप्पबहुत्तं, सेसं कंठ्यं, गतं आयंगुलं । इदाणिं उस्सेहंगुलं, तं अणेगविहंति भणतो णणु विरोधो, आचार्याह--नो भणामो उस्सेहंगुलमणेगविधं, किंतु उस्सेहंगुलस्स कारणं अणेगाविधं पण्णत्तं, जतो भण्णति ' परमाणु ' गाथा (*९९--१६०) से ठप्पेत्ति स्वरूपव्यापने न स्थापनीयः, छेदो दुधाकरणं, भेदो अणेगधा फुडणं, सूक्ष्मत्वात् न तत्र शस्त्रं क्रमते, पुक्खलसंव्वट्टगस्स इमा परूवणा ' वद्धमाणसामिणो णिव्वाणकालातो तिसट्ठीए वाससहस्सेसु ओसप्पिणीए पंचमछट्ठारगेसु ओसप्पिणीए य एक्कवीसाए वाससहस्सेसु वीतिक्कंतेसु एए पंच महामेहा भविस्संति, तंजहा--पुक्खलसंवट्टए उदगरसे बितिए खीरोदे ततिए घतोदे चउत्थे अमीतोदे पंचमे रसोदे, तत्थ पोक्खलसंवट्टइए इमस्स भरहखेत्तस्स असुभाणुभावं पुक्खलंति संवट्टेति--निनाशयतीत्ति पुष्कल-संवट्टए भन्नति, पुष्कलं वा-सव्वं भरहखेत्तं संवट्टेत्ता वरिसतीत्ति पुष्कलसंवट्टते, उदउल्लेति--उदगेन उल्ले न भवति, तधा ण यावि केणइ घातित्ति तत्र गच्छतो विघातो न जायते, सोताणुकूलं ण भवति, परियावज्जणं पर्यायान्तरगमनं, ण उल्लागमनादि उदगावत्तादिणा भावेण प्रशमतीत्यर्थः, अणंताणं सुहुमपरमाणूण समुदायो ववहारिए परमाणू भवति, अणंताणं च ववहारिय-परमाणूणं उस्सेधतो जा णिप्फण्णा सा उसण्हसण्हिया भवति, उवरिमसण्हियाहि अहेक्खतो वा उप्पावल्लतो सण्हा उसण्हसण्हिया, उद्ध-रेणुमादि अहेखतो सण्हसण्हिया, उद्धमहस्तिर्यक् स्वतः परतो वा प्रवर्त्तेत इति उद्धरेणुः, पुरस्तदादि वायुना प्रेरितः त्रस्यति-गच्छ-तीति तसरेणू, रहाहिना गच्छता उद्घातो यः स रथरेणु, रयणप्पभाए जं भवधारणिज्जं उत्तरवेउव्वियं तं सक्करपभादिसु दुगुणं

॥ ५४ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१३१-१३४] गाथा ||८३-९९||

दीप अनुक्रम [२३५-२६९]

णेयं जाव महातमाए भवधारणिज्जं पंचधणुसया उत्तरवेउव्वियं धणुसहस्सं, एयं उक्कोसं, जहण्णं पुण सव्वेसु भवधारणिज्जं अंगुलअसंखभागो, उत्तरवेउव्विए अंगुलस्स संखेज्जइभागो, भवणवई दसविहा इमे ‘असुराणागकुमारा (सुवण्णा) विज्जू अग्गी य दीव उदही य । दिसवायथणियणामा भवणवई दसविहा देवा ॥ १ ॥’ तेसिं देवाणं सरीरोगाहणा भवधारणा उत्तरा य, तत्थ असुरकुमाराणं भवधारणा जहण्णा अंगुलअसंखभागो उक्कोसो सत्त रयणी, उत्तरवेउव्विया जहण्णा अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो उक्कोसा जोयणलक्खं, एवं णागादियाणवि णवण्हं, णवरं उत्तरवेउव्विया उक्कोसा जोयणसहस्सं, गतं उस्सेहंगुलं । इयाणिं पमाणंगुलं ‘एगस्स णं’ इत्यादि, अण्णोण्णकालुप्पण्णाणवि चक्कीणं कागणिरयणस्स अवट्ठितेगप्पमाणदंसणत्तणतो एगमेगग्गहणं, सुव्वण्णप्पमाणं इमं–चत्तारि मधुरतिणफला एगो सेतसरिसवो, ते सोलससरिसवा धन्नमासफलं एगं, दो धन्नमासफला एगा गुंजा, पंच गुंजातो एगो सोलसकम्ममासगो सुवण्णो, अट्ठसोवण्णियं काकणीरयणं, एतं सुवण्णप्रमाणं जं भरहकाले मधुरतिणफलादिपमाणं ततो आणेतव्वं, जतो सव्वचक्कवट्टीणं काकणीरयणं एगप्पमाणंति, अस्सिंति वा कोडित्ति वा एगट्ठा, तस्स विक्खंभोत्ति वित्थारो, तस्स त समचतुरंसभावत्तणतो सव्वकोडीणायामविक्खंभभावत्तणतो विक्खंभो चेव भणितो ण दोसो. तं च उस्सेहंगुलं वीरस्स अद्धंगुलंति, कहं ?, उच्यते, जतो वीरो आदेसंतरतो आयंगुलेण चुलसीतिमंगुलविद्धो, उस्सेहतो पुण सत्तसट्ठसतं भवति, अतो दो उस्सेहंगुला वीरस्स आतंगुलं, एवं वीरस्स आयंगुलातो अद्धं उस्सेहंगुलं दिट्ठं, जेसिं पुण वीरो आयंगुलेण अट्ठुत्तरमंगुलसतं तेसिं वीरस्स आयंगुले एगं उस्सेहंगुलं उस्सेहंगुलस्स य पंच णवभागा भवंति, जेसिं पुण वीरो आयंगुलेण वीसुत्तर-

॥ ५५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१३४-१३७] गाथा ||९९-१०३||

दीप अनुक्रम [२६८-२७४]

मंगुलसयं तेसिं वीरस्स आयंगुलेणेगमुस्सेहंगुलं उस्सेहंगुलस्स य दो पंचभागा भवंति, एवमेतं सव्वं तेराशियकरणेण दट्ठव्वं, तं चेव उस्सेहंगुलं सहस्सगुणं पमाणंगुलं भवति, कहं ?, उच्यते, भरहो आयंगुलेण वीसुत्तरमंगुलसतं, तं च सपादं धणुयं उस्सेहंगुलमाणेण पंचधणुसते लभामि तो एगेण धणुणा किं लभिस्सामि ?, आगतं चत्तारि धणुसताणि सेढीए, एवं सव्वे अंगुलजोयणादयो दट्ठव्वा । एगंमि सेढिप्पमाणंगुले चउरो उस्सेहंगुलसता भवंति, तं च पमाणंगुलं उस्सेहंगुलप्पमाणअद्धातियंगुलवित्थडं तो सेढीए चउरो सता अट्ठाइयंगुलगुणिता सहस्समुस्सेहंगुलाण, तं एवं सहस्सगुणं भवति, जे यप्पमाणमंगुलातो पुढवादिप्पमाणा आणिज्जंति ते परमाणंगुलविष्कंभेणं आणेयव्वा, ण सूइयंगुलेण, रयणकंडाइया कंडा भवणप्पत्थडाणि रयणपत्थडंतरं, सेसं कंठ्यं । 'से किं तं कालप्पमाणे' त्यादि (१३४-१७५) प्रदेश इति कालप्रदेशः, स च समयः, तेसिं पमाणं पदेसणिप्फण्णं कालप्पमाणं भण्णति, एगसमयठिइआदिकं, विविधो विसिट्ठो वा भागो विकप्पो तस्स पमाणं विभागणिप्फण्णं कालप्पमाणं, तं च समयावलिकादिकं, जतो सव्वे कालप्पमाणा समयादिया अतो समयपरूवणं करेति-'से किं तं समए' इत्यादि (१३७-१७५) यद् द्रव्यं वर्णादिगुणोपचितं अभिनवतं तरुणं बलं च-सामर्थ्यं स यस्यास्ति स भवति बलवं यौवनस्थः युगवं यौवनस्थोऽहमित्यात्मानं मन्यते यः भवति जुवाणो सकराहंति--सकृत् अहवा सकराहंति-संववहारात् युगपत् स्याद् भवेतेत्यर्थः, अथवा स पट्टः पटसाटको वा तेन तुन्नागदारकेन कराभ्यां ओसारेति पाटयति स्फाटयतीत्यर्थः, कहं ?, भन्नति, परमाणूणमणंताणं परोप्परसिणेहगुणपडिबद्धाणं संघातो भण्णति, संघातः समिति समागम एते एगट्ठा, अहवा इमो विसेसो-तेसिणं अणंताणं संघायाणं जोगो सो समुदायो, जम्हा समुदायिणो अण्णोण्णाणुगता तम्हा अण्णोण्णाणुगतत्तोवंहणत्थं समिती भण्णति, एगदव्वं पडुच्च समानेन सव्वे परिणमंतीति समीती, एवं एगदव्वाणि-

॥ ५६ ॥

अत्र 'समय' अधिकार: वर्णनं क्रियते

व्यक्तिसमागमेण वा भणियव्वंति, समयस्स सुहुमत्तणतो जहा क्रियाविसेसो से णत्थि कोई, एसट्ठे, नो, कम्हा ?, भण्णति--एत्तो सुहुमतराए समएत्ति, असंखेज्जसमयसमुदयो चेव आवलियप्पमाणं अणुरूवसमितित्ति भण्णति, ते चेव आवलिववदेसत्ता समागमा भण्णति, ससं पूर्ववत्, थोवे सत्तुस्सासा सत्त थोवा य लवे लवो सत्तथोवेण गुणिते जातो अगुणपन्नासा मुहुत्ते सत्तत्तीरं लवा ते अउणपण्णासेण गुणिया जातं इमं-तिन्नि सहस्सा सत्त सया तेहत्ता, ‘से किं तं उवमिते’ इत्यादि, अंतोमुहुत्तादिया जाव पुव्वकोडीएत्ति, एतानि धर्म्मचरणकालं पडुच्च णरतिरियाण आउपरिमाणकरणे उवजुज्जंति, णारगभवणवंतराणं दसवरिससहस्सादि उवजुज्यंति, आउयचिंताए तुडियादिया सीसपहेलियंता एते प्रायसो पुव्वगतेसु जविएसु आउयसेढीए उवउज्जंति, अन्यत्र यदृच्छातः एताव ताव गणियं अंकट्ठवआए, वितियणागारो सुहमुहुच्चारणत्थं, जाण ज्ञानविषयोऽपि, अहवा एतावत्ति य अंकट्ठवणा जावयं अंकट्ठवणट्ठाणा दिट्ठा ताव गणितज्ञानमपि दृष्टं तुडिगादि सीसपहेलियंतं, उवमाणं जं कालप्पमाणं ण सक्कइ घेत्तुं तं उवमियं भवति, धण्णपल्ल इव तेण उवमा जस्स तं पल्लोवमं भण्णति, अह दस पल्लकक्कोडाकोडीतो एगं सागरोवमं, तस्स पलियस्स भागो पलितं भण्णति तेण उवमा पलितोवमं, सागरो इव जं महाप्रमाणं तं सागरोवमं, वालग्गाण वालखंडाण वा उद्धारत्तणतो उद्धारपलितं भण्णति, अद्धा इति कालः सो य परिमाणतो वाससयं वालग्गाण खंडाण वा समुद्धरणतो अद्धापलितोवमं भण्णति, अहवा अद्धा इति आउद्धा सा इमातो णेरइयाण आणिज्जति अतो अद्धापलितोवमं, अणुसमयखेत्तपल्लपदेसावहारत्तणतो खेत्तपलितोवमं, ‘ से किं तं उद्धारपलितोवमे ’ त्यादि (१३८–१८०) वालग्गाण सुहुमखंडकरणत्तातो सुहुमं, बादरवालग्गववहारत्तणतो व्यवहारियं, ववहारमेत्तत्तणतो वा ववहारियं, ण तेण प्रयोजनमित्यर्थः, से उप्पेत्ति चिट्ठतु ता ण परूविस्सं, परिखेवेणं तिण्णि जोयणा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१३८-१४०] गाथा ||१०३-११२||

दीप अनुक्रम [२७४-२९२]

सतिभागा, संमट्ठेति कण्णसमं भरितं संन्निचितेत्ति अतीव संघणणोपचतमिता इत्यर्थः, कुत्थेज्जेति णो कुत्थेज्जा णिस्सारीभवेज्जत्तिवुत्तं भवति, उदगेण वा णो कुथिज्जा, विस्ससापरिणामेण प्रकर्षेण स्फुटं प्रतिविध्वंसणं, णो प्रतिषेधे, पूतिः—दुर्गन्धः देहेति वालाग्रस्यात्मभावः तं वालग्गं पूतिदेहत्वेन हव्वं भवे, एवं भणितप्पगारेहिं तं वालग्गं णो आगच्छेज्जा इत्यर्थः, ‘ खीणे ’ इत्यादि एगट्ठिया, अहवा थोवावसेसेसु वालग्गेसु खीणेत्ति भण्णति, तेसुवि उद्धितेसु णीरए भण्णति, सुहुमवालग्गावयवेसु विउतेसु णिल्लेवे भन्नति, एवं तिहिं पगारेहिं निट्ठिते भण्णति, एवं रसवतिदिट्ठंतं सामत्थतो भावेयव्वं, ‘ ते णं वालग्गा ’ इत्यादि, ते वालग्गा असंखखंडीकता, किंपमाणा भवंति ?, उच्यते, जत्थ पोग्गलदव्वे छउमत्थस्स विसुद्धचक्खुदंसणदिट्ठी अवगाहति तस्स दव्वस्स असंखभागखंडीकतस्स असंखेज्जतिमखंडप्रमाणा भवंति, अहवा तेसिं वालखंडाण खेत्तोगाहणातो पमाणमाणिज्जति—सुहुमपणगजीवस्स जं सरीरोगाहणखेत्तं तं असंखेज्जगुणं जत्तियं भवति तत्तियखेत्ते एगं वालग्गखंडं ओगाहति, एरिसा ते वालग्गखंडा, पमाणेत्ति बायरपुढविक्काइयपज्जत्तसरीरप्रमाणा इत्यर्थः, ‘ उद्धारसमय ’ त्ति प्रतिसमयं वालग्गखंडुद्धरणेहिं पल्लोवममाणितं, तेहिवि सागरोवमं, तेसु अद्धातिज्जेसु सागरोवमेसु जतिया उद्धारसमया तत्तिया सव्वग्गेणं दुगुणदुगुणवित्थरा दीवोदहिणो भवंति, तत्थ चोदक आह-णणु वालग्गा असंखखंडप्रमाणा एव दीवोदहिणो, जतो वालखंडेहिं चेव समयप्पमाणमाणितं किं उद्धारसमयग्गहणेणं ?, आचार्य आह-एगाहसंवट्टियवालग्गखंड-कतप्पमाणा सव्वे दुगादिया वालग्गा कारिया ते पुण अणंतपदेसा खंडा वालग्गखंडणेण विभागत्तणतो अनिश्चितं प्रमाणं भवति, समयाणं पुण अविभागत्तणतो निश्चितं प्रमाणं, समयग्रहणं अन्योऽन्यसिद्धिप्रदर्शनार्थं वा, ‘ से किं तं अद्धापलितोवमे ’

॥ ५८ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१३८-१४०] गाथा ||१०३-११२||

दीप अनुक्रम [२७४-२९२]

इत्यादि, जोगेण कम्मपोग्गलाण गहियाणं णाणावरणादिसरूवेण च परिणामियाणं जं अवत्थाणं सा ठिती, तहावि आउकम्मपोग्गलाणुभवणं जीवणमितिकाउं आउकम्मुदयातो जा ठिती सा इह अधिकता इति, ‘ अप्पज्जत्ता णेरइ ’ त्यादि, णारगा करणपज्जत्तीए अप्पज्जत्ता भाणियव्वा, ते य अंतमुहुत्तं भवंति, लद्धिं पडुच्च णियमा ते पज्जत्ता एव, अपज्जत्तकालो अंतमुहुत्तं, तं सव्वाऊतो अवणीयं, सेसाट्ठिती जा सा पज्जत्तकालो सव्वो भाणेयव्वो, सव्वे णारगदेवा करणपज्जत्तीए अपज्जत्ता भाणियव्वा, जम्हा लद्धिं पडुच्च नियमा पज्जत्ता, एवं गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरियमणुया य जे असंखेज्जवासाउआ तेऽवि करणपज्जत्तीए अपज्जत्ता दट्ठव्वा, सेसा जे तिरियमणुया ते लद्धिं पडुच्च पज्जत्ता अपज्जत्ता य भाणियव्वा, शेषं माणुम्माणसूत्रे स्फुटं तस्मादेवानुसरणीयमिति, ‘से किं तं खेत्तपलिओवमे’ त्यादि, ववहारियं खेत्तपलिओवमं कंठ्यं, ‘से किं तं सुहुमखेत्तपलिओवमे’-त्यादि, एतंपि खेत्तसरूवेण कंठ्यं वत्तव्वं, जावइतेहिं वालग्गेहिं अप्फुण्णा वा अप्फुण्णावा, अप्फुण्णत्ति व्याप्ता आक्रान्ता इत्यर्थः, इयरे अणप्फुण्णा, जोयणप्पमाणे वट्टे खेत्ते सव्वे पदेसा घेत्तव्वा, एवं परूविते तत्थ चोदए पण्ण इत्यादि, कहं ?, जाव एगस्स भवे परिमाणं’ पुनरपि चोदक आह--जति जोयणप्पमाणे खेत्तपल्ले सव्वागासपदेसग्गहणं, तप्पदेसाण य सट्ठाणे समयावहारेण खेत्तपलितोवमाणतो किं सुहुमखेत्तपलितोवमस्स वालग्गेहिं णिरत्थयं परूवणा कता ?, आचार्य आह--वुत्तं दिट्ठिवाते खेत्तपलितोवमसागरोवमेहिं दव्वप्पमाणमाणिज्जइत्ति, किं च-जे वालखंडेहिं पदेसा अप्फुण्णा अणुप्फुण्णा वा तेहिंवि पत्तेयं दव्वप्पमाणमाणिज्जइत्ति अतो वालग्गपरूवणा कता, ण दोसो, ‘ कतिविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता ’ इत्यादि (१४१--१९३) णेरइया भवणवासी वाणमंतर पुढविआउतेउवाउ पत्तेयं विगलातियं असण्णि सण्णि पंचिंदिया सह संमुच्छिमेहिं मणुया जोतिसिया वेमाणिया एते सव्वे

द्रव्यस्य जीव-अजीवादि भेदा: प्रदर्शयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

असंखेज्जा भाणियव्वा, वणस्सइ बादरा सुहुमा णियोतीया अणंता सिद्धा भाणियव्वा, ‘ अजीवदव्वा णं भंते! ’ इत्यादि कंठ्यं जाव धम्मत्थिकाय, इत्यादि, कंठ्यं, जाव धम्मत्थिकाए इत्येतत्, पर आह-किमेगं धम्मदव्वंति धम्मत्थिकाएण उवचरियं ?, उच्यते णयाभिप्पायतो, णेगमो संगहितो संगहं पविट्ठो असंगहो ववहारं अतो संगहणयाभिप्पाएण ‘एगं णिच्चं णिरवयय’ गाहा, धम्मत्थिकातेत्यनेन सव्वमेवावयवि दव्वं एगवयणेण निद्दिट्ठं, ववहारणताऽभिप्पायतो धम्मत्थिकायस्स देसे इत्येतत्, दुभागतिभागादिया बुद्धिभेदतो गहिया, जम्हा दुभागादीहिं धम्मदेसेहिं दव्वा गतिमावादिट्ठा तम्हा धम्मस्स देसो दव्वं भाणितव्वं, ण दोसो, दीणारदुगभागादिदिट्ठंतसामत्थतो य एतं भावेतव्वं, रिजुसुत्तणयाभिप्पायतो धम्मत्थिकायस्स पदेसा इत्येतत्, विकप्पिज्जमाणवयविदव्वस्स णिब्भिज्जसरूवोपदेसो दव्वाण अप्पणो समत्थत्तणेण गतिमादिपज्जयप्पदाणतोव्व तएव दव्वत्तणमिच्छति, एवमधम्मत्थिकायाकासेऽवि भाणितव्वा, अण्णं चात्र अवयवावयवीणं अण्णण्णभावो दंसितो भवतीत्यर्थः, ‘ अद्धा ’ इति कालाभिधाणं तस्स समयो अद्धासमयो, सो य णिच्छयतो एग एव वट्टमाणो, तस्स य एगत्तणतो कायता नत्थि, अतो तस्स देसपदेसभावकप्पणावि णत्थि, ‘से किं तं रूविअजीव’ इत्यादि; तत्थ पुग्गलादीण बहुवयणणिद्देसो कम्हा ?, पोग्गलत्थिकाए अणंता खंधदव्वा खंधदेसाणं व संखेयासंखेयाणंतसब्भावतो बहुवयणणिद्देसे कते, जेसिं खंधत्तपरिणयाणमेव बुद्धीए णिरवयवकप्पणा कप्पिज्जति ते पदेसा भाणितव्वा, जे पुण खंधत्तेण अवट्ठा प्रत्येकभावठिता ते परमाणू पोग्गलेत्ति भणिता, सेसं कंठ्यं ॥ ‘कति णं भंते! सरीरा’ इत्यादि (१४२–१९५) ‘ ओरालितो ’ इत्यादि, शीर्यत इति शरीरं, तत्थ ताव उदारं ओरालं ओरालियं वा ओरालियं, तित्थकरगणधरशरीराइं पडुच्च उदारं वुच्चति, न ततो उदारतरमण्णमत्थीत्ति काउं उदारं, उदारं णाम प्रधानं, ओरालं णाम विस्तरालं

अत्र शरीरस्य औदारिक-आदि भेदानाम वर्णनं

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

औदारिक भेदाः

विशालंति वा जं भणितं होति, कहं ?, सातिरेगजोयणसहस्समवट्ठियप्पमाणमोरालियं अण्णमेद्दहमेत्तं णत्थि, वेउव्वियं होज्ज लक्खमहियं, अवट्ठियं पंचधणुसतं, इमं पुण अवट्ठियप्पमाणं अतिरेगजोयणसहस्सं वणस्पत्यादीनामिति, ओरालं नाम स्वल्पपदेशोपचितत्वात् भिण्डवत्, ओरालियं नाम मांसास्थिस्नाय्वाद्यवयवबद्धत्वात्, वैक्रियं विविधा विशिष्टा वा क्रिया विक्रिया विक्रियायां भवं वैक्रियं, विविधं विशिष्टं वा कुर्वन् तादिति वैकुर्विकं, आह्रियते इत्याहारकं गृह्यत इत्यर्थः, कार्यपरिसमाप्तेश्च पुनर्मुच्यते याचितोपकरणवत्, तानि च कार्याण्यमूनि—पाणिदयरिद्धिसंदरिसणत्थमत्थोवगहणहेतुं वा संसयवोच्छेयत्थं गमणं जिणपादमूलंमि ॥ १ ॥ त्यक्तव्यान्येतानि, तेजोभावस्तैजसं ' सव्वस्स उण्हसिद्धं रसादिआहारपागजणणं वा। तेयगलद्धिनिमित्तं व तेयगं होति णायव्वं ॥१॥ कर्म्मणो विकारः कार्म्मणं, अत्राह—किं पुनरयमौदारिकादिः क्रमः ?, अत्रोच्यते, परं २ प्रदेशसूक्ष्मत्वात् परं परं प्रदेशबाहुल्यात् परं परं प्रमाणोपलब्धित्वात् प्रथित एवौदारिकादिक्रमः, 'केवइया णं भंते! ओरालियसरीरा पण्णत्ता' इत्यादि, ताणि य सरीराणि जीवाणं बद्धमुक्काइं दव्वखेत्तकालभावेहिं साहिज्जंति, द्रव्ये परिमाणं वक्ष्यत्यभव्यादिभिः क्षेत्रेण श्रेणिप्रतरादिना कालेनावलिकादिना, भावो द्रव्यान्तर्गतत्वात् न सूत्रेणोक्तः, सामान्यलक्षणत्वाद्वर्णादीनां अन्यत्र चोक्तत्वात्, 'ओरालिया बद्धा य मुक्केल्लया' य, बद्धं-गृहीतमुपात्तमित्यनर्थान्तरं, मुक्तं त्यक्तं क्षिप्तं उज्झितं निरस्तमित्यनर्थांतरं, 'तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा' इत्यादि सूत्रम्, इदानीमर्थः, ण संखेज्जा असंखेज्जा, ण तीरंति संखातुं-गणितुं जहा एत्तिया णाम कोडिप्पिभिति ततोवि कालादीहिं साहिज्जति, कालतो वा ते समए २ एक्केक्कं सरीरमवहीरमाणमसंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिण्णीहिं अवहीरंतित्ति जं भणितं, असंखेज्जाण उस्सप्पिणिओसप्पिणीण जावइया समया एवइया ओरालियसरीरा बद्धेल्लया, खेत्ततो परिसंखाणं असंखेज्जा

॥ ६१ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

॥ ६२ ॥

औदारिक भेदाः

लोगा भवंति, अप्पणप्पणियाहिं ओगाहणियाहिं ठविज्जंतेहिं, जइवि एक्केके पदेसे सरीरमेक्केकं ठाविज्जति तोऽविय असंखा लोगा भरेन्ति, किंतु अवसिद्धंतदोसपरिहरणत्थं अप्पणप्पणियाहिं ओगाहणाहिं ठविज्जंति, आह–कहमणंताणमोरालसरीरीणं असंखेज्जाइं सरीराइं भवंति ?, आयरिय आह–पत्तेयसरीरा असंखेज्जा, तेसिं सरीराइवि तावइया चेव, ये पुण साधारणा तेसिं अणंताणं एक्केकं सरीरंति काउं असंखेज्जा शरीरा भवंति, एवमोरालिया असंखेज्जा बद्धेल्लया, मुक्केल्लया अणंता, कालसंखाणं अणंताणं उस्सप्पिणिओसप्पिणीणं समयरासिप्पमाणमित्ताइं, खेत्तपरिसंखाणं अणंताणं लोगप्पमाणमित्ताणं खंडाणं पदेसरासिप्पमाणमेत्ताइं, दव्वतो परिसंखाणं अभवसिद्धियजीवरासीतो अणंतगुणाइं, तो किं सिद्धरासिप्पमाणमेत्ताइं होज्जा ?, भण्णति–सिद्धाणमणंतभागमेत्ताइं, आह-ता किं परिवडियसम्मद्दिट्ठिरासिप्पमाणाइं होज्जा ?, तेसिं दोण्हवि रासीणं मज्झे पडिज्जंतित्ति काउं भन्नति–जति तप्पमाणाइं होन्ताइं ततो तेसिं चेव निद्देसो होति, तम्हा ण तप्पमाणाइं, तो किं तेसिं हेट्ठा होज्जा ?, भण्णति–कताइ हेट्ठाइं होंति कताइं उवरिं होंति कयाइ तुल्लाइं, तेण सव्वया अनियतत्तणेण णिच्चकालं ण तप्पमाणाइंति तीरति वोत्तुं, आह-कहं मुक्काइं अणन्ताइं भवंति ओरालियाइं, भवंति जदि ओरालियाइं मुक्काइं ताइं जाव अविकलाइं ताव घेप्पंति, ततो तेसिं अणंतकालावत्थाणाभावातो अणंतत्तणं ण पावति, अह जे जीवेहिं पोग्गला ओरालियत्तेण घेत्तुं मुक्का तीतद्धाए तेसिं गहणं, एवं सव्वपोग्गला गहणभावावण्णा, एवं जं तं भण्णति अभवसिद्धीएहिंतो अणंतगुणा सिद्धाणं अणंतभागोत्ति तं विरुज्झति, एवं सव्वजीवेहिंतो बहुएहिं गुणेहिं अणंतं पावति, आयरिय आह-ण य अविकलाणमेव गहणं, एवं ण य ओरालियगहणमुक्काणं सव्वपोग्गलाणं, किं तु जं सरीरमोरालियं जीवेण मुक्कं होति तं अणंतभेयभिण्णं होति जाव ते य पोग्गला तं जीवणिव्वत्तियं ओरालियसरीरकायप्पयोगं ण मुयंति ण जाव अण्ण-

॥ ६२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

परिणामेण परिणमंति ताव ताइं पत्तेयं तस्सरीराइं भण्णंति, एवमेकेक्कस्स ओरालियसरीरस्स अणंतभेदभिण्णत्तणतो अणंताइं ओरालियसरीराइं भवंति, तत्थ जाइं दव्वाइं तमोरालियसरीरप्पयोगं मुइंति तातिं मोत्तुं सेसाइं ओरालियसरीरत्तणतोवचरिज्जंति, कहं ?, आयरिय आह--लवणादिवत्, यथा लवणस्य तुलाढककुडवादिष्वपि लवणोपचारः यावदेकशर्करायामपि तथैव लवणाख्या विद्यते, केवलं संख्याविशेषः, एवमिहापि प्राप्यंगैकदेशेऽपि प्राप्यंगोपचारः लवणकुडवादिवत्, एवमनंतान्यौदारिकादीनि, आह-कहं पुनस्तान्यनंतलोकप्रदेशप्रमाणान्येकस्मिन्नेव लोकेऽवगाहंत इति, अत्रोच्यते, यथैकप्रदीपार्चिष्यप्येकभवनावभासिन्यान्येषामप्यतिबहूनां प्रदीपानामर्चिषस्तथैवानुविशंति अन्योऽन्याविरोधादेवमौदारिकान्यपीति, एवं सर्वशरीरेष्वप्यायोज्यमिति, अत्राह-किमुत्क्रमेण कालादिभिरुपसंख्यानं क्रियते?, कस्माद् द्रव्यादिभिरेव न क्रियते?, अत्रोच्यते, कालान्तरावस्थायित्वेन पुद्गलानां शरीरोवचयाकृतिमच्चात्कालो गरीयान् तस्माद् तदादिभिरुपसंख्यानमिति, ओरालियाइं सप्पत्ताइं दुविधाइं अपि कहेत्ता ओहिय-ओरालियाइं, एवं सव्वेसिंपि एगिंदियाणं भाणितव्वाइं, किं कारणं ?, जं ओहियओरालियाइंपि ते चेव पडुच्च वुच्चंति । ‘ केवइ-या णं भंते ! वेउव्विया’ इत्यादि, वेउव्विया बद्धेल्लया असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी तहेव खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीतो, आह-का पुण एसा सेढी?, लोकातो णिप्फज्जति, लोगो पुण चोद्दसरज्जुस्सितो हिट्ठादेसूणसत्तरज्जुविच्छिण्णो मज्झे रज्जुविच्छिण्णो एवं बंभलोगे पंच उवरिलोगंते एगरज्जुविच्छिण्णो, रज्जू पुण सयंभुरमणसमुद्दपुरत्थिमपच्चत्थिमवेइयंता, एस लोगो बुद्धिपरिच्छेतेणं संवट्टेउं घणो कीरइ, कहं पुण ?, णालियाए दाहिणिल्लमहालोगखंडं हेट्ठा देसूणतिरज्जुविच्छिण्णं उवरिंरज्जुअसंखभागविच्छिण्णं अतिरित्तसत्तरज्जुस्सयं, एयं घेत्तुं ओमत्थियं उत्तरे पासे संघाइज्जति, उड्ढलोगे दो दाहिणिल्लाइं खंडाइं बंभलोयबहुमज्झदेसभागे

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ६४ ॥

बिरज्जुविच्छिण्णाइं सेसंतेसु अंगुलसहस्सभागविच्छिण्णाइं देसुणअध्धुट्ठरज्जुस्सिताइं घेत्तुं उत्तरपासे विवरीयाइं संघाइज्जंति, एवं कएहिं किं जायं?, हेट्ठिल्लं लोगद्धं देसूणचतुरज्जुविच्छिण्णं सातिरित्तसत्तरज्जुस्सितं जातं देसूणसत्तरज्जुबाहल्लं, उवरिल्लमद्धंपि अंगुलसहस्सदोभागाहियतिरज्जुविच्छिण्णं देसूणसत्तरज्जूसितं पंचरज्जुबाहल्लं, एयं घेत्तुं हेट्ठिल्लअद्धस्स उत्तरे पासे संघाइज्जइ, एवं किं जायं?, सातिरेगसत्तरज्जुविच्छिण्णं घणं जातं, तं जं तं उवरिं सत्तरज्जुअब्भहियं तं घेत्तुं उत्तरे पासे उड्डायतं संघातिज्जति, एवं एस लोको सत्तरज्जुघणो, जओ ऊणातिरित्तं जाणिऊण ततो बुद्धीए संघाइज्जा, जत्थ जत्थ सेढिग्गहणं तत्थ तत्थ एताए सत्तरज्जुआयताए अवगंतव्वं, पतरत्तेवि एतस्स चेव सत्तरज्जुस्सिअस्स, एवमणेण खेत्तप्पमाणेण सरीरीणं एक्कमेक्कणं सरीरप्पमाणेणं वेउव्वियाइं बद्धेल्लगाइं असंखेज्जसेढीप्पदेसरासिप्पमाणमेत्ताइं, मोकाइं जधोरालियाइं। 'केवइयाइं भंते ! आहार' इत्यादि, आहारयाइं बद्धाइं सिय अत्थि सिय णत्थि, किं कारणं ?, तस्स अंतरं, जहण्णेणं एकं समयं उक्कोसेणं छम्मासा, तेण ण होंतिवि कयाइं, जइ होंति जहण्णेणं एकं च दोऽवि तिण्णि व उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्ता, दोहिंतो आढत्तं पुहुत्तसण्णा जाव णव, मुक्काइं जधोरालियमुक्काइं। 'केवइया णं भंते ! तेयासरीरा पण्णत्ता ' इत्यादि, तेयाबद्धाणं अणंताइं उस्सप्पिणीहिं २ कालपरिसंखाणं खेत्ततो अणंता लोगा दव्वतो सिद्धेहि अणंतगुणा सव्वजीवाणंतभागूणा, किं कारणमणंताइं ?, तस्सामीणमणन्तत्तणतो, तो आह--ओरालियाणंपि सामिणो अणंता, आयरिय आह--ओरालियसरीरमणंताणं एगं भवति, साधारणत्तणतो, तेयाकम्माइं पुण पत्तेयं सव्वसरीरीणं, तेण तेयाकम्माइं पडुच्च पत्तेयं चेव सव्वसरीरिणो, ताइं च संसारीणंति काउं संसारी सिद्धेहिंतो अणंतगुणा होंति, सव्वजीवअणंतभागूणा, के पुण ते?, ते पुण संसारी सिद्धेहिं ऊणा, सिद्धा सव्वजीवाणं अणंतभागे, तेण तेण ऊणा अणंतभागूणा भवंति, मुक्काइं अणंताइं

आहारतैजसकार्मणानि.

॥ ६४ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ६५ ॥

अणंताहिं उस्सप्पिणीहिं खेत्ततो अणंता दोवि पूर्ववत्, दव्वतो सव्वजीवेहिं अणंतगुणा जीववग्गस्स अणंतभागो, कहं ?, सव्वजीवा अणंतगुणा जातिं ताइ तेयाकम्माइं होज्जा, आह–एत्तियं ण पावति, किं कारणं ?, तेयाकम्माइं तहेवऽणंतभेदभिण्णाइं असंखेज्जकालावत्थाइं जीवेहिंतो अणंतगुणाइं भवंति?, केण पुणाणंतएण गुणाइं, तं चेव जीवाणंतयं तेण जीवाणंतएण गुणितं जीववग्गो भण्णति, एतिया य होज्जा ?, आह–एत्तियं ण पावति, किं कारणं ?, असंखेज्जकालावत्थाइत्तणतो तेसिं दव्वाणं, तो कित्तियाइं पुण होज्जा ?, जीववग्गस्स अणंतभागो, कहं पुण तदेवं घेत्तव्वं ?, आयरिय आह-ठवणारासीहिं, णिदरिसणं कीरइ, सव्वजीवा दससहस्साइं बुद्धिए घेप्पंति, तेसिं वग्गे दसकोडीतो होंति, सरीराइं पुण दससतसहस्साइं बुद्धीए अवधारिज्जंति, एवं किं जायं ?, सरीरयाइं जीवेहिंतो सतगुणाइं जाताइं, जीववग्गस्स सतभागे संवुत्ताइं, णिदरिसणमेत्तं, इहरहा सब्भावतो एते तिण्णिवि रासी अनंता दट्ठव्वा, एवं कम्मयाइंपि, तस्स सहभावित्तणओ तत्तुल्लसंखाइं भवंति, एवं ओहियाइं पंच सरीराइं भणिताइं । 'णेरइयाणं भंते !' इत्यादि, विसेसिय णारगाणं वेउव्वगा बद्धेल्लया जावइया एव णारगा, ते पुण असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीहिं कालप्पमाणं, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ, तासिं पदेसमित्ता णारगा, आह–पयरंमि असंखेज्जाओ सेढीओ?, आयरिय आह–सयलपयरसेढीओ ताव न भवंति, जदि होंतिओ एवं चेव भण्णंति, आह–तो ताओ किं देसूणपयरवत्तिणीओ होज्जा?, तिभागचउभागवत्तिणीओ होज्जा ?, भण्णति, जो अ णं सेढीओ पतरस्स असंखेज्जतिभागो, एयं विसेसियरं परिसंखाणं कयं होति, अहवा इदमण्णं विसेसिततरं विक्खंभसूईए एएसिं संखाणं भण्णइ, 'तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलं बितियवग्गमूलेण पडुप्पाइयं तावइयं जाव असंखेज्जाइ संभितस्स' अंगुलविक्खंभखेत्तवत्तिणो सेढीरासिस्स जं पढमं वग्गमूलं तं बितिएण

नारकवैक्रियमानं ॥ ६५ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ६६ ॥

असुर कुमारादि मानं

वग्गमूलेण पडुप्पातिज्जति, एवइयाओ सेढीओ विक्खंभसूई, अहवा इयमण्णेणप्पगारेण पमाणं भण्णइ 'अहवा तमंगुलबितियवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ' तस्सेवंगुलप्पमाणखेत्तवत्तिणो सेढिरासिस्स जं बितियं वग्गमूलं तस्स जो घणो एवतियाओ सेढीओ विक्खंभसूई, तासि णं सेढिणं पएसरासिप्पमाणमेत्ता नारगा तस्स सरीराइं च, तेसिं पुण ठवणंगुले णिदरिसणं–दो छप्पण्णाइं सेढीवग्गाइं अंगुले बुद्धीए घेप्पंति, तस्स पढमं वग्गमूलं सोलस वितियं चत्तारि तइयं दोण्णि, तं पढमं सोलसयं बितिएण चउक्कएण वग्गमूलेण गुणियं चउसट्ठी जाया, बितियवग्गमूलस्स चउक्कयस्स घणा चेव चउसट्ठी भवति, एत्थ पुण गणियधम्मो अणुवत्तितोऽतिबहुयं थोवेण गुणिज्जति तेण दो पगारा भणिता, इहरा तिण्णिवि भवंति, इमो ततियपगारो–अंगुलबितियवग्गमूलस्स पडुप्पण्णं भागहार (पढमवग्गमूलपडुप्पण्णं षोडशगुणाश्चत्वारः) इत्यर्थः, एवंपि सा चेव चउसट्ठी भण्णति, एते सव्वे रासी सब्भावतो असंखा दट्ठव्वा, एताइं णारगवेउव्वियाइं बद्धाइं, मुक्काइं जहा ओरालियाइं, एवं सव्वसरीराइं मुक्काइं भाणितव्वाइं, वणस्सतितेयाकम्माइं मोत्तुं, देवणारगाइं तेयाकम्माइं दुविहाइवि सट्ठाणवेउव्वियसरीराइं समाणाइं, सेसाणं वणस्सतिवज्जाणं सट्ठाणोरालियसरीराइं ॥ इयाणिं जं जस्स(न)भणितं तं भणिहामो–'असुरकुमाराणं भंते!' इत्यादि, असुराणं वेउव्विया बद्धिल्लया असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो तं चेव खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पतरस्स असंखेज्जतिभागो, तासिं णं सेढीणं विक्खंभसूती अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जभागो, तस्स णं अंगुलविक्खंभखेत्तवत्तिणो सेढीरासिस्स जं तं पढमवग्गमूलं तत्थ जातो सेढीतो तासिंपि असंखेज्जतिभागे उ सव्वणेरइएहिंतो असंखेज्जगुणहीणा विष्कंभसूइया भवति, जम्हा महादंडएवि असंखेज्जगुणहीणा सव्वेवि भवणवासी रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतोवि, किमुय सव्वेहिंतो?, एवं जाव थणियकुमा- ॥ ६६ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ६७ ॥

वायु वनस्पति द्वीन्द्रिया-दिमानं

राणं, पुढविआउतेउस्स उ वाउवज्जकंठा भणियव्वा । 'वाउक्काइयाणं भंते!' इत्यादि, वाउकाइयाणं वेउव्विया बाद्धिल्लया असंखेज्जा, समए समए अवहीरमाणा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, णो चेव णं अवहिया सिता, सूत्रं, कहं पुण पलितोवमस्स असंखेज्जइभागमेत्ता भवंति?, आयरिय आह-वाउकाइया चउव्विहा-सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बायराधि पज्जत्ता अपज्जत्ता, तत्थ तिण्णि रासी पत्तेयं असंखेज्जा लोगप्पमाणप्पदेसरासिपमाणमेत्ता, जे पुण बादरा पज्जत्ता ते पतरासंखेज्जतिभागमेत्ता, तत्थ ताव तिण्हं रासीणं वेउव्वियलद्धी चेव णत्थि, बायरपज्जत्ताणंपि असंखेज्जइभागमेत्ताणं लद्धी अत्थि, जेसिंपि लद्धी अत्थि ततेवि पलितोवमासंखेज्जभागसमयमेत्ता संपदं पुच्छासमए वेउव्वियवत्तिणो, केई भणंति-सव्वे वेउव्विया वायंति, अवेउव्वियाणं वाणं चेव ण पवत्तति, तं ण जुज्जति, किं कारणं ?, जेण सव्वेसु चेव लोगागासादिसु चला वायवो विज्जंति, तम्हा अवेउव्वितावि वायंतीति घेत्तव्वं, सभावो तेसिं वाइयव्वं। 'वणप्फइकादिंयाणं' इत्यादि कंठ्यं, 'बेइंदियाणं भंते !' इत्यादि, बेइंदियोरालिया बद्धेल्लया असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीअवसप्पिणीहिं कालप्पमाणं तं चेव खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ तहेव पयरस्स असंखेज्जतिभागो केवलं विक्खंभसूयीए विसेसो, विक्खंभसूयी असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओत्ति विसेसितं परं परिसंखाणं, अहवा इदमन्नं विसेसियतरं-असंखेज्जसेढीवग्गमूलाइं, किं भणितं होति ?, एक्केकाए सेढिए जो पदेसरासी तस्स पढमं वग्गमूलं बितियं जाव असंखेज्जाइं वग्गमूलाइं संकलियाइं जो पदेसरासी भवति तप्पमाणा विक्खंभसूयी 'बेइंदियाणं निदरिसणं-सेढी पंचट्ठि सहस्साइं पंच सताइं छत्तीसाणं पदेसाणं, तीसे पढमं वग्गमूलं बिसता छप्पण्णा बितियं सोलस ततियं चत्तारि चउत्थं दोण्णि एवमेताइं वग्गमूलाइं दो सता अट्ठ सत्तरा भवंति, एवइया पदेसा तासिं सेढीणं विक्खंभसूयी, एतेवि सब्भावओ असं- ॥ ६७ ॥

खेज्जा वग्गमूलरासी पत्तेयं २ घेत्तव्वा, इमा मग्गणा-किं पमाणाहिं पुण ओगाहणाहिं रइज्जमाणा बेइंदिया पयरं पूरेज्जंतु, ततो इमं सुत्तं बेइंदियाणं ओरालियबद्धेल्लएहिं पयरं अवहीरंति असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो तं पुण पयरं अंगुलपतरासंखेज्जतिभागमेत्ताहिं ओगाहणाहिं रइज्जंतीहिं सव्वं पूरिज्जति, तं पुण केवइएणं कालेणं रइज्जइ पूरिज्जइ वा? भण्णति, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं, किं पमाणेण पुण खेत्तकालावहारेणं? भण्णति, अंगुलपतरस्स आवलियाए य असंखेज्जइपलिभागेणं जो सो अंगुलपयरस्स असंखेज्जइभागो एवतिएहिं पलिभागेहिं अवहीरंति, एस खेत्तावहारतो, आह-असंखेज्जतिभागगहणेण चेव सिद्धं किं पलिभागगहणेणं? भण्णति- एक्केक्कं बेइंदियं पति जो भागो सो पलिभागो, जं भणियं अवगाहोत्ति, कालपलिभागो आवलियाए असंखेज्जतिभागो, एतेण आवलियाए असंखेज्जतिभागमेत्तेणं कालपलिभागेणं एक्केको खेत्तपलिभागो सोहिज्जमाणेहिं सव्वं लोगप्पयरं सोहिज्जति खेत्तओ, कालतो असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं, एवं बेइंदियोरालियाणं उभयमभिहियं, संखप्पमाणं ओगाहणापमाणं च, एवं तेइंदियचउरिंदियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि भाणियव्वाणि, पंचिंदियतिरिक्खवेउव्वियबद्धेल्लया असंखिज्जा २ हिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो तहेव खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ पतरस्स असंखिज्जतिभागो विक्खंभसूयी णवरं अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जतिभागो, सेसं जहा असुरकुमाराणं। मणुयाणं ओरालिया बद्धेल्लिया सिय संखिज्जा सिय असंखेज्जा, जहण्णपदे संखेज्जा, जहण्णपदं णाम जत्थ सव्वत्थोवा मणुस्सा भवंति, आह-किं एयं संमुच्छिमाणं गहणं अहव तव्विरहियाणं?, आयरिय आह-ससंमुच्छिमाणं गहणं, किं कारणं? गब्भवक्कंतिया णिच्चकालमेव संखेज्जा, परिमितक्षेत्रवर्त्तित्वात् महाकायत्वात् प्रत्येकशरीरत्वाच्च, तस्मान्मेतराणं ग्रहणं उक्कोसपदे, जहण्णपदे गब्भवक्कंतियाणं चेव गहणं, किं कारणं?, जेण

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ६९ ॥

संमुच्छिमाणं चउव्वीसं मुहुत्ता अंतरं अंतोमुहुत्तं च ठिती, अहण्णपदे संखेज्जत्ति भणिते न णज्जति कयरंमि संखेज्जए होज्जा ते?, एएणं विसेसं करेति जहा संखेज्जातो कोडीतो, अहवा इणमण्णं विसेसियतरं परिसंखाणं ठाणणिद्देसं पडुच्च भुच्चति, कथं?, एक्कूणतीसं ठाणाणि, तेसिं सामयिकीए सण्णाए णिद्देसं करेति जधा तिजमलपदस्स उवरिं चतुजमलिपदस्स हेट्ठा, किं भणियं होति ? अट्ठण्हं अट्ठण्हं ठाणाणं जमलपदत्ति सण्णा सामयिकी, तिण्णि जमलपदाइं समुदियाइं तिजमलपदं अहवा ततियं जमलपदं २तस्स तिजमलपदस्स उवरिमेसु ठाणेसु वट्टंति, जं भणियं-चउवीसण्हं ठाणाणं उवरि वट्टंति, चत्तारि जमलपदाइं चउजमलपदं अहवा चउत्थं जमलपदं चतुजमलपदं, किं भुत्तं? बत्तीसं ठाणाइं चउजमलपदं, एयस्स चतुजमलपदस्स हेट्ठा वट्टंति मणुस्सा, अण्णेहिं तिट्ठाणेहिं ण पावंति, जति पुण बत्तीसं ठाणाति पूरंताइं तो चतुजमलपदस्स उवरिं भणंतं, तं ण पावंति, तम्हा हेट्ठा भण्णंति, अहवा दोण्णि वग्गा जमलपदं भण्णति, समुदिया तिजमलपदं, अहवा पंचमछट्ठा वग्गा ततियं जमलपदं, अट्ठवग्गा चत्तारि जमलपदाइं चउजमलपदं, अहवा सत्तट्ठवग्गा चउत्थं जमलपदं, जेणं छण्ह वग्गाणं उवरिं वट्टंति सत्तट्ठमाणं च हिट्ठा तेण तिजमलपदस्स उवरिं चतुजमलपदस्स हेट्ठत्ति भण्णंति, संखेज्जातो कोडीओ ठाणविसेसेणाणियमियाओ। इयाणिं विसेसियतरं कुडं संखाणमेव णिद्दिसति, जधा--' अहव णं छट्ठो वग्गो पंचमवग्गपडुप्पण्णो, ' छ वग्गा ठविज्जंति, तंजहा--एक्कस्स वग्गो एक्को एस गुणवुड्ढीरहितोत्ति कातुं वग्गो चेव ण भवति, तेण बिण्हं वग्गो चत्तारि एस पढमो वग्गो, एयस्स वग्गो सोलस एस बितिओ वग्गो, एयस्स वग्गो दो सता छप्पण्णा, एस ततितो वग्गो, एतस्स वग्गो पण्णट्ठि सहस्साइं पंच सयाइं छत्तीसाइं, एस चउत्थो वग्गो, एयस्स इमो वग्गो तंजहा-चत्तारि कोडीसता अउणतीसं च कोडीतो अउणावण्णं च सतसहस्साइं सत्तट्ठिं च सहस्साइं दो सया छनउताइं, इमा ठवणा

॥ ६९ ॥

गर्भज मनुष्य संख्या

अत्र गर्भज-मनुष्याणां संख्या: दर्शयते

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ७० ॥

गर्भज मनुष्य संख्या

४२९४९६७२९६ एवं पंचमो वग्गो, एयस्स गाहाओ ' चत्तारि य कोडिसता अउणत्तीसं च होंति कोडीओ। अउणावण्णं लक्खा सत्तट्ठिं चेव य सहस्सा ॥ १ ॥ दो य सया छण्णउया पंचम वग्गो समासतो होति । एतस्स कतो वग्गो छट्ठो जो होइ तं वोच्छं ॥ २ ॥ तस्स पंचमवग्गस्स इमो वग्गो होति-एक्कं कोडाकोडी सयसहस्सं चउरासीति कोडाकोडी सहस्सा चत्तारि य कोडिसता सत्तट्ठिं चेव कोडीओ चोतालीसं च कोडिसतसहस्सा सत्त य कोडिसहस्सा तिण्णि य सतरा कोडीसता पंचाणउइं सतसहस्सा एकावण्णं च सहस्सा छच्च सया सोलसुत्तरा, इमा ठवणा १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ एस छट्ठो वग्गो, एतस्स गाहाओ--' लक्खं कोडाकोडी चउरासीती भवे सहस्साइं । चत्तारि य सत्तट्ठा होंति सता कोडिकोडीणं ॥ १ ॥ चोयालं लक्खाइं कोडीणं सत्त चेव य सहस्सा । तिन्नि य सता य सत्तरि कोडीणं होंति णायव्वा ॥ २ ॥ पंचाणउई लक्खा एकावण्णं भवे सहस्साइं । छ सोलसुत्तर सया य एस छट्ठो भवति वग्गो ॥ ३ ॥ एत्थ य पंचमछट्ठेहिं पयोयणं, एस छट्ठो वग्गो पंचमेण वग्गेण पडुप्पाइज्जइ, पडुप्पाइए समाणे जं होति एवइया जहण्णपदिया मणुस्सा भवंति, ते य इमे एवइया ७९२२ ८१६ २५१४ २६४३ ३७५९ ३५४३ ९५०३ ३६ एवमेताइं अउणतीसं ठाणाइं एवइया जहण्णपदिया मणुस्सा, छ तिण्णि २ सुण्णं पंचेव य णव य तिण्णि चत्तारि। पंचेव तिण्णि नव पंच सत्त तिण्णेव२॥१॥चउ छ दो चउ एको पण दो छक्केक्को य अट्ठेव। दो दो णव सत्तेव य ठाणाइं उवरि हुंताइं॥२॥अहवा इमो पढमक्खरसंगहो-छ त्ति त्ति सु प ण त्ति च प ति ण प स त्ति त्ति च छ दो च ए प बे छ। ए अट्ठ बि बे ण सा पढमक्खरगहियछट्ठाणा ॥१॥ एते पुण णिरभिलप्पा कोडीहिं वा कोडाकोडीहि वात्ति काउं तेण पुव्वपुव्वंगेहिं परिसंखाणं कीरति, चउरासीतिं सतसहस्साइं पुव्वंगं भण्णाति, एतं एवतिएणं चेव गुणितं पुव्वं भण्णाति, तं च इमं--सत्तरि कोडीसयसहस्साइं ॥ ७० ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ७१ ॥

गर्भज मनुष्य संख्या

छप्पन्नं च कोडिसहस्साइं, एतेण भागो हीरति, तेण ततो इदमागतफलं भवति-एक्कार पुव्वकोडीकोडीतो बावीसं च पुव्वकोडीसतसहस्साइं चउरासीतिं च कोडीसहस्साइं अट्ठ य दसुत्तरा पुव्वकोडीसया एकासीतिं च पुव्वसतसहस्साइं पंचाणउइं च पुव्वसहस्साइं तिण्णि य छप्पण्णा पुव्वसता, एतं भागलद्धं भवति, ततो पुव्वेहिं भागं ण पयच्छतित्ति पुव्वंगेहिं भागो हीरति, हिते इदमागतफलं भवति-एक्कवीसं पुव्वंगसतसहस्साइं सत्तरिं च पुव्वंगसहस्साइं छच्च य एक्कूणसट्ठाइं पुव्वसताइं, ततो इमण्णं वेगलं भवति-तेसीइ मणुयसतसहस्साइं पन्नासं च मणुयसहस्साइं तिण्णि य छत्तीसा मणुस्ससता, एसा जहण्णपदियाणं मणुस्साणं पुव्वसंखा, एतेसिं गाहाओ तंजहा-‘ मणुयाण जहण्णपदे एक्कारस पुव्वकोडिकोडीतो । बावीस कोडिलक्खा कोडिसहस्सा य चुलसीतिं ॥ १ ॥ अट्ठेव य कोडिसता पुव्वाण दसुत्तरा ततो होंति । एकासीतिं लक्खा पंचाणउई सहस्सा य ॥ २ ॥ छप्पण्णा तिण्णि सता पुव्वाणं पुव्ववण्णिया अण्णे । एत्तो पुव्वंगाइं इमाइं अहियाइं अण्णाइं ॥३॥ लक्खाइं एक्कवीसं पुव्वंगाण सत्तरिं सहस्सा य । छच्चेवेगूणट्ठा पुव्वंगाणं सता होंति ॥ ४ ॥ तेसीति सतसहस्सा छप्पण्णा खलु भवे सहस्सा य । तिन्नि सया छत्तीसं एवइया वेगला मणुया ॥ ५ ॥ एतं चेव य संखं पुणो अण्णपगारेण भण्णति विसेसोवलंभनिमित्तं, तं०-‘ अहवणं छण्णउतिछेदणगदाई रासी ’ छण्णउतिं छेदणाणि जो देति रासी सो छण्णउतिछेदणगदायी रासी, किं भणियं होति? जो रासी दो वारा छेदेणं छिज्जमाणो छण्णउतिवारे छेदे देति सकलरूवे पज्जवसितो ततिया वा जहण्णपदिया मणुस्सा, ततिओरालिया वा बद्धेल्लया, को पुण रासी छण्णउयिछेदणगदाई होज्जा ?, भण्णति-एस चेव छट्ठो वग्गो पंचमवग्गपडुप्पण्णो जतिओ भणितो एस छन्नउतिं छेदणए देति, को पच्चयो ?, भण्णति--पढमो वग्गो छिज्जमाणो दो छेदणए देति वितितो चत्तारि ततिओ अट्ठ चउत्थो सोलस ॥ ७१ ॥

प्रत
सूत्रांक
[१४१-१४६]
गाथा
||११२-१२१||

दीप
अनुक्रम
[२९२-३१४]

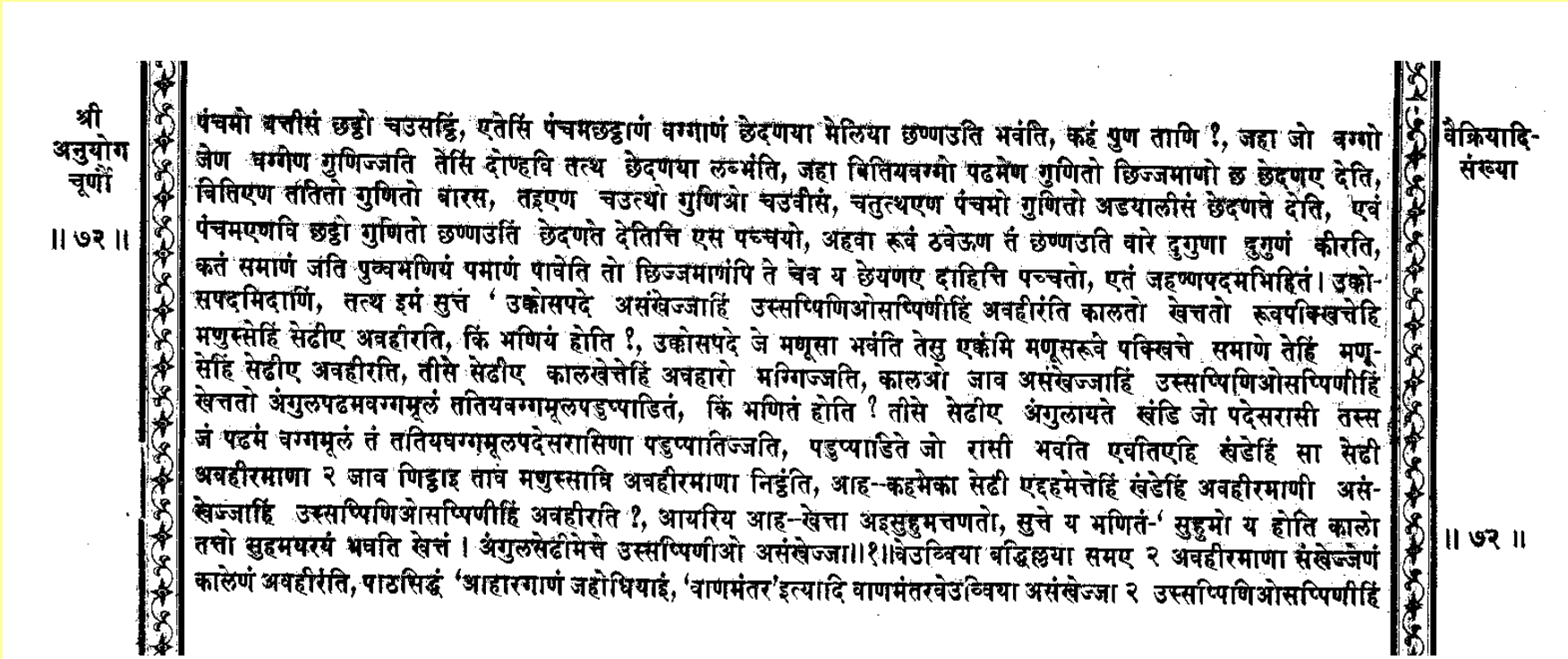

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ७२ ॥

वैक्रियादि-संख्या

पंचमो बत्तीसं छट्ठो चउसट्ठिं, एतेसिं पंचमछट्ठाणं वग्गाणं छेदणया मेलिया छण्णउति भवंति, कहं पुण ताणि ?, जहा जो वग्गो जेण वग्गेण गुणिज्जति तेसिं दोण्हवि तत्थ छेदणया लब्भंति, जहा बितियवग्गो पढमेण गुणितो छिज्जमाणो छ छेदणए देति, बितिएण ततितो गुणितो बारस, तइएण चउत्थो गुणिओ चउवीसं, चतुत्थएण पंचमो गुणितो अडयालीसं छेदणते देति, एवं पंचमएणवि छट्ठो गुणितो छण्णउतिं छेदणते देतित्ति एस पच्चयो, अहवा रूवं ठवेऊण तं छण्णउति वारे दुगुणा दुगुणं कीरति, कतं समाणं जति पुव्वभणियं पमाणं पावेति तो छिज्जमाणंपि ते चेव य छेयणए दाहित्ति पच्चतो, एतं जहण्णपदमभिहितं। उक्कोसपदमिदाणिं, तत्थ इमं सुत्तं 'उक्कोसपदे असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्ततो रूवपक्खित्तेहि मणुस्सेहिं सेढीए अवहीरति, किं भणियं होति ?, उक्कोसपदे जे मणूसा भवंति तेसु एक्कंमि मणूसरूवे पक्खित्ते समाणे तेहिं मणूसेहिं सेढीए अवहीरति, तीसे सेढीए कालखेत्तेहिं अवहारो मग्गिज्जति, कालओ जाव असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं खेत्ततो अंगुलपढमवग्गमूलं ततियवग्गमूलपडुप्पाडितं, किं भणितं होति ? तीसे सेढीए अंगुलायते खंडि जो पदेसरासी तस्स जं पढमं वग्गमूलं तं ततियवग्गमूलपदेसरासिणा पडुप्पातिज्जति, पडुप्पाडिते जो रासी भवति एवतिएहि खंडेहिं सा सेढी अवहीरमाणा २ जाव णिट्ठाइ ताव मणुस्सावि अवहीरमाणा निट्ठंति, आह--कहमेका सेढी एद्दहमेत्तेहिं खंडेहिं अवहीरमाणी असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरति ?, आयरिय आह--खेत्ता अइसुहुमत्तणतो, सुत्ते य भणितं-' सुहुमो य होति कालो तत्तो सुहमयरयं भवति खेत्तं । अंगुलसेढीमेत्ते उस्सप्पिणीओ असंखेज्जा॥१॥वेउव्विया बद्धिल्लया समए २ अवहीरमाणा संखेज्जेणं कालेणं अवहीरंति, पाठसिद्धं 'आहारगाणं जहोधियाइं, 'वाणमंतर'इत्यादि वाणमंतरवेउव्विया असंखेज्जा २ उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं

॥ ७२ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

अवहीरंति तहेव से जातो सेढीतो तहेव, विसेसो तासिणं सेढीणं विष्कंभसूयी, किं वक्तव्यमिति वाक्यशेषः, किं कारणं?, पंचिंदियतिरियोरालियसिद्धत्तणतो, जम्हा महादंडए पंचिंदियणपुंसएहिंतो असंखेज्जगुणहीणा वाणमंतरा पढिज्जंति, एवं विष्कंभसूयीवि तेहिंतो असंखेज्जगुणहीणा चेव भणियव्वा, इदाणिं पलिभागो--संखेज्जजोयणसतवग्गपलिभागो पदरस्स, जं भणियं--संखेज्जजोयणसतवग्गमेत्ते पलिभागे एक्केके वाणमंतरे ठवेज्जंति पतरं पूरिज्जति, तंमत्तपलिभागेण चेव अवहीरंतिवि । 'जोतिसियाण-'मित्यादि,जोतिसियाणं वेउव्विया बद्धेल्लया असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्ततो असंखेज्जातो सेढीओ पयरस्स असंखेज्जतिभागोत्ति, तहेव विसेसियाणं सेढीणं विष्कंभसूयी किं वक्तव्येति वाक्यशेषः, किं व्यानः (चातः) श्रूयते जम्हा वाणमन्तरेहिं जोतिसिया संखेज्जगुणा पढिज्जंति तम्हा विक्खंभसूयीवि तेसिं तेहिंतो संखेज्जगुणा चेव भण्णति, णवरं पलिभागे विसेसो जहा बे छप्पण्णंगुलसते वग्गपलिभागो पतरस्स, एवतिए पलिभाए ठवेज्जमाणो एक्केक्को जोतिसितो सव्वेहिं सव्वं पतरं पूरिज्जति तहेव सोहिज्जतिवि, जोतिसियाणं वाणमंतरेहिंतो संखेज्जगुणहीणो पलिभागो संखेज्जगुणब्भहिया सूयी, 'वेमाणिय' इत्यादि, वेमाणियाण बद्धिल्लया असंखेज्जा कालतो तहेव खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ, ताओ णं सेढीतो पतरस्स असंखेज्जतिभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूयी भवति अंगुलबितियवग्गमूलं ततियवग्गमूलपडुप्पण्णं, अहवणं अंगुलततियवग्गमूलघणमेत्तातो सेढीतो, तहेव अंगुलविक्खंभखेत्तवत्तिणो सेढिरासिस्स पढमवग्गमूलं बितियततियचउत्थ जाव असंखेज्जाइंति, तेसिंपि जं बितियं वग्गमूलं ततियवग्गमूलं सेढिप्पदेसरासिणो गुणिते जं होति तत्तियाओ सेढीओ विक्खंभसूयी भवति, ततियस्स वा वग्गमूलस्स जो घणो एवइयातो वा सेढीओ विक्खंभसूयी, णिदरिसणं तहेव बेछप्पण्णसतमंगुलितस्स पढ-

वैमानिक संख्या ॥ ७३ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

मवग्गमूलं सोलस बितियं चत्तारि ततियं दुण्णि, ततियं बितिएण गुणितं अट्ठ भवंति, ततियं बितिएण गुणियं, ते च अट्ठ, ततियस्स-वि घणो, सोवि ते चेव अट्ठ एव, मोत्त (एयं) सब्भावओ असंखेज्जा रासी दट्ठव्वा, एवमेयं वेमाणियप्पमाणं णेरइयप्पमाणातो असंखेज्ज-गुणहीणं भवति, किं कारणं ?, जेण महादंडए वेमाणिया णेरइएहिंतो असंखेज्जगुणहीणा चेव पढिज्जंति, एतेहिंतो य णेरइया असंखेज्जगुणब्भहियत्ति ' जमिहं समयविरुद्धं, बद्धं बुद्धिविकलेण होज्जाहि । तं जिणवयणविहण्णू खमिऊणं मे पसोहिंतु ॥ १ ॥ सरीरपदस्स चुण्णी जिणभद्दखमासमणकित्तिया समत्ता ॥ ' से किं तं भावप्पमाणे ' इत्यादि (१४३--२१०) भवनं भूतिर्भावः, तत्र ज्ञानं एव प्रमाणं तस्य वा प्रमाणं ज्ञानप्रमाणं, ' गुणप्रमाणं ' इत्यादि (१४४--२१०) गुणनं गुणः प्रमितिः प्रमाणं प्रमीयते वाऽनेनेति प्रमाणं गुणः प्रमाणं गुणप्रमाणं, गुणेन द्रव्यं प्रमीयते, ज्ञायते इत्यर्थः, अहवा द्रव्ये गुणाः प्रमी-यंत इति गुणप्रमाणं, गुणेषु वा ज्ञानं गुणप्रमाणं, गुणप्रमाणेनेति एतत्प्ररूपणेत्यर्थः, नीतिर्नयः नयेषु प्रमाणं नयप्रमाणं, नयेषु ज्ञानमित्यर्थः, अथवा नय एव प्रमाणं नयप्रमाणं, नयप्रमाणं नयज्ञानमित्यर्थः, नयानां वा प्रमाणं नयप्रमाणं नयसंख्येत्यर्थः, संख्या करणज्ञानं संख्या प्रमाणं संख्याप्रमाणं । 'से किं तं गुणप्रमाणे' त्यादि कंठ्यं, जाव जीवाजीवगुणप्रमाणं समत्तं ॥ 'से किं तं जीवगुण-प्रमाणे ' त्यादि, णाणं जीवस्स गुणो तस्स स्वविषये प्रमाणं भेदप्रमाणस्वरूपं वक्तव्यमिति, णाणगुणप्पमाणेत्यादि भणितं, एवं दंसणचरणगुणेवि भाणियव्वा, अक्ष इत्यात्मा इंद्रियाणि वा तं तानि च प्रति वर्त्तते यत् तत्प्रत्यक्षं, धूमादग्निज्ञानवदनुमानं, यथा गौस्तथा गवय इत्यौपम्यं, आगमो ह्याप्तवचनं, आयरियपरंपरागतो वा आगमः, अथैतद् व्याचष्टे-अथ किं तत् प्रत्यक्षं?, प्रत्यक्षं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-इन्द्रियप्रत्यक्षं च नोइन्द्रियप्रत्यक्षं च, तत्रेन्द्रियं श्रोत्रादि तन्निमित्तं यदलैङ्गिकं शब्दादिज्ञानं तदिन्द्रियप्रत्यक्षं व्यावहा-

अत्र भाव-प्रमाणस्य वर्णनं क्रियते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

रिक्कं, नोइन्द्रियप्रत्यक्षं यदात्मन एवालैङ्गिकमवध्यादीति समासार्थः, अविकलद्रव्येंद्रियद्वारोत्पन्नमात्मनो यज्जातमिंद्रियप्रत्यक्षं, सेसं कंठ्यं। 'से किं तं अणुमाणे' इत्यादि, जधा धणवंतो अत्र मत्वर्थः तथा पूर्वमस्तीति पुव्ववं भण्णति, पूर्वोपलब्धेनैव लिंगेण नाणकरणं, पूर्वं अविसंवादिनी दृष्टिर्मेघोन्नतेः एवमेतदनुमिती भवति, पूर्ववत् उपलद्धातो सेसं अण्णंति वुत्तं भवति, तं च उवलद्धे अत्थे अव्यभिचारसंबंधेन संबंधत्तणतो उवलभते धूमाद् वह्नेरनुमानं, दृष्टोऽर्थो धर्मसमानतया अनुमितो दृष्टसाधर्म्यानुमानं नाम प्रमाणं भवति, सेसं कंठ्यं। 'तस्स समासतो तिविहं गहणं' इत्यादि, 'तस्य' तदनुमानं परिगृह्यते, समासतोत्ति संखेवतो सव्वभेदेसु वत्तव्वं भवति, वातुब्भामोत्ति-उप्पायत्तेण पयत्थस्स भमणं वातुब्भामो भवति, अहवा प्रदक्षणं दिक्षु वातस्य भमणं वातुब्भामो, सेसं कंठ्यं, 'से किं तं उवम्मे' त्यादि, मंदरसर्षपयोः मूर्त्तत्वादिसाधर्म्यात् समुद्रगोष्पदयोः सोदकत्वं चंद्रकुंदयोः शुक्लत्वं हस्तिमशकयोः सरिरित्वं आदित्यखद्योतकयोःआकाशगमनोद्योतनादि, बहुसमानधर्मता गोगवययोःणवरं गवयो वृत्तकंठो गौःसकंबल इत्यर्थः, देवदत्तयज्ञदत्तयोः सरीरत्तं, सव्वसाधम्मे णत्थि तव्विहं किंचि तथावि जं सुत्ते भणितं तं दट्ठव्वं, अहवा जंबुदीपो आदित्यद्रव्यादिवत् सेसं कंठ्यं ॥ से किं तं वेधम्मोवणीते' त्यादि, सावलेयबाहुलेययोः किंचिद्विलक्षणं तच्च सबलत्वं जन्मादि वा शेषं, पूर्वसमानलक्षण इत्यर्थः, वायसपायसयोः समानं सवत्वं (आयसवत्त्वं) लक्षणं ययोः, शेषं वर्णादि सर्वं विलक्षणं सर्वविलक्षणं ॥ 'से किं तं सव्ववैधम्मे' त्यादि, सर्वद्रव्यगुणपर्यायाणां यद् विजातीयं तत्तस्य विलक्षणं संव्यवहारात्, अतो भण्णति-सर्वमनुष्यजातिभ्यः पाणो वैधर्म्यस्थानं नचासौ सर्वथावैधर्मयुक्तः, सिरोऽवयवादिसदृक्षलक्षणत्वात् अतः सर्ववैधर्म्याभावात् पाणसंव्यवहारतः सर्ववैधर्म्यस्थो विधर्मस्थ एवोपगीयते पाणेण सरिसं, 'से तं' इत्यादि, 'से किं तं आगमे' त्यादि सूत्रं कंठ्यं।

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ७६ ॥

'**से किं तं दंसणगुणप्पमाणे**' त्यादि, भावचक्खिंदियावरणीयस्स कम्मुणो खयोवसमेण दव्विंदियस्स य णिरुवहयत्तणतो जीवस्स चक्खुदंसणगुणो उप्पज्जति सो चेव प्रमाणंति चक्खुदंसणगुणप्पमाणं भण्णति, एवं सेसेंदिएसुवि अचक्खुदंसणं भणितव्वं, चक्खुदंसणं चक्खुदंसणिस्स घडादिए मुत्ते दव्वभाविंदियमपत्तमत्थं गिण्हइति ज्ञापितं भवति, अचक्खुदंसणं आयभावोत्ति दव्विंदिएसु सद्दादिओ जता पत्तमत्थो तया भाविंदिया, भावे अप्पणो विण्णाणसत्ती उप्पज्जइत्ति, एवं सेसिंदियाणि पत्तविसयाणि ज्ञापितं भवति, ओहिदंसणं सव्वदव्वेसुत्ति गुरुवयणाओ जाणितव्वं, सव्वे रूविदव्वा, भणियं च 'रूपिष्ववधेः' (तत्त्वा. अ. १ सू. २८) अहवा धम्मादियाण सव्वदव्वाणं रूविदव्वाणुसारतो जाणति मणदव्वगुसारतो मणपज्जवणाणिव्व, सेसं कंठ्यं। '**से किं तं चरणगुणप्पमाणे**' इत्यादि, सामादियमित्तिरियंति पुरिमपच्छिमतित्थकराण णियमेणोवट्ठावणासंभवतो, मज्झिमाणं बावीसाए तित्थकराणं आवकधियं उवट्ठवणाए अभावत्तणतो, मूलतियारं पत्तस्स जं छेदोवट्ठावणं से तं, सातियारस्सेत्यर्थः, जं पुण सेहस्स पढमताए अतियारवज्जियस्सवि उवट्ठाणं तं, णिरइयारस्सेत्यर्थः, परिहारं तवं वहंता णिव्विसमाणा परिहारि तवे णिविट्ठकाया, उवसमगसेढीए उवसमेन्तो सुहुमसंपरागो विसुज्झमाणो भवति, सो चेव परिवंडतो संकिलिस्समाणो भवति, खवगसेढीए संकिलिस्समाणो णत्थि, मोहखयकाले उप्पण्णकेवलो जाव ताव छउमत्थो, खीणदंसणणाणावरणकाले जाव भवत्थो ताव अहक्खायचरित्तकेवली, सेसं कंठ्यं। णयाण य विहाणेणं अणेगभेदभिण्णत्ता दिट्ठंतभेदतो तिविहभेदत्ति, पत्थगादिट्ठंतो णेगमववहाराणं संगहस्स पत्थगो भवति, णेगमववहारा दोऽवि एगाभिप्पाया, संगहस्सवि, तानि जता धण्णादिणा मिज्जति पूर्यत इत्यर्थः, मितोत्ति सव्वहा मेज्जस्स पूरितो, एवं मेज्जगं समारूढो मेज्जं वा पत्थए समारूढो जता तता संगहस्स

चारित्रं प्रस्थका दिनयश्च ॥ ७६ ॥

पत्थतो भणति, ण सेसावत्थासु, पत्थयकज्जाभावत्तणतो, उज्जुसुत्तस्स लिहणकारणतच्छणादियासु क्रियासु सव्वहा णिस्सवितो पत्थउत्ति णामंकितो ततो पत्थतो भण्णति, किं च-मितं पत्थएण य मितमिज्जंपि पत्थतो भण्णति, कहं ?, उच्यते, कज्जकरणाणं परोप्परसंबद्धतो चेव देसत्तणतो, सद्दणयाणं जाणतेत्ति, जतो जाणगोवओगमंतरेण पत्थओ ण णिप्फज्जति अतो जाणगोवओगोच्चेव णिच्छएण पत्थगो, जस्स वा वसेणंति कर्तुः कारयितुर्वा इत्यर्थः। 'से किं तं वसहिदिट्ठंते' इत्यादि(१४५-२२४)णेगमववहारा कंठ्या, संगहस्स वसमाणो वसतित्ति जता संथारगमारूढो भवति तता वसतित्ति वत्तव्वं, ण सेसकाले, सेसं कंठ्यं ॥ 'से किं तं पदेसदिट्ठंते' इत्यादि, णेगमसंगहववहारऋजुसुत्ता य सुत्तसिद्धा कंठ्या, ऋजुसुत्तोवीर शब्द आह–सियसद्दस्स अणेगत्थाभिहाणत्तणतो अतिप्रसक्तः प्रदेशः प्राप्नोतीत्यर्थः, तस्मादृजुमतिना वक्तव्यं धम्मे पदेसित्ति, धर्मात्मकः स च प्रदेशः, नियमात् धर्मास्तिकाय इत्यर्थः, एवमहंमागासेसुवि, जीवात्मकः प्रदेशो भवति स च प्रदेशो णोजीवेत्ति भिण्णमणेगजीवदव्वत्तणतो, एवं पुग्गलदव्वेसुवि, शब्दस्योपरि समभिरूढ आह–धम्मपदेसेत्ति इध वाक्ये समासद्वयसंभवो भवति, एत्थ जति तप्पुरिसेण भणसि तो भण धम्मे पदेसो धर्मप्रदेशो, यथा वने हस्ती वनहस्ती तीर्थे काकः, अह कम्मधारएण भणसि तो जधा श्वेतः पटः २, एवं विसेसंतो भणेहित्ति, एवंभूय आह-सव्वादयो चतुरो एगट्ठा, अहवा सव्वसद्देण सव्वं, एवं देशप्रदेशकल्पनावर्जितं कसिणं भण्णति, यदेवात्मस्वरूपेण प्रतिपूर्णं भवति तदेवैकत्वात् निरवयवं परिगृह्यते, एगगहणगहियंति एगाभिधानेनेच्छतीत्यर्थः, सेसं कंठ्यं ॥ 'से किं तं संखप्पमाणे' त्यादि (१४६–२३०) णामादि जाव गणणसंखत्ति ताव कंठ्या, 'से किं तं गणणसंखे' त्यादि ॥ अणुबद्धरासिपरिमाणस्स परिमाणगणणं गणणसंखा भण्णति, गणणपज्जाएण वा दुगादिरासीणं संखत्ति परि परिमाणकरणं गणण-

॥ ७७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

संखा भण्णति, तं संखाकरणं तिधा इमं-संखमसंखमणंतं च, तत्थ संखेज्जगं-जहण्णादिकं तिविहमेव संखेज्जगं, असंखेज्जकं परित्ता-दिकं तिहा कातुं पुणो एक्केकं जहण्णादितिविधविकप्पेण णवविधं भवति, अणंतकमवि एवं चेव, णवरं अणंतगाणंतगस्स उक्को-सगस्स असंभवत्तणतो अट्ठविधं कायव्वं, एवं भेदे कातुं तेसिमा परूवणा कज्जति-'जहण्णगं संखेज्जगं केत्तियं' इत्यादि कंठ्यं, 'से जहा-नामए पल्ले सिया' इत्यादि, से पल्ले बुद्धिपरिकप्पणाकप्पिए, पल्ले पक्खेवो भण्णति, सो य हेट्ठा जोयणसहस्सावमाढो रयणकंडं जोयणसहस्सावगाढं भेत्तुं वइरकंडे पइट्ठितो, उवरि पुण सवेदिकंतो, वेदिकातो य उवरि सिहामयो कायव्वो, जतो असतिपसति सव्वं बीयमिज्जं सिहामयं दिट्ठं, सेसं सुत्तसिद्धं । दीवसमुद्दाणं उद्धारे घेप्पतित्ति, उद्धरणमुद्धारः, तेहि पल्लप्रमाणेहिं सरिसवेहिं दीवसमुद्दा उद्धरिज्जंतीति तत्प्रमाणं गृह्यन्ते इत्यर्थः, स्यात् उद्धरणं किमर्थं?, उच्यते, अणवट्ठियसलागपरिमाणज्ञापनार्थं, चोदकः पुच्छति-जति पढमपल्ले उक्खित्ते पक्खित्ते णिट्ठिते य सलागा ण पक्खिप्पति तो किं परूवितो?, उच्यते, एस अणवट्ठियपरिमाणदंसणत्थं परूवितो, इदं च ज्ञापितं भवति-पढमत्तणतो पढमपल्ले अणवट्ठाणभावो णत्थि, सलागापल्लो य अणवट्ठिसलागाण भरेयव्वो जतो सुत्ते पढमस-लागा पढमअणवट्ठियपल्लभेदे दंसिया इति, 'एवं अणवट्ठियपल्लपरंपरसलागाण असंलप्पा लोगा भरिया' इत्यादि, असंलप्पत्ति-जं संखेज्जे असंखेज्जे वा एगतरे वत्तुं न शक्यते तं असंलप्पत्ति, कहं ?, उच्यते, उक्कोसगसंखेज्जं अतिबहुत्तणतो सुत्तव्ववहारीण य अव्ववहारित्तणतो असंखेज्जमिव लक्खिज्जति, जम्हा य जहण्णपरित्तासंखेज्जयं ण पावति आगमपच्चक्खववहारिणो य संखे-यववहारित्तणतोऽसंलप्पा इति भणितं, लोगत्ति सलागापल्ला लोगा, अहवा जहा दुगादिदससतसहस्सलक्खकोडिमाइएहिं रासीहिं अभिलावेणं गणणसंखववहारा कज्जंति ण तहा उक्कोसगसंखेज्जगेण, आदिल्लगरासीहि य ओमत्थगपरिहाणीए जा

॥ ७८ ॥

अथ संख्यात-असंख्यात-अनन्तानां स्वरुपम् वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ७९ ॥

अनव-स्थितादि पल्याः

सीसपहेलिको परमरासी एतेहिं गणणाभिलावणसंववहारे ण कज्जइत्ति अतो एते रासी असंल्लप्पा, एवइयं कारणमासज्ज भणितं असंलप्पा लोगा भरिया इति । अहवा अणवट्ठियसलागपडिसलागमहासलागपल्लाणं सरूवे गुरुणा [कए] भणिते सीसो पुच्छति–ते कहं भरेयव्वा ?, गुरू आह–एवंविहसलागाण असंलप्पा लोगा भरिया, संलप्प भरिया णाम समट्ठाणसंलप्पा, असंलप्पा ससिखा इत्यर्थः, तथावि उक्कोसगं संखेज्जगं ण पावतित्ति भणिते सीसो पुच्छइ, सीसो पुच्छइ-कथं उक्कोससंखेज्जगसरूवं जाणियव्वं ?, उच्यते, से जहानामए मंचे इत्यादि उवसंहारो–एवं अणवट्ठियसलागाहिं सलागापल्ले पक्खिप्पमाणीहि तत्तो य पडिसलागापल्ले ततोवि महासलागापल्ले होहिति सा सलागा जा तं उक्कोसगं-संखेज्जगं पाविहिति ॥ इदाणिं उक्कोसगसंखेज्जगपरूवणत्थं फुडतरं इमं भण्णति, जहा तंमि मंचे आमलएहिं पक्खिप्पमाणेहिं होहिति तं आमलयं जं तं मंचं भरेहित्ति अण्णं आमलगं ण पडिच्छइत्ति, एवमुक्कोसयं संखेज्जयं दट्ठव्वं, तस्स इमा परूवणा-जंबुदीवप्पमाणमेत्ता चत्तारि पल्ला-पढमो अणवट्ठियपल्लो बितितो सलागापल्लो तइओ पडिसलागापल्लो चउत्थो महासलागापल्लो, एते चउरोपि रयणप्पभापुढवीए पढमं रयणकंडं जोयणसहस्सावगाढं भित्तूण बितिए वेरकंडे पतिट्ठिया हेट्ठा, इमा ठवणा, एते ठविया एगो गणणं णोवेति दुप्पभितिं संखत्ति काउं, तत्थ पढमे अणवट्ठियपल्ले दो सरिसवा पक्खित्ता एयं जहण्णं संखेज्जतं, तो एगुत्तर-वुड्ढीए तिण्णि चतुरो पंच जाव सो पुणो अण्णं सरिसवं ण पडिच्छइत्ति ताहे असब्भावपट्ठवणं पडुच्चत्ति तं कोऽवि देवो दाणवो वा उक्खित्तुं वामकरयाले काउं ते सरिसवे जंबुद्दीवादिए दीवे समुद्दे पक्खिविज्जा जाव णिट्ठिया ताहे सलागापल्ले एगो सिद्धत्थतो छूढो, सा सलागा, ततो जहिं दीवे समुद्दे वा सिद्धत्थतो निट्ठितो सह तेण आरेण जे दीवसमुद्दा तेहिं ॥ ७९ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ८० ॥

सव्वेहिं तप्पमाणो पुणो अण्णो पल्लो आइ(भरि)ज्जइ, सोवि सिद्धत्थाण भरिते जंमि२ णिट्ठितो ततो २ परतो दीवसमुद्देसु एक्केकं पक्खिविज्जा जाव सोऽवि णिट्ठितो ततो सलागापल्ले बितितो सरिसवो छूढो, जत्थ जत्थ विणिट्ठितो तेण सह आतिल्लेहिं दीव-समुद्देहिं पुणो अण्णो पल्लो आइज्जति, सोवि सरिसवाणं भरितो, ततो परयो एक्केकं दीवसमुद्देसु पक्खिवंतेणं णिट्ठवंतो(ट्ठिओ) ततो सलागपल्ले ततिया सलागा पक्खित्ता, एवं एतेण अणवट्ठियपल्लकरणक्कमेण सलागग्गहणं करेंतेण सलागापल्लो सलागाण भरितो, क्रमागतः अणवट्ठितो सलागापल्लो य सलागं ण पडिच्छइत्तिकातुं से चेव णिक्खित्तो, णिट्ठितट्ठाणा पुरतो पुव्वक्कमेण पक्खित्तो णिट्ठितो य, ततो पडिसलागापल्ले पढमा पडिसलागा छूढा, ततो अणवट्ठितो उक्खित्तो णिट्ठियठाणा परतो पुव्वक्कमेण पक्खित्तो णिट्ठितो य ततो सलागापल्ले सलागा पक्खित्ता, एवं अण्णमन्नेणं अणवट्ठितेण आयरणिक्खरं करेंतेण जाहे पुणो सलागापल्लो भरितो अणवट्ठितो य ताहे पुणो सलगापल्लो उक्खित्तो पक्खित्तो णिट्ठितो य पुव्वक्कमेण, ताहे पडिसलागापल्ले बितिया पडिसलागा छूढा, एवं आयरणिक्खरकरणेण जाहे तिन्निवि पडिसलागसलागअणवट्ठियपल्ला य भरिता ताहे पडिसलागापल्लो उक्खित्तो पक्खिप्पमाणो णिट्ठिओ य ताधे महासलागापल्ले पढमा महासलागा छूढा, ताहे सलागापल्लो उक्खित्तो पक्खिप्पमाणो णिट्ठितो य ताहे पडिसलागा पक्खित्ता, ताधे अणवट्ठितो उक्खित्तो पक्खित्तो णिट्ठिओ य ताहे सलागापल्ले सलागा पक्खित्ता, एवं एतेण आयरणिक्किरणक्कमेण ताव कायव्वं जाव परंपरेण महासलागा पडिसलागा सिलागा अणवट्ठिय चतुवि भरिता ताहे उक्कोसमतित्थियं, एत्थं जावतिया अणवट्ठिय-पल्ले सलागापल्ले पडिसलागापल्ले महासलागापल्ले य दीवसमुद्दा उद्धरिता ये य चतुपल्लट्ठिया सरिसवा एस सव्वोवि एतप्पमाणो

उत्कृष्ट संख्यातं असंख्यातं च

॥ ८० ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ८१ ॥

रासी एगरूवेणोणो उक्कोसयं संखेज्जयं भवति, जहण्णुक्कोसयाण मज्झे जे ठाणा ते सव्वे पत्तेयं अजहण्णमणुक्कोसया भणियव्वा, सिद्धंते जत्थ जत्थ संखेज्जयगहणं कतं तत्थ सव्वं २ अजहण्णमणुक्कोसयं दट्ठव्वं, एवं संखेज्जगे परूविते भगवं ! किमेतेणं अणवट्ठियपल्लसलागपडिसलागादीहि य दीवसमुद्दमुद्धारगहणेण य उक्कोसगसंखेज्जगपरूवणा कज्जति ?, गुरू भणति–णत्थि अण्णो संखेज्जगस्स फुडयरो परूवणोवातोत्ति, किंचान्यत्–असंखेज्जगमणंतरासिविकप्पाणि एताओ चेव आधारातो रूवुत्तरकमवुड्ढियातो परूवणा कज्जतीत्यर्थः । उक्तं त्रिविधं संख्येयकं, इदाणिं णवविधमसंखेज्जयं भण्णति- ‘ एक्कमेव उक्कोसए ’ इत्यादि, सुत्तं, असंखेज्जगे परूविज्जमाणे एवमेव अणवट्ठियादिपल्लदीवुद्धारेण उक्कोसगसंखेज्जगमाणिते एगं सरिसवरूवं पक्खित्तं ताहे जधण्णगं परित्तअसंखेज्जगं भवति, ‘ तेण परं ’ इत्यादि सुत्तं, एत्तं असंखेज्जगस्स जहण्णमणुक्कोसट्ठाणाण य जाव इत्यादि सूत्रं, सीसो पुच्छति–‘ उक्कोसग ’ इत्यादि सुत्तं, गुरू आह-जहन्नगं परित्तअसंखेज्जगं ’ ति अस्य व्याख्यानं–जहण्णगं परित्तासंखेज्जगं विरल्लिय ठविज्जति, तस्स विरलियट्ठावितस्स एक्केके सरिसवट्ठाणे जहण्णपरिमित्तसंखेज्जगमेत्तो रासी दायव्वो, ततो तेसिं जहण्णपरित्तासंखेज्जगाणं रासीणं अण्णमण्णब्भासोत्ति गुणणा कज्जति, गुणिते जो रासी जातो सो रूवूणोत्ति, रूवं पाडिज्जति, तंमि पाडिते उक्कोसगं परित्तासंखेज्जगं होति, एत्थ दिट्ठंतो–जहण्णपरित्तासंखेज्जगं बुद्धिकप्पणाए पंच रूवाणि, ते विरल्लिया, इमे ५५५५५, एक्केकस्स जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तो रासी, ठविता इमे ५५५५५, एतेसिं पंचगाणं अण्णमण्णं अब्भासोत्ति गुणिया जाता एक्कतीसं सता पणुवीसा, एत्थ अण्णमण्णब्भासोत्ति जं भणितं, एत्थऽण्णे आयरिया परूवेंति–वग्गिय-संवग्गितंति भणितं, अत्रोच्यते, स्वप्रमाणेन रासिणा रासि गुणिज्जमाणो वग्गियंति भण्णति, सो चेव वड्ढमाणो रासी पुव्विल्ल-

असंख्यात भेदाः

॥ ८१ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

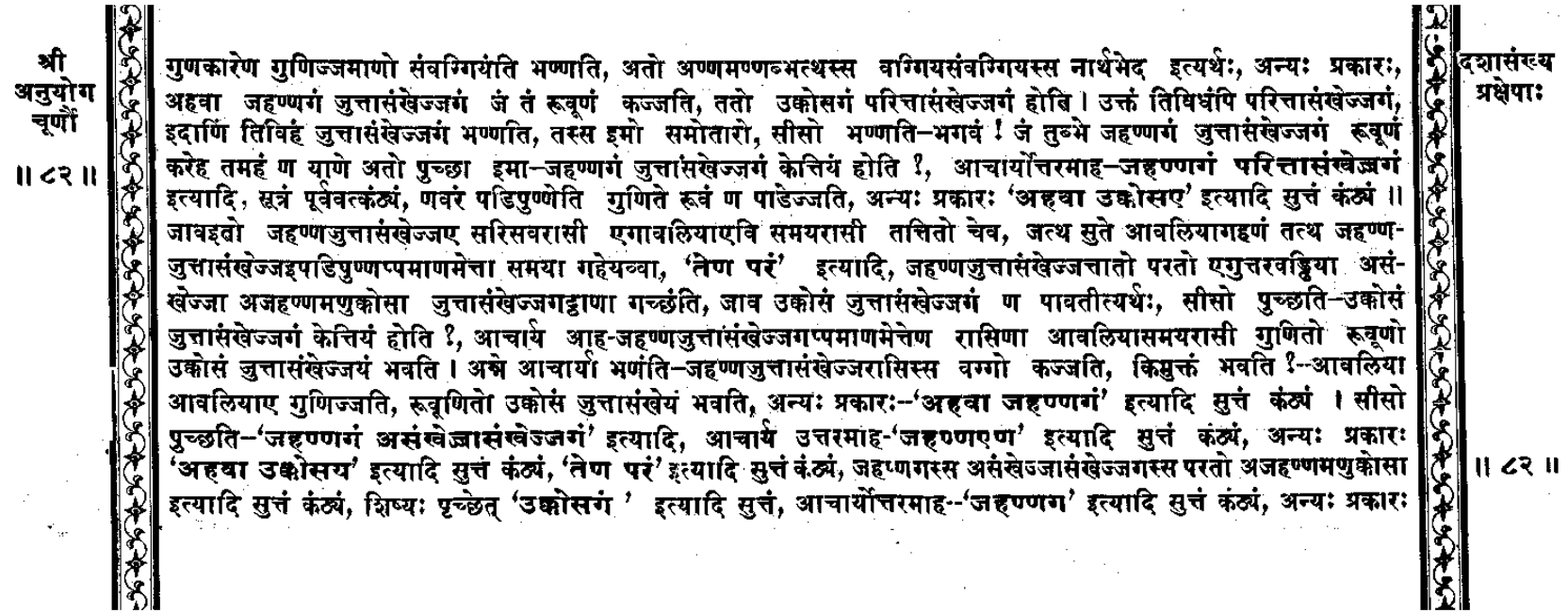

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८२ ॥

गुणकारेण गुणिज्जमाणो संवग्गियंति भण्णति, अतो अण्णमण्णब्भत्थस्स वग्गियसंवग्गियस्स नार्थभेद इत्यर्थः, अन्यः प्रकारः, अहवा जहण्णगं जुत्तासंखेज्जगं जं तं रूवूणं कज्जति, ततो उक्कोसगं परित्तासंखेज्जगं होति। उक्तं तिविधंपि परित्तासंखेज्जगं, इदाणिं तिविहं जुत्तासंखेज्जगं भण्णति, तस्स इमो समोतारो, सीसो भण्णति–भगवं ! जं तुब्भे जहण्णगं जुत्तासंखेज्जगं रूवूणं करेह तमहं ण याणे अतो पुच्छा इमा–जहण्णगं जुत्तासंखेज्जगं केत्तियं होति ?, आचार्योत्तरमाह–जहण्णगं परित्तासंखेज्जगं इत्यादि, सूत्रं पूर्ववत्कंठ्यं, णवरं पडिपुण्णेति गुणिते रूवं ण पाडेज्जति, अन्यः प्रकारः 'अहवा उक्कोसए' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं ॥ जावइओ जहण्णजुत्तासंखेज्जए सरिसवरासी एगावलियाएवि समयरासी तत्तितो चेव, जत्थ सुते आवलियागहणं तत्थ जहण्णजुत्तासंखेज्जइपडिपुण्णप्पमाणमेत्ता समया गहेयव्वा, 'तेण परं' इत्यादि, जहण्णजुत्तासंखेज्जत्तातो परतो एगुत्तरवड्ढिया असंखेज्जा अजहण्णमणुक्कोसा जुत्तासंखेज्जगट्ठाणा गच्छंति, जाव उक्कोसं जुत्तासंखेज्जगं ण पावतीत्यर्थः, सीसो पुच्छति–उक्कोसं जुत्तासंखेज्जगं केत्तियं होति ?, आचार्य आह-जहण्णजुत्तासंखेज्जगप्पमाणमेत्तेण रासिणा आवलियासमयरासी गुणितो रूवूणो उक्कोसं जुत्तासंखेज्जयं भवति। अन्ने आचार्या भणंति–जहण्णजुत्तासंखेज्जरासिस्स वग्गो कज्जति, किमुक्तं भवति ?--आवलिया आवलियाए गुणिज्जति, रूवूणितो उक्कोसं जुत्तासंखेयं भवति, अन्यः प्रकारः--'अहवा जहण्णगं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं । सीसो पुच्छति–'जहण्णगं असंखेज्जासंखेज्जगं' इत्यादि, आचार्य उत्तरमाह-'जहण्णएण' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः 'अहवा उक्कोसय' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, 'तेण परं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, जहण्णगस्स असंखेज्जासंखेज्जगस्स परतो अजहण्णमणुक्कोसा इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, शिष्यः पृच्छेत् 'उक्कोसगं ' इत्यादि सुत्तं, आचार्योत्तरमाह--'जहण्णग' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः

दशासंख्य प्रक्षेपाः

॥ ८२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

‘ अहवा जहन्नग ’ इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्ने पुण आयरिया उक्कोसगं असंखेज्जअसंखेज्जगं इमेन प्रकारेण पन्नवेंति-जहण्णगअसंखेज्जा-संखेज्जगरासिस्स वग्गो कज्जति, तस्स वग्गरासिस्स पुणो वग्गो कज्जति, तस्स वग्गस्स पुणो वग्गो कज्जति, एवं तिण्णि वारा वग्गिय संवग्गिते इमे दस असंखयपक्खेवया पक्खिप्पिज्जंति ‘ लोगागासपदेसा १ धम्मा २ धम्मे ३ गजीवदेसा ४ य । दव्वट्ठिया णियोया ५ पत्तेया चेव बोधव्वा ६ ॥ १ ॥ ठितिबंधज्झवसाणा ७ अणुभागा ८ योगच्छेद पलिभागा ९ । दोण्हवि समाण समया १० असंखये खेवया दस तु ॥२॥’ सव्वलोगागासप्पदेसा एवं धम्मत्थिकायप्पदेसा अधम्मत्थिकायप्पदेसा एगजीवप्प-देसा दव्वट्ठिया णियोयत्ति सुहुमबायरअणंतवणस्सतिस्स शरीरा इत्यर्थः, पुढवि जाव पंचेंदिया सव्वे पत्तेयसरीरिणो गहिया, ठितिबंधज्झवसाणा हि णाणावरणादियस्स संपरायकम्मस्स ठितिबंधविसेसा जेहिं अज्झवसाणट्ठाणेहिं भवंति ते ठितिबंधज्झवसाणा, ते य असंखा, कथं ?, उच्यते, णाणावरणदंसणावरणमोहआयुअंतरायस्स जहण्णयं अंतमुहुत्तं ठिती, सा एगसमयुत्तरवुड्ढीए ताव गता जाव मोहणिज्जस्स सत्तरि सागरोवमकोडीकोडीओ सत्त य वाससहस्सत्ति, एते सव्वे ठितिविसेसा तेहिं अज्झवसायट्ठाण-विसेसेहिंतो णिप्फण्णत्ति अतो ते असंखेज्जा भणिता, अणुभागत्ति णाणावरणादिकम्मणो जो जस्स विपाको सो अणुभागो, सो य सव्वजहण्णठाणातो जाव सव्वुक्कोसमणुभावा, एते अणुभागविसेसे सव्वे अज्झवसाणविसेसेहिंतो भवंति, ते अज्झवसाण-ठाणा असंखेज्जलोगागासपदेसमेत्ता अणुभागठाणावि तत्तिया चेव, ‘ जोगच्छेदपलिभागा ’ अस्य व्याख्या—जोगोत्ति जो मण-वतिकायपयोगो तेसिं मणादियाण अप्पप्पणो जहण्णठाणाओ जोगविसेसप्पहाणुत्तरवुड्ढीए जाव उक्कोसो मणवतिकायजोगोत्ति, एते एगुत्तरवड्ढिया जोगविसेसट्ठाणा छेदप्पलिभागा भण्णंति, ते मणादिया छेदपलिभागा पत्तेयं पिंडिया वा असंखेज्जा इत्यर्थः,

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८४ ॥

अनन्त प्रक्षेपाःषट्

दोण्ह य समाण समयात्ति उस्सप्पिणी ओसप्पिणी य एताण समया असंखया चेव, एते दस असंखे पक्खेवया पक्खिविउं पुणो रासी तिण्णि वारा वग्गितो ताहे रूवूणो कतो, एतं उक्कोसं असंखेज्जअसंखेयप्पमाणं भवति, उत्तं असंखेज्जं ॥ इदाणीं अणंतयं भण्णति, सीसो पुच्छति--'जहण्णगं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, गुरू आह--'जहन्नगं असंखेज्जगं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः 'उक्कोसए' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, 'तेण परं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, सीसो पुच्छति 'उक्कोसगं परित्ताणंतयं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, गुरू आह--'जहण्णगं परित्ते' त्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः 'अहवा जहण्णगं परित्ताणंतयं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, 'अहवा उक्कोसए' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, तत्थ अण्णायरियाभिप्पायओ वग्गितसंवग्गितं भाणियव्वं पूर्ववत्, जहण्णगजुत्ताणंतयरासी जावइतो अभव्वजीवरासीवि केवलणाणेण तत्तितो चेव दिट्ठो 'तेण' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, सीसो पुच्छति 'उक्कोसगजुत्ताणंतग' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, आचार्य आह-'जहण्णएणं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः 'अथवा जहण्णग' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, एत्थ अण्णायरियाभिप्पायतो अभव्वरासिप्पमाणस्स रासिणो सकि वग्गो कज्जति, ततो उक्कोसगं जुत्ताणंतं भवति, सीसो पुच्छइ-'जहण्णगं अणंताणंतयं कित्तियं भवति ?' सुत्तं कंठ्यं, आचार्य आह-'जहण्णएण' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्य प्रकारः, 'अहवा उक्कोसए' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, 'तेण परं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, उक्कोसयमणंताणंतयं नास्त्येव इत्यर्थः, अन्ने य आयरिया भणंति-जहण्णगं अणंताणंतगं तिण्णि वारा वग्गियं ताधे इमे अणंतपक्खेवा पक्खित्ता, तंजधा--'सिद्धा १ णियोयजीवा २ वणस्सति ३ काल ४ पोग्गला ५ चेव। सव्वमलोगागासं ६ छप्पेते णंतपक्खेवा ॥ १ ॥ सव्वे सिद्धा सव्वे सुहुमबायरा णियोयजीवा परित्तणंता सव्ववणस्सतिकाइया सव्वो तीतानागतवट्टमाणकालसमयरासी सव्वपोग्गलदव्वाण परमाणुरासी सव्वागासपदेसरासी, एते पक्खिविऊण ॥ ८४ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४७] गाथा ||१२२||

दीप अनुक्रम [३१५-३१७]

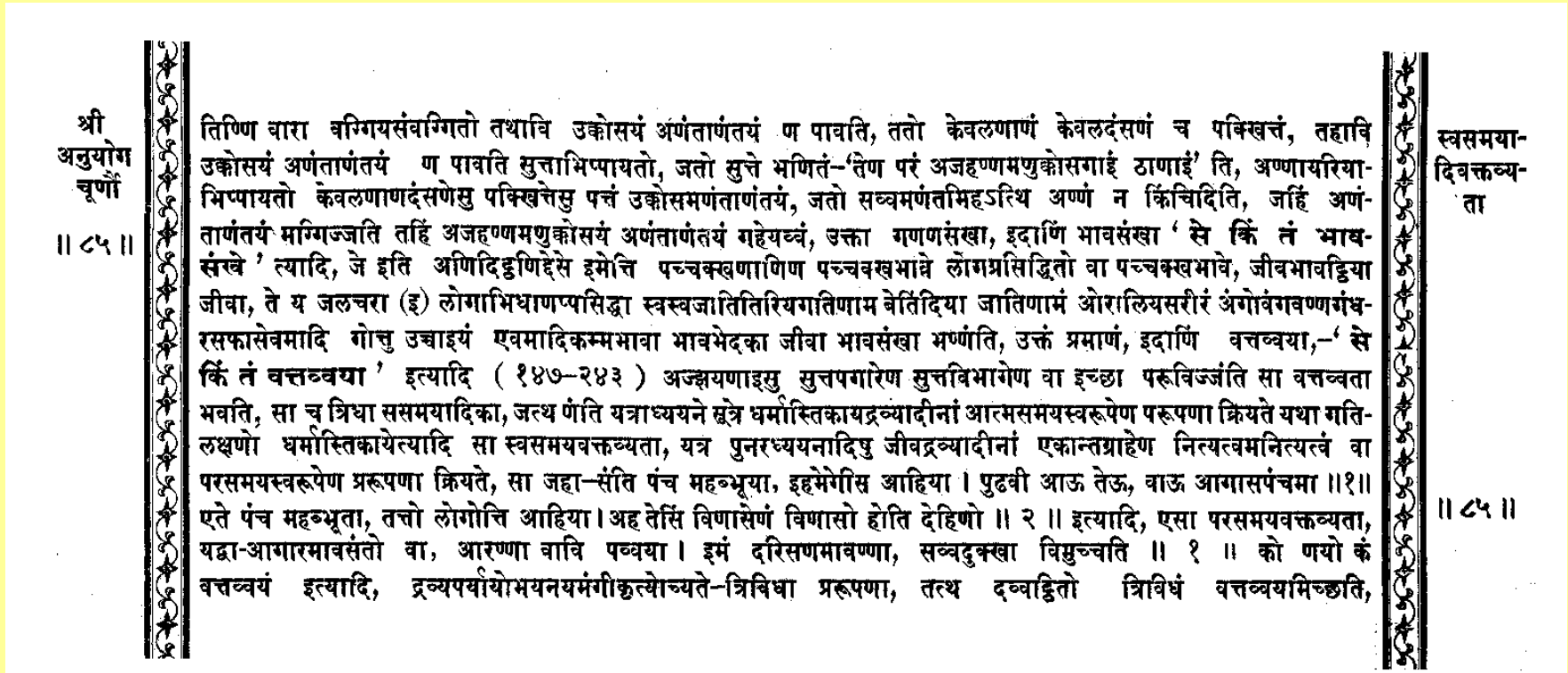

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८५ ॥

तिण्णि वारा वग्गियसंवग्गितो तथावि उक्कोसयं अणंताणंतयं ण पावति, ततो केवलणाणं केवलदंसणं च पक्खित्तं, तहावि उक्कोसयं अणंताणंतयं ण पावति सुत्ताभिप्पायतो, जतो सुत्ते भणितं–‘तेण परं अजहण्णमणुक्कोसगाइं ठाणाइं’ ति, अण्णायरियाभिप्पायतो केवलणाणदंसणेसु पक्खित्तेसु पत्तं उक्कोसमणंताणंतयं, जतो सव्वमणंतमिहऽत्थि अण्णं न किंचिदिति, जहिं अणंताणंतयं मग्गिज्जति तहिं अजहण्णमणुक्कोसयं अणंताणंतयं गहेयव्वं, उक्ता गणणसंखा, इदाणिं भावसंखा ‘ से किं तं भावसंखे ’ त्यादि, जे इति अणिदिट्ठणिद्देसे इमेत्ति पच्चक्खणाणिण पच्चक्खभावे लोगप्रसिद्धितो वा पच्चक्खभावे, जीवभावट्ठिया जीवा, ते य जलचरा (इ) लोगाभिधाणप्पसिद्धा स्वस्वजातितिरियगतिणाम बेतिंदिया जातिणामं ओरालियसरीरं अंगोवंगवण्णगंधरसफासेवमादि गोत्तु उच्चाइयं एवमादिकम्मभावा भावभेदका जीवा भावसंखा भण्णंति, उक्तं प्रमाणं, इदाणिं वत्तव्वया,–‘ से किं तं वत्तव्वया ’ इत्यादि (१४७–२४३) अज्झयणाइसु सुत्तपगारेण सुत्तविभागेण वा इच्छा परूविज्जंति सा वत्तव्वता भवति, सा च त्रिधा ससमयादिका, जत्थ णंति यत्राध्ययने सूत्रे धर्मास्तिकायद्रव्यादीनां आत्मसमयस्वरूपेण परूपणा क्रियते यथा गतिलक्षणो धर्मास्तिकायेत्यादि सा स्वसमयवक्तव्यता, यत्र पुनरध्ययनादिषु जीवद्रव्यादीनां एकान्तग्राहेण नित्यत्वमनित्यत्वं वा परसमयस्वरूपेण प्ररूपणा क्रियते, सा जहा–संति पंच महब्भूया, इहमेगेसि आहिया । पुढवी आऊ तेऊ, वाऊ आगासपंचमा ॥१॥ एते पंच महब्भूता, तत्तो लोगोत्ति आहिया। अह तेसिं विणासेणं विणासो होति देहिणो ॥ २ ॥ इत्यादि, एसा परसमयवक्तव्यता, यद्वा-आगारमावसंतो वा, आरण्णा वावि पव्वया । इमं दरिसणमावण्णा, सव्वदुक्खा विमुच्चति ॥ १ ॥ को णयो कं वत्तव्वयं इत्यादि, द्रव्यपर्यायोभयनयमंगीकृत्योच्यते–त्रिविधा प्ररूपणा, तत्थ दव्वट्ठितो त्रिविधं वत्तव्वयमिच्छति,

स्वसमयादिवक्तव्यता

॥ ८५ ॥

अथ स्वसमयादि वक्तव्यता

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४७] गाथा ॥१२२॥

दीप अनुक्रम [३१५-३१६]

जतो स्वसमयवक्तव्यता शब्दाभिधान(मन्तरेण)प्रसिद्धिः परसमयवक्तव्यता शब्दाभिधानमन्तरेण न भवति, इतरेतरापेक्षत्वाच्छायोष्णयोरिव, एवं उभयसमयवक्तव्यतास्वरूपमपीच्छति जधा ठाणंगे 'एगे आता' इत्यादि, परसमयव्यवस्थिता ब्रुवंति एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते प्रतिष्ठितः। एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥ १ ॥ स्वसमयव्यवस्थिताः पुनः ब्रुवंति-उवयोगादिकं सव्वजीवाण सरिसं लक्खणं अतो सव्वभिचारिपरसमयवत्तव्वया स्वरूपेण ण घडति, अग्नेः शीतत्वमुष्णत्वं उदगम्मि इयरे वा, समये इत्यर्थः, 'तिण्हं सद्दणयाणं' इत्यादि, सर्वा स्ववक्तव्यतैव, परसमयवक्तव्यता नास्त्येव, कहं ?, संतो परसमयाविजेण जीवादिवत्थुणो जं अणिच्चादिभावपरूवणं करेंति तं ससमएवि सावयवविकप्पपरूवणेण कत्थइ इच्छंतित्ति अतो णत्थि परसमयवत्तव्यतेत्यर्थः, अहवा 'अणट्ठि' त्यादि जो जस्स जीवादिवत्थुणो अण्णो ण भवति तं जधा परूवेति तम्हा अणट्ठो सर्वथा नास्त्यात्मादि, अहेतुजुत्तं जम्हा परूवेंति तम्हा अचेतनोऽस्त्यात्मा अनुपलभ्यमानत्वादिति, जम्हा अभूयवं परूवेंति सामाकतंदुलमात्रात्मा इत्यादि, मग्गोत्ति सम्मं णाणदंसणचरणा तव्विवारो वा, अण्णाणं अविरती मिच्छत्तं वा तस्स तम्मि व तेण व परूवणा उम्मग्गेत्यर्थः, जं सव्वण्णुवयणं तं सच्चं सब्भूयं अविहतं अविसंदिद्धं अट्ठजुत्तं अणवज्जं सव्वहा दोसवज्जियं, एरिसं वयणं धम्माभिलासिणो उवदेसो, अणुवदेसो सव्वण्णुवयणविवरीयत्तणतो शाक्योलूक्यादिवचनवत्, जीवादितत्त्वे नयभेदविकल्पितस्वरूपे या प्रतिपत्तिः सा क्रिया, तस्यैव जीवादितत्त्वस्य सर्वथा देसे वा अप्रतिपत्तिः अकिरिया अक्रियावादिवचनवत्, मोहनीयभेदमिथ्यात्वोदयात् विपरीतार्थदर्शनं मिच्छादंसणं, हृत्पूरकफलभक्षितपुरुषदृष्टिदर्शनवत्, एवं परसमयवत्तव्वता अणिट्ठातिजुत्तणत्तणतो अणादेया, अणादेयत्तणतो परसमयवत्तव्वया खरविषाणवत् नास्त्येवेत्युपलक्ष्यते, उक्ता वक्तव्यता ॥ 'से किं तं अत्थाहिगारे'

प्रत सूत्रांक [१४८-१४९] गाथा ॥१२३-१२५॥

दीप अनुक्रम [३१७-३२१]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८७ ॥

भावसमवतारश्च निक्षेपाश्च

त्यादि सुत्तं कंठ्यं, चोदक आह—अत्थाहिकारवत्तव्वयाणं विसेसं ण बुज्झामो, आचार्य आह--अज्झयणे अत्थाहिगारो आदिपादरद्धो सव्वपदेसु ता अणुवट्टति जाव समत्ती, परमाण्वादिसर्वपुद्गलद्रव्येषु मूर्त्तवत्, वत्तव्वता पुण पदपादसिलोगद्धसिलोगादिसु अज्झयणस्स देसे एव सव्वहा अणुवट्टति, संखेज्जादिप्रदेशस्कंध कृष्णत्वादिवर्णपरिणामवत्, उक्तः अर्थाधिकारः ॥ 'से किं तं समोदारे' इत्यादि, (१४९--२४६) समित्ययमुपसर्गो अवतारयति अवतरणं वा सम्मं समस्तं वा ओतारयतित्ति समोतारे भणिते, सो य णामादि छव्विधो-'से किं तं णाम' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं जाव आयपरतदुभयसमोतारेत्ति, जधा जीवभावाणं अण्णण्णजीवभावेसु चेव समोतरति, एवं धम्माधम्मागास परमाणुमादि पुग्गलदव्वा आयभावे समोतरंति, बदरादिद्रव्यस्य भावस्य वा कुण्डावतारचिंताए बदरकुंडा, परोप्परभिण्णत्तणतोवि आयभावे समोतिण्णं दव्वं जम्हा परे समोतारिज्जति तम्हा सव्वत्थ ववहारतो परसमोदारो भण्णति, उभतावतारे गृहे स्तंभ इति, स्तंभो अन्येऽपि ये गृहावयवास्ते स्तंभस्य तेषु अवतारो परावतारे, आतभावता तु स्तंभस्य तत्र विद्यत एव, एस तदुभयावतारो, घटे ग्रीवाप्येवं, अहवा दव्वसमोतारो दुविध एव-आतसमोतारो उभयसमोतारो य, चोदको भणति-कथं परसमोदारो नत्थि ?, उच्यते, जति आतसमोतारवज्जितं दव्वं परे समोतरति तो सुद्धो परसमोतारो लब्भति अन्यथा नास्त्येवेत्यर्थः, 'चतुसट्ठि' इत्यादि, छप्पण्णा दो पलसता माणी भण्णति, तस्स चतुसट्ठिता चतुरो पला भवंति, एवं बत्तीसिताए अट्ठ पला सोलसियाए सोलस अट्ठभाइयाए बत्तीसं चतुभाइयाए चतुसट्ठिं अद्धमाणीए अट्ठावीसुत्तरं पलसतं, सेसं कंठ्यं, खेत्तकालसमोदारा उवयुज्ज कंठा वत्तव्या, 'से किं तं भावसमोदारे' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, जाव उदइए व छव्विधे भावे वेति, इत्थ चोदक आह-क्रोधाद्यौदयिकभावानां एकभावत्वात् समान-

॥ ८७ ॥

प्रत सूत्रांक [१५०] गाथा ||१२६-१३१||

दीप अनुक्रम [३२२-३२८]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८८ ॥

लक्षणत्वात् अन्योऽन्यानुवर्त्तित्वाच्च उभयावतावतारकरणं युज्जते, जं पुण भणह उदइओ भावो छव्विधे भावे समोतरइत्ति तं ण जुज्जति, विलक्खत्तणतो अण्णोण्णणणुव्वत्तित्तणतो, आचार्याह-भावसामण्णत्तणतो समोतारो, अथवा सरीरादिउदयभावाठियस्स णियमा उवसमियखइयादयो भावा भवंतीति ण दोसो, उक्त उपक्रमः॥ 'से किं तं णिक्खेवे' इत्यादि, जो सामन्नो सव्वज्झयणेसु स ओहोत्ति, तस्स णिक्खेवो ओहणिप्फण्णो भवति, अहिकतज्झयणस्स जण्णामं तस्स जो णिक्खेवो स णामणिप्फण्णो, सुत्ते उच्चारिते पयत्थादिकते जधासंभवं पदाणं जो णिक्खेवो सो सुत्तालावयणिप्फण्णो। 'से किं तं ओहणिप्फण्णो' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, जाव से किं तं भावअज्झपणे इत्यादि चोद्दसपुव्वधरस्सागमोवउत्तस्स अंतमुहुत्तमेत्तोवयोगकाले अत्थोवलंभोवयोगपज्जवा जे ते समयावहारेण अणंताहिवि उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं णोवहिज्जंति ते अतो भणितं आगमतो भावअज्झीणं, जाणए उवउत्त इत्यर्थः, णोआगमतो भावज्झीणं वायणायरियस्स उवयोगभावो आगमो, वइकाययोगा अ णोआगमो एवं णोआगमो भवति, सेसं कंठ्यं, 'से किं तं आये' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं जाव संतसारसावतेज्जस्स आएत्ति, संतं श्रीघरादिषु विद्यमानं सावतेजं-स्वाधीनं दानक्षेपग्रहमोक्षभोगेषु, सेसं कंठ्यं। 'से किं तं खवणा' इत्यादि, णाणादीणं वड्ढी इच्छिज्जति जा पुण तेसिं खवणा सा अप्पसत्था भवति, सेसं कंठ्यं। 'से किं तं णामणिप्फण्णे' इत्यादि (१५०-२५०) सूत्रं कंठ्यं। जाव 'जस्स सामाणितो' गाहा (*१२६--२५५) यस्य ययोः येषां यथा सामाणितोत्ति-अप्रविसरितः 'यो समो' गाथा (*१२७--२५५) गयट्ठा 'जह मम' गाथा (*१२८-२५६) तेण समणो भावसामादियजुत्तो भवति 'णत्थि य से' गाहा (*१२९--२५६) भावसामायिकयुक्तस्य अन्यः श्रमणपर्यायः 'उरगगिरि' गाहा (*१३०--२५६) 'सारयसलिलव्व सुद्धहियतो परी-

साधोरन्वर्थाःनिर्युक्तिश्च

॥ ८८ ॥

अत्र निक्षेपस्य वर्णनं क्रियते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१५१] गाथा ||१३२-१३४||

दीप अनुक्रम [३२९-३३२]

सहोवसग्गवाउणा गिरिव्व णिप्पकंपो जलणो इव तवतेयसा सागरो इव गुणरयणपुण्णो णाणादीहिं वा अगाहो अगाहत्तणतो चेव गंभीरो वा गगणं व णिरालंबो सयणादिसु त रुचिरविसमेसु सुहदुक्खकरेसु हमरो इव अणियतवृत्ती संसारभावेसु णिच्चुव्विग्गो मियो इव धरणिरिव सव्वफासविसहे जलरुहं व जधा पंके जातं जले वुड्ढं णोपलिप्पति पंकरएण तहा भावसामादियदुतो कामभोगेसु संवुड्ढो णोवलिप्पति कामभोगेसु, रविरिव अण्णाणविघातकरे पवणोव अपडिबद्धो गामणगरादिसु ‘ तो समणो ’ गाथा (*१३१-२५६) कंठ्या, ‘ से किं तं अणुगम ’ इत्यादि (१५१--२५८) जावतिया कया कज्जिस्संति य णामादि-णिक्खेवेण अत्थाणुगमा ते सव्वे णिक्खेवणिज्जुत्ती, एतं णिक्खेवणिज्जुत्तीस्वरूपं, ‘ से किं तं उवोग्घात ’ इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, ‘ से किं तं सुत्तफासिय ’ इत्यादि, सुत्तस्स उच्चारणमुपलक्षणं इमं, उवलबहुलसिलाए णंगलगमणं व खलियं, ण खलियं अखलियं, अण्णमण्णज्झयणसुत्तं संमेलिय णाणावण्णसंकररासिव्व अण्णोअण्णअज्झयणसरिससुत्ताण विरहत्तु आम्रेडितकरणं वच्चामेलियं, यथा गणधरनिबद्धमित्यर्थः पादबिंदुमत्तादिएहिं पडिपुण्णं उदत्तादिएहिं घोसेहिं पडिपुण्णघोसं गुरुणा कंठे वट्टियस्सरेण जीहोट्ठाण उत्तरकरणेण य विप्पमुक्कं सेसेण पडिच्छियं सुत्तं, ण पुत्थयाहीतंति, सेसं कंठ्यं जाव पदेण पदं च वत्तइस्सामित्ति, इत्थ पदं २ वत्तइस्सामीति वत्तव्वे किं पदेण पदत्ति भणियं?, उच्यते, णियमा उद्देसज्झयणादिसु जे सुत्तपदा तेसिं सुत्तेण वा अत्थेण वा उभएण वा अण्णोण्णसंबद्धाण एस चेव उच्चारणोवाओ, यथा लोए वत्तारो घरेण घरं संबद्धं रहो रहेण संबद्धो, अथवा संबद्धप्रदर्शनार्थं णगारेणोच्चरणं कृतं, प्रदेहार्थकरणं वत्तव्वा, अहवा पदेणंति सुत्तपदेणुवलद्धेणं अत्थपदं वत्तिज्जत्ति, पदेण पदं वत्ति-स्सति, अहवा अणुवलद्धत्थपदस्स प्रतिपदमर्थकथनप्रकारः प्रदर्श्यते पदेण पदं वत्तइस्सामित्ति, कथं ?, उच्यते ‘ संधिया य पदं

अथ ‘अनुगम’स्य वर्णनं

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१५२] गाथा ||१३५-१४०||

दीप अनुक्रम [३३३-३४०]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥९०॥

व्याख्या भेदाः नयाश्च

चेव ' गाहा (*१३४–२६१) संधिया गया, पदंति करेमित्ति पदं भंतेत्ति पदं, सामायिकंति पदं, पयत्थो अभ्युपगमे करेमित्ति, भंते ! इत्यामंत्रणं, सामाइयं पदं, सेसं कंठ्यं, विग्गहोत्ति समासो भाणियव्वो, सुत्तस्स अत्थस्स वा दोसुब्भावणा चालणा, दोसपरिहरणत्थं उत्तरपदाणं अत्थपसाधकं पसिद्धी, वर्द्धनं वृद्धिः व्याख्या इत्यर्थः, जम्हा सुत्तं अत्थो य विकप्पेहिं अणेगधा वक्खाणकरणतो वद्धति, एवं वक्खाणपदेण सुत्तपदं वत्तियं भवति, गतो अणुगमो ॥ ' से किं तं णय ' इत्यादि (१५२–२६४) णेगमादि सत्त मूलणता, तत्थ णेगमे भवति ' णेगेहिं ' इत्यादि (*१३५–२६४) गामवसाहिवत्थगादिट्ठंतेहि णेगमो भाणियव्वो, संगहो इमो भवति ' संगहिय ' इत्यादि (*१३६–२६४) मिम्मयरययसुवण्णतंबयमहप्पकिण्हादिवण्णविसेसणाविसिट्ठेसुवि घडेसु एक्कं अविसिट्ठं घडभावं इच्छति, भूतेसु कठिणगुणं व । ववहारो इमो 'वच्चई' त्यादि, तीतमणागतवट्टमाणेसु सव्वावत्थासु दिट्ठं घडं इच्छति लोगसंववहारपरत्तणतो ववहारस्स, उज्जुसुयस्स इमो 'उजुसुत्तो पडुप्पण्ण' इत्यादि (*१३७–२६४) अतीयकालघडं अणुप्पण्णकालघडं च अभावत्तणतो असंववहारत्तणतो य णेच्छति खरविसाणं व, 'सद्दणतो इच्छति' इत्यादि सुत्तं, तं चेव पडुप्पण्णकालियं अत्थं उजुसुत्ताभिप्पायतो विसेसिययरं इच्छति, जहा तिण्णि णेच्छइ णामघडं ठवणाघडं ज्ञशरीरभव्यशरीरद्रव्यघडं च, जलाभरणादिकज्जसाधणसमत्थं रिक्कमोमंथियं वा जहा कहंचि ट्ठियं इच्छतीत्यर्थः, समभिरूढो इमो–' वत्थूत्तो ' इत्यादि (*१३८-२६४) णेच्छति, इह एगत्थिया, एगट्ठिय एगट्ठिय अक्खराभिलावभिण्णत्तणतो णियमा अत्थभेदो, अत्थभिण्णत्तणतो वत्थुभेदो, एवं समभिरूढो एगट्ठिया णेच्छति, जहा घटः कुटो न भवति, कथं?, उच्यते? 'घट चेष्टायां' 'कुट कोटिल्ये' एवं अभिधाणसमं अत्थं आरुभतीति समभिरूढो भवतीत्यर्थः, एवंभूतो इमं आह–' वंजण ' इत्यादि, वंजणं घटः अत्थो सचेट्ठा

॥९०॥

प्रत सूत्रांक [१५२] गाथा ||१३५-१४०||

दीप अनुक्रम [३३३-३४०]

जलाहरणाइया, एवं जया घटो जलाहरणक्रियाजुत्तो भवति तदा उइयधरं वा अवत्थं, एवं च सद्दे णातो अत्थो विसेसिज्जति, अत्थतो विवक्षति ध्वानं, एवंविहं माणं वत्थुभूतं भवति, अतो एवंभूतो भवतीत्यर्थः, एते णेगमादि सत्तवि णया दोसु तु अवतरंति–णाणनए चरणनये, णाणणये सत्त णेगमादयो णया इमेरिसं णाणोवदेसं इच्छंति–' णातंमि गिण्हितव्वे ' गाथा (*१३९--२६७) णायंमि नाम सम्मं परिच्छिन्ने, तओ से दुहा गप्पते, तेसु य णाति जो घेत्तव्वो आदीयव्वो तस्स आसादने गेण्हेयव्वो कज्जसाधकः, उक्तस्य विपक्खभूतो ण घेतव्वो, जतितव्वंति मनोवायकायेहिं घेत्तव्वो अगहणगणिहयव्वे अघेत्तव्वे उदासीत्वेन ' एव ' मित्यवधारणे घेत्तव्वे वा पयतियव्वं इति–उवदंसणे, जो एवंविहो उवदेसो सो सव्वो णयणामा भवतीत्यर्थः, णता चेव णेगमादीया चरणगुणठितमेरिसं पडिवयंति ' सव्वेसिं ' गाथा (*१४०–२६७) सव्वेत्ति मूलसाहप्पसाहभेदिणा अप्पणो अभिप्पाएण णेगप्पगारा एयस्स य णयस्स भेदा जे तेसिं वत्तव्वया-भणितं अहवा एगस्स वत्थुणो पज्जवा वत्तव्वत्ति वच्चा, अहवा वत्तव्वा गतिजीवादि तच्च सव्वभेदाण णिसामेत्ता-सोतुं अवधारितुं वा णिसामित्तए तंमि एवंविहणयवत्तव्वयंमि, किं सव्वणयविसुद्धं ?, उच्यते–' तं सव्व ' इत्यादि चरणमेव चरणं वा चरिओ गुणा खमादिया अणेगविधा तेसु जहट्ठिओ साहू सो सव्वणयसंमतो भवतीति ॥ इति श्रीश्वेताम्बराचार्यजिनदासगणिमहत्तरपूज्जपादानामनुयोगद्वाराणां चूर्णिः ॥

॥ इति सम्मत्ता अनुयोगद्वारचूर्णिः ॥

अथ 'नय' वर्णनं क्रियते

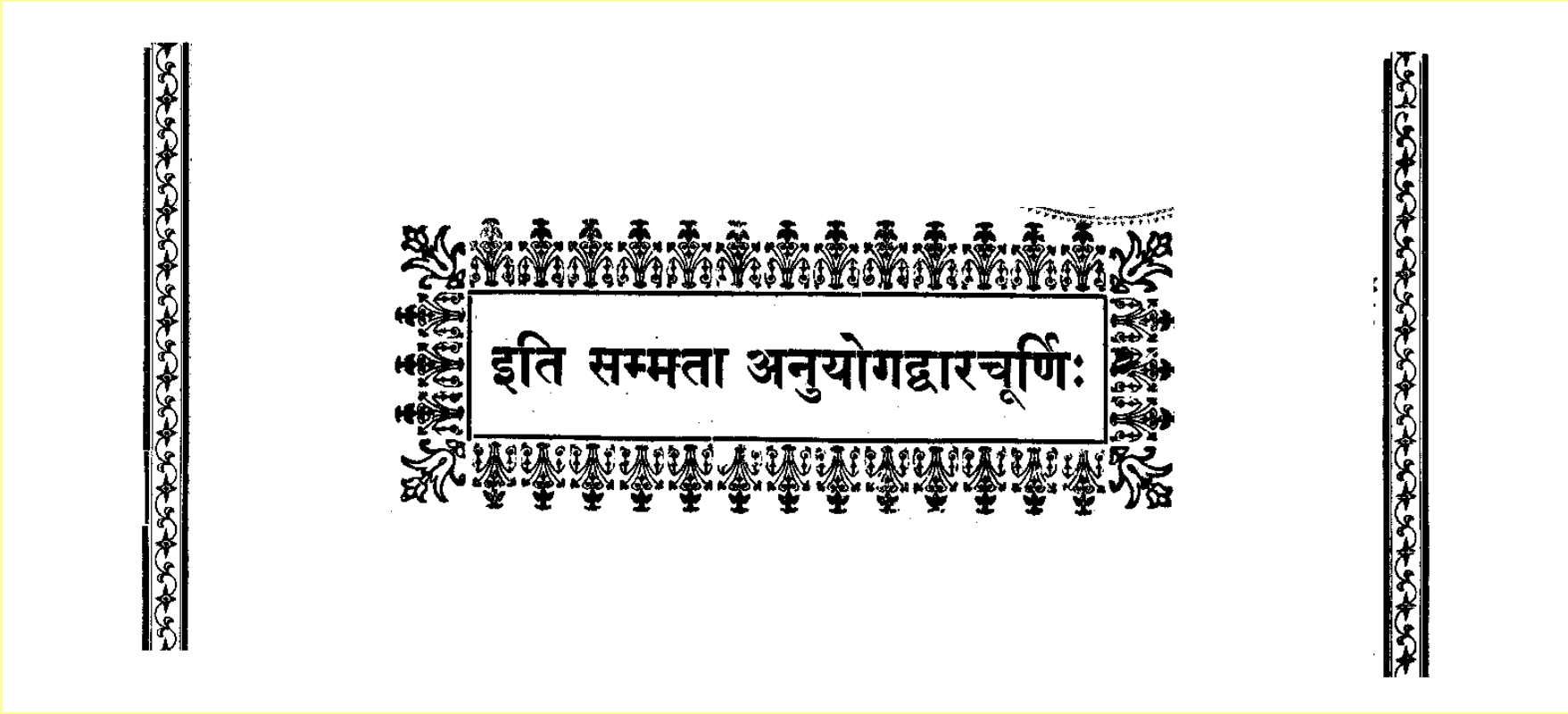

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादिता (आगमसूत्र ४५)

“अनुयोगद्वार-चूर्णि:” परिसमाप्ता:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

45

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

“अनुयोगद्वार” चूलिकासूत्र [चूर्णि:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“अनुयोगद्वार” चूर्णि: नामेण परिसमाप्ता:

Remember it’s a Net Publications of ‘jain_e_library’s’